शैक्षिक मंथन

(द्विभाषी मासिक)

शैक्षिक क्षेत्र की प्रतिनिधि पत्रिका

वर्ष : 11 अंक : 10 1 मई 2019

(वैशाख-ज्येष्ठ, विक्रम संवत् 2076)

संस्थापक
स्व. मुकुन्दराव कुलकर्णी

❖

परामर्श
के.नरहरि
डॉ. विमल प्रसाद अग्रवाल
जगदीश प्रसाद सिंघल

❖

सम्पादक
सन्तोष पाण्डेय

❖

सह सम्पादक
भरत शर्मा

❖

संपादक मंडल
प्रो. नन्दकिशोर पाण्डेय
डॉ. एस.पी. सिंह
डॉ. ओमप्रकाश पारीक
डॉ. शिवशरण कौशिक

❖

प्रबन्ध सम्पादक
महेन्द्र कपूर

❖

व्यवस्थापक
बजरंग प्रसाद मजेजी

प्रेषण प्रभारी : **नौरंग सहाय**
कार्यालय प्रभारी :
आलोक चतुर्वेदी : 8619935766

प्रकाशकीय कार्यालय
82, पटेल कॉलोनी, सरदार पटेल मार्ग,
जयपुर (राजस्थान) 302001
दूरभाष : 9414040403

दिल्ली ब्यूरो :
शैक्षिक महासंघ सदन, 606/13,
कृष्णा गली नं.9, मौजपुर, दिल्ली-110053
दूरभाष : 011-22914799

E-mail :
shaikshikmanthan@gmail.com
Visit us at :
www.shaikshikmanthan.com

एक प्रति 20/– वार्षिक शुल्क 200/–
आजीवन (दस वर्ष) 1500/-

पृष्ठ संयोजन : सागर कम्प्यूटर, जयपुर

शैक्षिक मंथन मासिक में प्रकाशित सामग्री से संपादक मण्डल का सहमत होना आवश्यक नहीं है तथा चित्रों का प्रतीकात्मक प्रयोग किया गया है।

ऑनलाइन लर्निंग : ज्ञान के नए आयाम ❑ डॉ. दीपक कुमार शर्मा

आज शिक्षा क्षेत्र से संबंधित हर वर्ग यथा विद्यार्थी, शिक्षक, शोधार्थी, वैज्ञानिक, अर्थशास्त्री, साहित्यकार, इतिहासकार, कलाकार आदि हेतु निःशुल्क सरकारी वेबसाइट एवं मोबाइल एप्लीकेशंस (Apps) उपलब्ध हैं, जिनका संबंधित वर्ग अपनी सुविधानुसार उपयोग कर सकता है। आज हम समय-समय पर अपना दक्षता परीक्षण विविध ऑनलाइन परीक्षाओं/टेस्ट के माध्यम से कर सकते हैं। विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी कर रहे विद्यार्थी इनका काफी उपयोग कर रहे हैं। इंटरनेट पर बड़ी मात्रा में निजी क्षेत्र की संस्थाएँ ऑनलाइन अध्ययन सामग्री उपलब्ध करवा रही हैं लेकिन इस हेतु विद्यार्थियों को काफी धनराशि व्यय करनी होती है। यहाँ कुछ चुनी हुई सरकारी ऑनलाइन अध्ययन सामग्री युक्त पोर्टल /मोबाइल एप्लीकेशन (Apps) की जानकारी दी जा रही है जो सभी के लिए निःशुल्क उपलब्ध हैं।

8

अनुक्रम

4.	ई-लर्निंग को प्रोत्साहन अपेक्षित	– सन्तोष पाण्डेय
6.	ई-लर्निंग का उत्पाद : डिजीटल डिवाईड	– प्रो. मधुर मोहन रंगा
12.	भारतीय शिक्षा पद्धति और ई-लर्निंग	– डॉ. योगेश कुमार गुप्ता
15.	ई-लर्निंग तथा विद्यार्थियों का व्यक्तित्व विकास	– डॉ. सुमनबाला
18.	ई-प्रशासन से समग्र विकास	– डॉ. अनीता मोदी
21.	डिजिटल मीडिया से हिन्दी पाठकों के सृजन में संकुचन	– डॉ. अंजनी कुमार झा
26.	"I dream to a digital India..." Narendra Modi	- Prof. P.C. Agrawal
28.	श्रेय साधिका बने शिक्षा	– डॉ. ओम प्रकाश पारीक
30.	नैतिकता का संकट और केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड	– डॉ. ओम प्रभात अग्रवाल
32.	स्वामी विवेकानन्द की दृष्टि में भारत की विश्व को देन	– डॉ. विवेक कुमार
36.	गाँधी के विचारों का विखण्डन	– प्रो. सतीश कुमार
38.	राम राज्य (कुटुम्ब प्रबोधन : अध्याय-14)	– हनुमान सिंह राठौड़
41.	गतिविधि	

E-education and Challenges

❑ Dr. T. S. Girishkumar

To sum up, with all the advantages of E-information, let us see that we get information only through E-learning. Depending upon the learner, this information could be confusing, haphazard or even misleading. To put such information into proper places, there must always be a teacher. Electronic media and the internet have a definite advantage of instant information, which is a great thing indeed. But there is a difficulty of inability to cross check the authenticity of the given information. None else but a teacher alone can-do reparations to such situations.

23

ई-लर्निंग को प्रोत्साहन अपेक्षित

❑ **सन्तोष पाण्डेय**

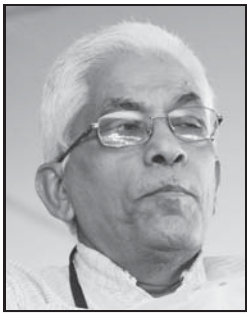

सूचना क्रांति ने सभी दूरियों को मिटाकर सम्पूर्ण विश्व को एक वैश्विक गाँव में बदल दिया है। मानव समुदाय एक वैश्विक संस्कृति में बदल रहा है। टेलीविजन, स्मार्ट फोन, इन्टरनेट, वाई-फाई, सी डी रोम जैसी तकनीक व्यापक रूप से सभी को काफी सस्ती दर पर उपलब्ध है जिनसे सभी समाजों में व्यापक परिवर्तन आये हैं। सूचनाओं के आदान-प्रदान से प्रारंभ होकर मनोरंजन की दुनिया में प्रवेश कर आज व्यवसाय और शिक्षा के क्षेत्र में भी इनका प्रयोग व्यापक रूप से हो रहा है। परिणाम सूचनाओं के आदान-प्रदान के विस्फोट के साथ-साथ ज्ञान का भी विस्फोट हो रहा है। समाज, ज्ञान आधारित समाज में बदल रहा है। भारत इस क्रांति से अछूता तो नहीं है, परन्तु जितना प्रसार होना अपेक्षित था नहीं हो पाया है। ई-लर्निंग इसी क्रांति का एक उत्पाद है। ई-लर्निंग को प्रोत्साहन भारत में शिक्षा सुविधाओं के विस्तार तथा गुणवत्तायुक्त शिक्षा के ध्येय प्राप्ति में सहायक हो सकता है।

संपादकीय

भारी आर्थिक प्रगति के बावजूद भारत आज मानव विकास सूचकांक में काफी पीछे है। देश में स्वास्थ्य व शिक्षा के क्षेत्र में प्रगति हुई है लेकिन भारत आज भी शिक्षा व स्वास्थ्य में सुविधाओं की दृष्टि से अग्रणी राष्ट्र नहीं कहला सकता है। देश में जिस प्रकार गरीबी, बेरोजगारी, मंहगाई जैसी समस्यायें राष्ट्रीय बहस व चुनावी मुद्दा बनती हैं, परन्तु शिक्षा व स्वास्थ्य कभी भी राष्ट्रीय बहस व चुनावों का मुद्दा नहीं बन सके हैं। स्वाभाविक है कि शिक्षा व स्वास्थ्य जो भावी प्रगति का प्रमुख आधार है, को सरकार व समाज की नीतियों में प्रमुखता नहीं मिल सकी है। देश में आज भी शिक्षा सुविधाओं का भारी अभाव है जो भी शिक्षा दी जा रही है वह अत्यन्त निम्न गुणवत्ता की है। परिणाम भी स्वाभाविक ही है। इससे आर्थिक व सामाजिक प्रगति तो बाधिक हो ही रही है और उससे भी अधिक महत्त्वपूर्ण यह है कि भारत सर्वाधिक युवा जनशक्ति वाले देश से उत्पन्न जनसंख्या लाभांश की प्राप्ति से भी वंचित है। समाज के सभी वर्गों को पर्याप्त, उपयुक्त एवं गुणवत्तापूर्ण शिक्षा मिले, इसे शीघ्रातिशीघ्र कार्य रूप में परणित करना देश व समाज की पहली प्राथमिकता होनी चाहिये। वस्तुतः देश आज भी विशाल भौगोलिक क्षेत्र व जनसंख्या के कारण पर्याप्त संसाधन जुटाने में समर्थ नहीं है। आज भी मुश्किल से जीडीपी का चार प्रतिशत ही देश शिक्षा को आवंटित कर पाता है जबकि न्यूनतम छह प्रतिशत तो व्यय करना ही चाहिये। इस प्रकार व्यापक शिक्षा सुविधायें प्रदान करने व उपलब्ध सुविधाओं का श्रेष्ठतम उपयोग कर गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने के विकल्पों व उपायों पर और अधिक विचार आवश्यक है। सूचना तकनीकी में हुई क्रांति इस उद्देश्य प्राप्ति में सहायक हो सकती है।

सूचना क्रांति ने सभी दूरियों को मिटाकर सम्पूर्ण विश्व को एक वैश्विक गाँव में बदल दिया है। मानव समुदाय एक वैश्विक संस्कृति में बदल रहा है। टेलीविजन, स्मार्ट फोन, इन्टरनेट, वाई-फाई, सी डी रोम जैसी तकनीक व्यापक रूप से सभी को काफी सस्ती दर पर उपलब्ध है जिनसे सभी समाजों में व्यापक परिवर्तन आये हैं। सूचनाओं के आदान-प्रदान से प्रारंभ होकर मनोरंजन की दुनिया में प्रवेश कर आज व्यवसाय और शिक्षा के क्षेत्र में भी इनका प्रयोग व्यापक रूप से हो रहा है। परिणाम सूचनाओं के आदान-प्रदान के विस्फोट के साथ-साथ ज्ञान का भी विस्फोट हो रहा है। समाज, ज्ञान आधारित समाज में बदल रहा है। भारत इस क्रांति से अछूता तो नहीं है, परन्तु जितना प्रसार होना अपेक्षित था नहीं हो पाया है। ई-लर्निंग इसी क्रांति का एक उत्पाद है। ई-लर्निंग को प्रोत्साहन भारत में शिक्षा सुविधाओं के विस्तार तथा गुणवत्तायुक्त शिक्षा के ध्येय प्राप्ति में सहायक हो सकता है।

आज देश भर में टी.वी. व टी.वी. चैनल्स, इंटरनेट, वीडियो, कान्फ्रेंसिंग, रेडियो, पेजिंग, दूरदर्शन, आकाशवाणी तथा विभिन्न प्रकार के एप्स ने देशवासियों को सजग बनाया है, शिक्षित किया है। इन सभी तकनीकी के उपयोग से शिक्षा भी प्रभावित हो रही है। शिक्षा में इनका भरपूर उपयोग हो रहा है। इंटरनेट के विभिन्न माध्यमों से शिक्षा संबंधी सूचनायें लेकर सीखने की प्रक्रिया को सुदृढ़ बनाना ही ई-लर्निंग है। ई-लर्निंग में कक्षा कक्ष, स्कूल व अन्य भौतिक साधनों की मदद लिये बिना ही ज्ञानवर्द्धक विषय संबंधी जानकारी लेकर शिक्षा की जरूरत को पूरा करना संभव हो जाता है। औपचारिक रूप से शिक्षकों को प्राप्त शिक्षा को ई-लर्निंग के माध्यम से बौद्धिक उपलब्धि को सुदृढ़ किया जा सकता है जिससे शिक्षा की गुणवत्ता में अभिवृद्धि होती है। ई-लर्निंग वैब आधारित हो सकती है जिसमें ब्राउजर की सहायता से बांछित जानकारी प्राप्त की जा सकती है, अथवा कम्प्यूटर आधारित लर्निंग हो सकती है। ई-लर्निंग सीडी रोम (Read on Memory) हो सकती है, जिसमें सी.डी. चलाकर सीखने का प्रयास होता है। इनके अतिरिक्त भी वर्चुअल क्लासरूम, मोबाइल लर्निंग, वैबिनार, वीडियोज के माध्यम से भी ई-लर्निंग की क्रिया संपन्न हो सकती है।

ई-लर्निंग के प्रसार व गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने के लिये अनेक दृष्टि से उपयुक्त व्यवस्था है। सर्वप्रथम सभी के लिये बिना किसी भेद-भाव के

शिक्षा उपलब्ध हो सकती है। वर्तमान में यह सर्वाधिक कम लागत की कुशल तकनीक है, जो सभी शिक्षार्थियों की आवश्यकताओं को पूरा करने में सक्षम है। कक्षा कक्ष में शिक्षक एक ही पाठ लेसन को बार-बार जैसा करने से नहीं दोहरा सकता है, जबकि ई-लर्निंग में तैयार लेसन को छात्र बार-बार सी.डी. चलाकर अपनी सुविधानुसार व समझ की क्षमतानुसार लेसन को ग्रहण कर सकता है। ई-लर्निंग में संबंधित विषय पर उपलब्ध जानकारियों को अद्यतन करने की सुविधा के कारण छात्र नवीनतम जानकारियों से परिचित रहता है। परम्परागत शिक्षा व्यवस्था की अपेक्षा ई-लर्निंग में छात्र पाठ (Lesson) का अधिक शीघ्रता से क्षमतानुसार ग्रहण कर सकता है और ये पाठ भी तीव्र गति से दिया जा सकता है। ई-लर्निंग में पाठ्य सामग्री में सुधार व अद्यतन करने से शिक्षार्थी अधिक लाभांवित होता है। इसमें शिक्षार्थी बिना बदलाव के पाठ्य सामग्री को बारम्बार दोहरा सकता है। इन सभी के कारण ई-लर्निंग कम लागत अधिक लाभ देने वाली व्यवस्था बन जाती है, जो शिक्षार्थी के लिये बहुत ही लाभदायक व प्रभावोत्पादक है। यहाँ यह ध्यान योग्य है कि ई-लर्निंग परंपरागत-कक्षाकक्ष में शिक्षक आधारित शिक्षा का विकल्प या प्रतिद्वन्द्वी व्यवस्था नहीं है। यह तो औपचारिक शिक्षा को पुष्ट करने वाली व गुणवत्ता में वृद्धि करने वाली सहायक है जो कमजोर व तेज विद्यार्थियों को उनकी समझ के अनुसार लाभान्वित करती है।

ई-लर्निंग के विभिन्न पहलुओं को दृष्टिगत कर भारत सरकार ने इसे प्रोत्साहित करने के अनेक महत्त्वपूर्ण प्रयास किये हैं। संचार नीति के अन्तर्गत ई-गवर्नेंस को लक्ष्य बनाते हुये डिजिटलीकरण को तेजी से अपनाया जा रहा है। देश में संचार सुविधाओं की विस्तार के अन्तर्गत 5G को अपनाने का लक्ष्य है। गाँव-गाँव तक इंटरनेट सुविधाओं का विस्तार तेजी से हो रहा है। जन साधारण के दैनिक जीवन से संबंधित समस्त जानकारियों सरकारी सेवाओं व सुविधाओं को इंटरनेट के माध्यम से उपलब्ध कराया जा रहा है। स्मार्ट फोन जन साधारण की सामान्य जिन्दगी का महत्त्वपूर्ण अंग बन चुके हैं। ई-सुविधाओं का संजाल शिक्षा में अति उल्लेखनीय परिवर्तन ला रहा है। भारत सरकार व इसके शिक्षा से संबंधित विभाग व अन्य संस्थायें शिक्षा के सभी पहलुओं को ई-शिक्षा के अन्तर्गत ला रहे हैं। मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार Swyam योजना द्वारा ई-शिक्षा में योग दे रहा है, तो विश्व विद्यालय अनुदान आयोग कंसोर्सियम ऑफ एजूकेशनल कम्यूनीकेशन द्वारा इंदिरा गाँधी नेशनल खुला विश्वविद्यालय ज्ञान कोष द्वारा एनसीईआरटी प्रथम बेवसाइट द्वारा आईसीटी व एनपीटीईएल द्वारा, नेशनल मिशन फार लाइब्रेरी आदि ने व्यापक ई-सामग्री उपलब्ध करा ई-लर्निंग का व्याप बढ़ाने में एनसीईआरटी योग दे रहे हैं। ये सभी ई-सुविधायें, ई-लर्निंग के लिये व्यापक एवं सर्वव्यापी सुदृढ़ आधार बनाने में लगी है। परन्तु क्या यह विस्तृत व गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने के ध्येय प्राप्ति के लिये पर्याप्त है, इस पर विचार आवश्यक है।

आर्थिक व सामाजिक प्रगति के बावजूद इस तथ्य को नकारा नहीं जा सकता है कि आज भारतीय जनता इंडिया व भारत में बँटती जा रही है। इंडिया ऐसे भारत का प्रतिनिधित्व करता है, जिसके पास पर्याप्त आर्थिक संसाधन, शक्ति और संपन्नता है। यह वर्ग निश्चित रूप से आधुनिकतम सुविधाओं व उपकरणों का उपयोग करने में समर्थ है। यह वर्ग चमकते भारत (Shining India) का प्रतीक चिह्न है। दूसरी ओर भारत उस वर्ग का प्रतिनिधित्व करता है, जो आर्थिक दृष्टि से सुदृढ़ होने की प्रक्रिया में है, अथवा साधन विहीन है, व जीवन के संघर्ष में जुटा है। वास्तविकता यह है कि इंडिया तो संचार के आधुनिकतम व सुलभ साधनों का व्यापक उपयोग कर रहा है। ई-लर्निंग इसी वर्ग द्वारा लगभग आवश्यक रूप से अपनायी जा रही है। परन्तु भारत का विशालवर्ग आज भी इसे बड़े शैक्षिक उपकरण के रूप में अपनाने समर्थ नहीं है। शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर भी ई-लर्निंग का उपयोग अल्पतम है। प्राथमिक व माध्यमिक शिक्षा के स्तर पर यह गहनता प्राप्त नहीं कर पाया है। जबकि उच्च शिक्षा व शोध व अनुसंधान के स्तर पर ई-शिक्षा का प्रयोग निरंतर बढ़ रहा है। आज भी ई-शिक्षा जितना विस्तार व्यक्तिगत स्तर पर किया जा रहा है, उतना संस्थानिक स्तर पर नहीं हो पा रहा है। कॉलेजों व स्कूलों में ई-शिक्षा के साधन आज शो पीस (Show Piece) के रूप में प्रयुक्त हो रहे हैं। बहुत ही सीमित संख्या में विश्वविद्यालय व शोध संस्थान ही इन संसाधनों का भरपूर उपयोग कर रहे हैं। प्रतिस्पर्धा से ग्रस्त कोचिंग संस्थानों ने इनका प्रयोग लोकप्रिय हो रहा है। वास्तव में ई-शिक्षा का भरपूर उपयोग तब ही हो सकेगा जब यह प्राथमिक से उच्च शिक्षा शोध स्तर की शिक्षा व्यवस्था अभिन्न अंग बनेगा। इसके अभाव में प्रभावी गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की कल्पना ही निरर्थक होगी। यह परंपरागत औपचारिक शिक्षा जिसमें शिक्षा संस्थान व शिक्षक आधार का कार्य निभाते हैं, के विकल्प या प्रतियोगी के रूप में नहीं अपनाया जाय, वरन शिक्षक द्वारा शिक्षण के महत्त्वपूर्ण उपकरण के रूप में अतिआवश्यक अंग बन कर अधिक प्रभावोत्पादक परिणाम प्रस्तुत करने में समर्थ हो सकता है। बेहतर शैक्षिक परिणाम दे सकता है, जो गुणवत्ता की दृष्टि से भी उपयुक्त होंगे। शिक्षक प्रशिक्षण के लिये यह बहुत लाभान्वित करने वाला उपकरण है, जिसका व्यापक उपयोग होना चाहिये। शिक्षा में विषय विशेषज्ञों से विभिन्न विषयों पर सरल भाषा में पाठ तैयार कराकर सी.डी. या वीडियो कॉंफ्रेंसिंग द्वारा दूरस्थ शिक्षण संस्थानों के कक्षा-कक्षों तक पहुँचाने से गुणवत्ता में सुधार संभव है। ये कतिपय उपाय है जो ई-शिक्षा व ई-लर्निंग के माध्यम से शिक्षा का विस्तार दूरस्थ स्थानों तक व समुदायों और शिक्षार्थियों तक किया जा सकता तथा शिक्षक, शिक्षार्थी, शिक्षण तथा सीखने की गुणवत्ता को सुधारना संभव हो सकता है इसके लिये आवश्यक है कि शिक्षा को पर्याप्त संसाधन उपलब्ध कराये जायें और स्कूल-स्कूल तक ई-शिक्षा सुविधा का विस्तार इसे औपचारिक शिक्षा का अभिन्न अंग बनाया जाये। ❑

ई-लर्निंग का उत्पाद : डिजीटल डिवाईड

❑ **प्रो. मधुर मोहन रंगा**

मानव संसाधन विकास मंत्रालय ने अधिगम के प्रकार को आसान व रुचिपूर्ण बनाने के लिए 32 शैक्षिक चैनल स्थापित किये हैं ये सभी चैनल डायरेक्ट टू होम डिश टी वी पर उपलब्ध हैं इन चैनलों का उद्देश्य विद्यार्थियों को विभिन्न विषयों के सिद्धान्त, अवधारणाएँ, विषय वस्तु परिभाषाएँ, शब्दावली, प्रायोगिक कार्य सन्दर्भ आदि शैक्षिक विषयों के लिए आसान तरीके विकसित करना हैं। इसके साथ ही चैनलों के डिजाइन के दौरान शिक्षा की गुणवता का भी ध्यान रखा गया है। उच्च शिक्षण संस्थाओं के संकायों के महत्त्वपूर्ण व्याख्यान भी इन चैनलों के माध्यम से प्रसारित किये जाते हैं, जिससे विद्यार्थी के ज्ञानार्जन में सहायता हो।

आज हम डिजिटल युग में जीवन यापन कर रहे हैं। प्रात: काल से रात्रि तक हम मोबाईल फोन, इन्टरनेट, टेबलेट, आईपैड, सोशल मिडिया, वीडियो आदि में व्यस्त रहते हैं इस प्रकार ये हमारी दिनचर्या के आवश्यक अवयव बन गये हैं। परन्तु इस नवीन युग में प्रवेश के मूल में शिक्षा की ही भूमिका है। शिक्षा के मुख्य उद्देश्यों को प्राप्त करने में अधिगम का महत्त्वपूर्ण योगदान है, समय के साथ अधिगम या सीखने की प्रक्रियाओं में परिवर्तन आया है व आना स्वभाविक भी है अत: आज के परिप्रेक्ष्य में इलेक्ट्रोनिक लर्निंग (E-learning) पर चर्चा करना समीचीन होगा। इस आधुनिक अधिगम प्रक्रिया में इलेक्ट्रोनिक तकनीकी का उपयोग कर शैक्षिक पाठ्यक्रम तक पहुँच (access) बनाई जाती है, जहाँ पारम्परिक कक्षा-कक्ष नहीं होते हैं, इसमें पाठ्यक्रम व प्रोग्राम ऑनलाईन होते हैं। इसे कम्प्यूटरीकृत इलेक्ट्रोनिक अधिगम भी कहते हैं, इसके द्वारा पाठ्यक्रमों का प्रसारण इन्टरनेट व कम्प्यूटर के माध्यम से होता है, ताकि ज्ञान व कौशल का सम्प्रेषण विद्यार्थी तक पहुँच सके। 1995 में इसे 'इन्टरनेट आधारित प्रशिक्षण' कहा जाता था, बाद में वैब आधारित प्रशिक्षण कहा गया (Web Based Training) व आजकल यह परिवर्तित व परिवर्द्धित होकर ऑनलाईन लर्निंग व ई-लर्निंग हो गया। ई-लर्निंग के दो स्तर होते हैं- एक शिक्षक स्तर (Educator) व दूसरा ट्रेनर (Trainer) स्तर। प्रथम में प्राथमिक से उच्च स्तर पर शिक्षा है जबकि दूसरे स्तर में कम्पनियाँ अपने कर्मचारियों को प्रशिक्षण व उन्नयन हेतु इन अधिनियमों को उपयोग करती है, यह कार्पोरेट क्षेत्र से संबंधित है। यहाँ शिक्षक स्तर पर लिखना प्रासंगिक होगा। ई-लर्निंग के निम्न प्रकार होते हैं -

1. तुल्यकालिक अधिगम (Synchronous Learning) - वैब के माध्यम से एक समय में विद्यार्थी व शिक्षक के मध्य बातचीत। उदाहरण के लिए आभासी कक्ष (Virtual Classroom) में वीडियो, आडियो व कॉन्फ्रेंसिंग के द्वारा शिक्षक-शिक्षार्थी के मध्य वार्ता होती है।

2. अतुल्यकालिक(Asynchronous Learning) - वैब के माध्यम से अलग-अलग समय पर विद्यार्थी या प्रशिक्षणकर्ता वैब आधारित तकनीकी प्राप्त कर सकता है इसमें शिक्षक से प्रत्यक्ष वार्तालाप नहीं हो सकता है।

(अ) अंत:स्थापित अधिगम (Embedded Learning) - इसमें स्वयं सहायता के आधार पर सूचना प्रदान की जाती है, यह इलेक्ट्रानिक प्रदर्शन सहायता तंत्र (Electronic performance support system) के द्वारा प्रदत्त है। (ब) पाठ्यक्रम (Courses) - शिक्षार्थी स्वयं की पसंद के पाठ्यक्रम की जानकारी या प्रशिक्षण प्राप्त कर सकता है।

3. विचार विमर्श द्वारा अधिगम (Discussion Groups)- समूह में वार्ताकार के मध्य होने वाले तर्कों के कारण सार्थक पाथेय व शिक्षा प्राप्त होने से विचार परिष्कृत होकर मानस पटल पर अंकित हो जाते हैं जो कालान्तर में अधिगम का भाग बन जाते है।

4. मिश्रण अधिगम (Blended Learning)-यह तुल्यकालिक व अतुल्यकालिक का सम्मिश्रण है। उपर्युक्त सभी प्रकार के अधिगम हेतु राष्ट्रीय मिशन के तहत शिक्षण संस्थाओं में कम्प्यूटर का आधारभूत ढाँचा एवं इन्टरनेट सम्पर्क स्थापित किया जा रहा है, टेक्नालॉजी एनाहास्ड लर्निंग के अन्तर्गत एन.पी.टी.एल. नामक राष्ट्रीय पोर्टल द्वारा अभियांत्रिकी, विज्ञान एवं विडियो पाठ्यक्रम चलाये जा रहे हैं। इसी प्रकार शैक्षिक संचार मंडल (Consortium of Education Communication, CEC) द्वारा विभिन्न स्नातक स्तर के पाठ्यक्रमों के लिए ई विषय वस्तु (E Content) ऑनलाईन हैं जो साक्षात नामक

पोर्टल पर उपलब्ध है। टॉक टू ए टीचर प्रोग्राम के द्वारा ए-व्यू के माध्यम से देश के हजारों शिक्षकों व शिक्षार्थियों के मध्य सतत् सम्पर्क व जिज्ञासा का समाधान किया जा रहा है। राष्ट्रीय मिशन द्वारा वित्त पोषित राष्ट्रीय पुस्तकालय, सूचना सेवाएँ व विद्वत् विषय हेतु आधारभूत ढाँचे (National Library and Information Sciences Infrastructure for Scholarly Content) द्वारा शिक्षण संस्थाओं में विद्वत विषयवस्तु भेजी जाती है इसके अंतर्गत सरकार व विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, इन्फोनेट इन्डेस्ट, (Indian Net Digital Library for Engineering Science and Technology, INDEST) इनफिलब नेट (Information Library Network ,INFLIB-NET) आदि के माध्यम से ई-जर्नल, ई-पुस्तकों का पाठन हो रहा है। वर्तमान में 80 आभासी प्रयोगशालाओं के माध्यम से विज्ञान एवं अभियांत्रिकी प्रयोगशालाओं के द्वारा दूरस्थ स्थानों तक पहुँच (Access) बन पा रही है इसमें ग्रामीण व दूरस्थ क्षेत्र के विद्यार्थियों को विज्ञान के प्रयोगात्मक प्रशिक्षण में ई-लर्निंग उपयोगी सिद्ध हो रही है।

मानव संसाधन विकास मंत्रालय ने अधिगम के प्रकार को आसान व रुचिपूर्ण बनाने के लिए 32 शैक्षिक चैनल स्थापित किये हैं ये सभी चैनल डायरेक्ट टू होम डिश टी वी पर उपलब्ध हैं इन चैनलों का उद्देश्य विद्यार्थियों को विभिन्न विषयों के सिद्धान्त, अवधारणाएँ, विषय वस्तु परिभाषाएँ, शब्दावली, प्रायोगिक कार्य सन्दर्भ आदि शैक्षिक विषयों के लिए आसान तरीके विकसित करना हैं। इसके साथ ही चैनलों के डिजाइन के दौरान शिक्षा की गुणवता का भी ध्यान रखा गया है। उच्च शिक्षण संस्थाओं के संकायों के महत्त्वपूर्ण व्याख्यान भी इन चैनलों के माध्यम से प्रसारित किये जाते हैं, जिससे विद्यार्थी के ज्ञानार्जन में सहायता हो। बारहवीं पंचवर्षीय योजना में सूचना प्रौद्योगिकी का अधिगम व शैक्षिक उन्नयन पर जोर देते हुए केन्द्र तथा राज्यों के मध्य खर्च 50:50 के अनुपात में परिवर्तित किया गया है। दूरस्थ तथा मुक्त शिक्षा को बढ़ावा देते हुए मॉक (Massive open online Courses) को प्रोत्साहन दिया जा रहा है। ई लर्निंग में आधुनिकतम तकनीकी का उपयोग किया जा रहा है जिसे वायरलैस संचार तकनीकी क्रांति (Wireless Communication Technology) कहते हैं इसके अंतर्गत वाई फाई (Wi-Fi, Wireless Fidelity) गाई फाई (Gi-Fi, Gigabit Wireless Fidelity) व लाई फाई (Li-Fi , Light Fidelity) तकनीकी का उपयोग कर आँकड़े व स्थिति का सम्प्रेषण उपकरणों के मध्य तीव्र गति से होता है।

प्रौद्योगिकी समर्पित, शिक्षा के कारण ही सूचना व संचार प्रौद्योगिकी ने शिक्षण के आयाम ही बदल दिये। इसी कारण आजकल ई-लर्निंग की माँग बढ़ती जा रही है। यू के बिजनेस परिषद् के अनुसार भारत में ई-लर्निंग का बाजार 1 खरब से ज्यादा हो गया है व इनके प्रति वर्ष 17.4 प्रतिशत बढ़ने की संभावना है। ई-लर्निंग बाजार में भारत अमेरिका के बाद दूसरे नम्बर पर है। उपर्युक्त परिदृश्य ई-लर्निंग के अगले पक्ष को उजागर करता है परंतु इसका दूसरा पक्ष भी है इसे संज्ञान में लेना आवश्यक है। डिजिटल युग के कारण आजकल एक नये विभाजक का प्रादुर्भाव हुआ है, आज एक तरफ इंडिया। व दूसरी तरफ भारत, एक तरफ शिक्षण संस्थाओं में अधिक वित्त पोषण व अधिक सुविधाओं के साथ साथ आधुनिक कक्षा-कक्ष, स्मार्ट क्लास रूम है वहीं दूसरी तरफ वित्त पोषण व सुविधाओं के अभाव में पलता हमारा ग्रामीण शिक्षा पारिस्थितिकी तंत्र, जहाँ आधारभूत सुविधाओं की न्यूनता है वहाँ कम्प्यूटर आधारित व ई-लर्निंग का सोच समझ से परे है। इसी कारण प्रौद्योगिकी सम्पन्न समुदाय व इससे इतर कमियों से जूझता शिक्षा तंत्र, इसी कारण (डिजीटल विभाजक) शब्द का उदय होना प्रासंगिक है। यह डिजीटल क्रान्ति का उत्पाद है। अतः इस विभाजक को दूर करने के लिए ग्रामीण व पहुँच से रहित क्षेत्रों में इन्टरनेट सुविधाएँ, अच्छी कनेक्टीविटी, आधुनिक सुविधाओं का सृजन, श्रेष्ठ शिक्षकों के पदस्थापन, अधिक वित्त पोषण जैसी सुविधाओं का पोषण करना होगा, तभी शिक्षा के महत्त्वपूर्ण उद्देश्य पहुँच (access) को प्राप्त किया जा सकता है।

यहाँ यह लिखना भी प्रासंगिक होगा कि ई-लर्निंग के माध्यम से अधिगम में क्रान्तिकारी परिर्वतन आये हैं, परन्तु फेरिस जब्र (Ferris Jabr, Scientific American, Nov 2013) ने इलेक्ट्रानिक टेबलट्स का प्रिंट वर्ड पर पढ़ने का विश्लेषण करते हुए बताया कि पेपर द्वारा पढ़ना अभी भी अहम है, 'स्क्रीन द्वारा पढ़ने से, जब व्यक्ति पेपर पढ़ता है तब विषयवस्तु का मानसिक चित्रण उसके मस्तिष्क पर हो जाता है। पुनः स्मरण करने पर लेखांश विद्यार्थी के मानस पटल पर अंकित हो जाता है, उनका शोध 'डिजीटल लर्निंग' की गुणवता से संबंधित था। उपर्युक्त परिदृश्य ई-लर्निंग की प्रासंगिकता को दर्शाता है क्योंकि आज हम ज्ञान आधारित समाज में रह रहे हैं जहाँ सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के माध्यम से ई-लर्निंग को जन-जन तक पहुँचा सकते हैं। हमें 'डिजीटल डिवाईड' को दूर करना होगा तभी भारत में ज्ञान-आधारित समाज का निर्माण होगा। ❑

(प्रोफेसर - पर्यावरण विज्ञान विभाग, संत गहिरा गुरु विश्वविद्यालय, अम्बिकापुर, छत्तीसगढ़)

ऑनलाइन लर्निंग : ज्ञान के नए आयाम

❑ डॉ. दीपक कुमार शर्मा

कक्षा कक्ष शिक्षण का कोई विकल्प नहीं है, लेकिन मनुष्य की आधुनिक जीवन शैली और उसकी आवश्यकता के अनुसार विकसित हो रहे विज्ञान ने उसे ज्ञान प्राप्ति के अन्य अनेक विकल्प उपलब्ध कराए हैं, जिनका वह अतिरिक्त ज्ञान प्राप्ति अथवा कक्षा कक्ष शिक्षण के सहयोग के रूप में उपयोग कर सकता है। इसके अतिरिक्त अनेक ऐसे विद्यार्थी जो प्रत्यक्ष शिक्षण से वंचित हैं अथवा जिनके पास आवश्यक अध्ययन सामग्री का अभाव है, उनके लिए ऑनलाइन लर्निंग एक वरदान से कम नहीं है। गत कुछ वर्षों में भारत सरकार ने विद्यार्थियों, शिक्षकों, शोधार्थियों एवं शिक्षा क्षेत्र में कार्य कर रहे अन्य अनेक लोगों की आवश्यकता को अनुभव किया और इस दिशा में गंभीरतापूर्वक कार्य करते हुए बड़ी मात्रा में उपलब्ध ज्ञान भंडार को जन-जन तक पहुँचाने के उद्देश्य से उसका डिजिटलीकरण किया है। आज शिक्षा क्षेत्र से संबंधित हर वर्ग यथा विद्यार्थी, शिक्षक, शोधार्थी, वैज्ञानिक, अर्थशास्त्री, साहित्यकार, इतिहासकार, कलाकार आदि हेतु निःशुल्क सरकारी वेबसाइट एवं मोबाइल एप्लीकेशंस (Apps) उपलब्ध हैं, जिनका संबंधित वर्ग अपनी सुविधानुसार उपयोग कर सकता है। आज हम समय-समय पर अपना दक्षता परीक्षण विविध ऑनलाइन परीक्षाओं/टेस्ट के माध्यम से कर सकते हैं। विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी कर रहे विद्यार्थी इनका काफी उपयोग कर रहे हैं। इंटरनेट पर बड़ी मात्रा में निजी क्षेत्र की संस्थाएँ ऑनलाइन अध्ययन सामग्री उपलब्ध करवा रही हैं लेकिन इस हेतु विद्यार्थियों को काफी धनराशि व्यय करनी होती है। यहाँ कुछ चुनी हुई सरकारी ऑनलाइन अध्ययन सामग्री युक्त पोर्टल /मोबाइल एप्लीकेशन (Apps) की जानकारी दी जा रही है जो सभी के लिए निःशुल्क उपलब्ध हैं।

SWAYAM
https://swayam.gov.in

SWAYAM is a programme ini-

आज शिक्षा क्षेत्र से संबंधित हर वर्ग यथा विद्यार्थी, शिक्षक, शोधार्थी, वैज्ञानिक, अर्थशास्त्री, साहित्यकार, इतिहासकार, कलाकार आदि हेतु निःशुल्क सरकारी वेबसाइट एवं मोबाइल एप्लीकेशंस (Apps) उपलब्ध हैं, जिनका संबंधित वर्ग अपनी सुविधानुसार उपयोग कर सकता है। आज हम समय-समय पर अपना दक्षता परीक्षण विविध ऑनलाइन परीक्षाओं/टेस्ट के माध्यम से कर सकते हैं। विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी कर रहे विद्यार्थी इनका काफी उपयोग कर रहे हैं। इंटरनेट पर बड़ी मात्रा में निजी क्षेत्र की संस्थाएँ ऑनलाइन अध्ययन सामग्री उपलब्ध करवा रही हैं लेकिन इस हेतु विद्यार्थियों को काफी धनराशि व्यय करनी होती है। यहाँ कुछ चुनी हुई सरकारी ऑनलाइन अध्ययन सामग्री युक्त पोर्टल /मोबाइल एप्लीकेशन (Apps) की जानकारी दी जा रही है जो सभी के लिए निःशुल्क उपलब्ध हैं।

tiated by Government of India and designed to achieve the three cardinal principles of Education Policy viz., access, equity and quality. The objective of this effort is to take the best teaching learning resources to all, including the most disadvantaged. SWAYAM seeks to bridge the digital divide for students who have hitherto remained untouched by the digital revolution and have not been able to join the mainstream of the knowledge economy.

इस साईट पर विद्यार्थी स्वयं के स्टार पर ई-कंटेंट में उपलब्ध विभिन्न पाठ्यक्रमों का अध्ययन कर सकते हैं व इससे प्राप्त होने वाले क्रेडिट को भारत के समस्त शिक्षण संस्थानों में मान्यता प्राप्त है।

Consortium for Educational Communication
http://cec.nic.in

The Consortium for Educational Communication popularly known as CEC is one of the Inter University Centres set up by the University Grants Commission of India. It has been established with the goal of addressing the needs of Higher Education through the use of powerful medium of Television alongwith the appropriate use of emerging Information Communication Technology (ICT).

इस साईट में स्नातक व स्नातकोत्तर कक्षाओं की अध्ययन सामग्री ई-कंटेंट(वीडियो) के रूप में उपलब्ध है। इस सामग्री का टेक्स्ट भी इस साईट पर उपलब्ध है व विद्यार्थी के लिए ऑनलाइन परीक्षा के लिए प्रश्नावली भी उपलब्ध है।

VIRTUAL LABS
http://vlab.co.in

To provide remote-access to Labs in various disciplines of Science and Engineering. These Virtual Labs would cater to students at the undergraduate level, post graduate level as well as to research scholars.

इस साईट में स्नातक व स्नातकोत्तर कक्षाओं से सम्बंधित प्रयोग एनिमेशन के रूप में उपलब्ध है। ये निःशुल्क है तथा विद्यार्थी इस पर निःशुल्क लॉग इन कर विज्ञान की विभिन्न पाठ्यक्रमों से संबंधित प्रयोगों की विषय सामग्री व एनीमेशन देख सकते हैं।

e-GYANKOSH (IGNOU)
http://egyankosh.ac.in

A National Digital Repository to store, index, preserve, distribute and share the digital learning resources developed by the Open and Distance Learning Institutions in the country.

स्नातक व स्नातकोत्तर स्तर की कक्षाओं के लिए विभिन्न विषयों यथा पुस्तकें पी.डी.एफ. फॉर्मेट में उपलब्ध

- Humanities
- Social Sciences
- Sciences
- Education
- Continuing Education
- Engineering and Technology
- Management Studies
- Health Sciences
- Computer and Information Sciences
- Agriculture
- Law
- Vocational Education and Training
- Inter-Disciplinary and Trans-Disciplinary Studies
- Gender and Development Studies
- Translation Studies and Training
- Performing and Visual Arts
- Tourism and Hospitality Service Management
- Journalism and New Media Studies
- Foreign Language
- Social Work

National Programme on Technology Enhanced Learning (NPTEL)
http://nptel.ac.in

The National Programme on Technology Enhanced Learning (NPTEL) was initiated by seven Indian Institutes of Technology (Bombay, Delhi, Kanpur, Kharagpur, Madras, Guwahati and Roorkee) along with the Indian Institute of Science, Bangalore in 2003.

इस साईट में स्नातक व स्नातकोत्तर कक्षाओं की अध्ययन सामग्री ई-कंटेंट (ऑडियो व वीडियो) के रूप में निशुल्क उपलब्ध है-

NATIONAL MISSION ON LIBRARIES
http://www.nmlindia.nic.in

The purpose of National Virtual Library of India is to facilitate a comprehensive database on digital resources on information about India and on information generated in India, in an open access environment.

भारत के निम्नलिखित पुस्तकालयों

में उपलब्ध विभिन्न पुस्तकें पी डी एफ फॉर्मेट में उपलब्ध हैं –

- Khuda Bakash Oriental Public Library, KBOPL, Patna
- Central Secretariat Library, New Delhi
- National Library, Kolkata
- Raja Rammohun Roy Library Foundation, Kolkata
- Rampur Raza Library

NATIONAL LIBRARY
http://nationallibrary.gov.in

The National Library is the ape & body of the library system of India. Serving as a public library, it is a permanent repository of all documents published in India.

The Library has a collection of rare documents.

भारत के विभिन्न पुस्तकालयों में उपलब्ध विभिन्न विषयों की पुस्तकें व दस्तावेज पी डी एफ फॉर्मेट में उपलब्ध हैं–

Indira Gandhi National Centre For The Arts (IGNCA)
http://www.ignca.nic.in

A centre encompassing the study and experience of all the arts – each form with its own integrity, yet within a dimension of mutual interdependence, interrelated with nature, social structure and cosmology.

भारत की वृहद सांस्कृतिक परंपरा से संबंधित पुराण, उपनिषद्, स्मृतियाँ व कला सम्पदा के छायाचित्र उपलब्ध हैं। इस वेबसाइट पर पारम्परिक साहित्य, मौखिक महाकाव्य, लोक साहित्य, कवि एवं लेखक, दक्षिणी हिन्दी से संबंधित पुस्तकें व सामग्री उपलब्ध हैं।

Archaeological Survey of India
http://asi.nic.in

Repository of photographs of excavation sites Free downloading of books

ये वेबसाइट पुरातात्विक स्थलों के छायाचित्र, वीडियो व दुर्लभ पुस्तकों का संग्रह है। इस वेबसाइट पर पुरातात्विक स्थलों के वर्चुअल विडियो ट्यूर भी उपलब्ध हैं।

National Digital Library of India
https://ndl.iitkgp.ac.in/

मानव संसाधन विकास मंत्रालय एवं आई आई टी खड़गपुर के सहयोग से निर्मित इस वेबसाइट पर रिपोर्ट्स, मैन्युअल, पुस्तकों, गजेटीयर्स, ऑडियो-विडियो सामग्री प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हैं–

National Mission for Manuscripts
https://www.namami.gov.in

The National Mission for Manuscripts was established in February 2003 , by the Ministry of Tourism and Culture, Government of India. A unique project in its programme and mandate, the Mission seeks to unearth and preserve the vast manuscript wealth of India. India possesses an estimate of ten million manuscripts, probably the largest collection in the world. These cover a variety of themes, cultures and aesthetics, scripts, languages, calligraphies, illuminations and illustrations

ये वेबसाइट मूल्यवान पांडुलिपियों का संग्रह है जो देश के विभिन्न हिस्सों से प्राप्त कर डिजीटल रूप में उपलब्ध करवाई गयी हैं। ये सामग्री शोधार्थियों के लिए प्राथमिक स्रोत के रूप में अत्यंत लाभकारी रहेगी।

e-PG Pathshala
https://epgp.inflibnet.ac.in

An MHRD, under its National Mission on Education through ICT (NME-ICT), has assigned work to the UGC for development of e-content in 77 subjects at postgraduate level. The content and its quality is the key component of education system.

स्नातकोत्तर कक्षाओं में कला, मानविकी, भाषा, लाइफ साइंस, स्वास्थ्य व सामाजिक विज्ञान के 77 विषयों की अध्ययन सामग्री पी डी एफ व विडियो के रूप में उपलब्ध है।

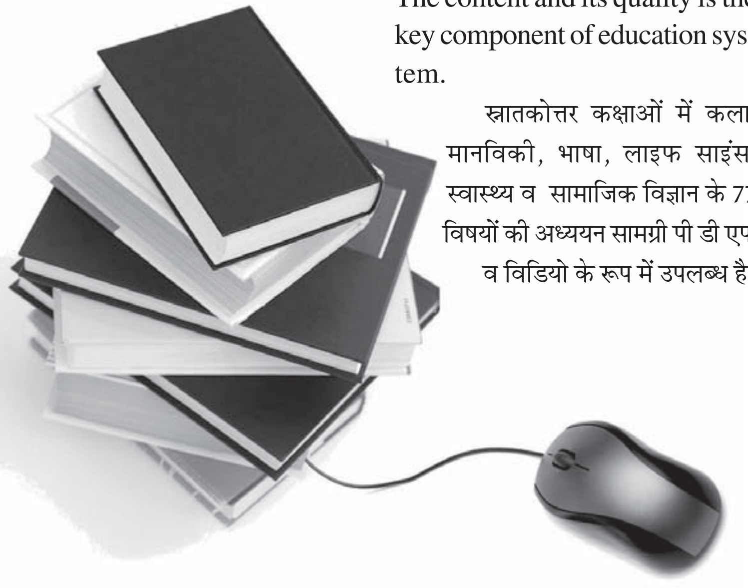

Shodhganga: a reservoir of Indian Theses

http://shodhganga.inflibnet.ac.in

"Shodhganga" is the name coined to denote digital repository of Indian Electronic Theses and Dissertations set-up by the INFLIBNET Centre.

भारत के विभिन्न विश्वविद्यालयों में हुए शोध प्रबंध का संग्रह इस वेबसाइट पर उपलब्ध है। ये विद्यार्थियों व सहायक/सह आचार्यों के लिए भी लाभप्रद है। इसके माध्यम से नवीन शोध से संबंधित जानकारी प्राप्त की जा सकती है।

DISHARI Play store on Android Phone Dishari App contains General Knowledge, Current Affairs, Maths, Reasoning, Rajasthan GK, History, Science, Geography, Hindi Grammar and Computer Awareness with Online Tests and Job Alerts.

Project Dishari is a project to empower youth and enhance capacities. It is an initiative of Department of College Education, Government of Rajasthan. The aim of this app is to provide educational content and updates to the students on the go.

Features

- More than 18000 Questions in Quizzes
- Real-time Live Quiz with Thousands of other Players
- Interactive Quizzes with Review System
- Latest Updates and Job Alert
- Dishari Video Section
- Social Media Sharing of Educational Content, Videos & Test Results.
- Daily Tips and facts
- Global, District wise and College Leaderboard
- Regular Updation of Content
- User Profile

यह एप कॉलेज शिक्षा विभाग, राजस्थान द्वारा विकसित किया गया है। इस एप में समसामयिकी, सामान्य ज्ञान, गणित, मानसिक योग्यता, कम्प्यूटर जागरूकता एवं हिंदी के वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर उपलब्ध हैं। इस एप में समय-समय पर ऑनलाइन लाइव टेस्ट की सुविधा है। इस एप में नयी जानकारी या प्रश्न शामिल किये जाने पर उसकी सूचना भी एप में निहित अलर्ट सुविधा के माध्यम से प्राप्त हो जाती है।

उक्त के अतिरिक्त कुछ ऐसी websites जो सामुदायिक अथवा दान के आधार पर संचालित हैं जिनका उपयोग हम निःशुल्क अथवा न्यून राशि में कर सकते हैं। सरकार द्वारा इस क्षेत्र में निरंतर कार्य किया जा रहा है और विद्यार्थियों की आवश्यकता को देखते हुए शीघ्र ही कुछ नए पोर्टल सामने आयेंगे। इस हेतु हमें समय समय पर मानव संसाधन विकास मंत्रालय की वेबसाईट https://mhrd.gov.in/ एवं अन्य websites को विजिट करते रहना चाहिए। वर्तमान युग में हम सभी शिक्षकों को ज्ञान प्राप्ति की इन डिजिटल विधियों से न केवल स्वयं भी अभ्यस्त होना चाहिए वहीं दूसरी ओर अपने विद्यार्थियों को भी इनकी जानकारी उपलब्ध करवानी चाहिए ताकि हमारी युवा पीढ़ी विश्व की गति के साथ गतिमान हो सके। ❑

(सह आचार्य, प्राणी शास्त्र, वीर विक्रमदेव राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, जालोर)

भारतीय शिक्षा पद्धति और ई-लर्निंग

❑ डॉ. योगेश कुमार गुप्ता

ई-लर्निंग अपने विशिष्ट प्रभाव के कारण कम समय में अधिक लोकप्रिय हुई। ई-लर्निंग प्रक्रिया के अनेक लाभ हैं। सर्वप्रथम इस प्रक्रिया में भिन्न स्तर के विद्यार्थियों के लिए विभिन्न प्रकार के पाठयक्रम उपलब्ध हैं। जिससे रोजगार प्राप्ति के अवसरों में वृद्धि हो जाती है। ई-लर्निंग का सबसे बड़ा लाभ धन एवं समय की बचत है। जरूरतमंद छात्र जो कोचिंग संस्थानों एवं हॉस्टलों के भारी भरकम खर्चे वहन करने में सक्षम नहीं हैं, वे कम शुल्क में ही घर बैठे अपनी आवश्यकता अनुसार ऑनलाइन माध्यम से शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं। विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों के, गरीब बच्चे जो दिन में किसी रोजगार मजदूरी की कार्य में संलग्न रहते हैं, वे रात्रि में अपनी सुविधानुसार अध्ययन कर सकते हैं।

भारत की प्राचीन शिक्षा पद्धति, जिसमें गुरुकुल शिक्षा व्यवस्था बहुत समृद्ध रही। तब के भारत के इतिहास पर एक नजर डालें तो पता चलता है कि जब अंग्रेज भारत में आए थे तो वे यहाँ के ज्ञान के भंडार एवं विरासत को देखकर आश्चर्य चकित रह गए। लार्ड मैकाले ने 2 फरवरी, 1835 को ब्रिटिश पार्लियामेंट को एक खत लिखा जिसमें भारतीय शिक्षा पद्धति के बारे में बताया कि भारत में ही विश्व के सबसे पुरातन विश्वविद्यालय नालंदा और तक्षशिला मौजूद थे। गुरुकुल परम्परा में विद्यार्थी गुरु के सानिध्य में रहकर शिक्षा ग्रहण करता था जिससे उसका बहुमुखी विकास होता था। इसमें चारित्रिक एवं आध्यात्मिक विकास भी समाहित था। इन गुरुकुलों में संस्कृत, वैदिक गणित, चरक संहिता, विज्ञान एवं अंक शास्त्र जैसे विषयों की पढ़ाई होती थी। भारतीय सांस्कृतिक विरासत बहुत ही भव्य थी। आर्यभट्ट एवं चाणक्य जैसे विद्वान इन्हीं गुरुकुलों की शोभा थे। आज भी भारत में उच्च योग्यताधारी वैज्ञानिक तैयार होकर विश्व के उच्च संस्थानों में मार्गदर्शन कर रहे हैं। इसरो में आज भी वैदिक गणित का प्रयोग हो रहा है।

इलेक्ट्रॉनिक मीडिया एवं तकनीकी के माध्यम से पढ़ना और सीखना ई-लर्निंग कहलाता है। सूचना एवं संचार व्यवस्था में ई-लर्निंग के लिए कम्प्यूटर के साथ इन्टरनेट का होना आवश्यक है। जिससे विद्यार्थी कम खर्च में स्वगति से प्रभावशाली मार्गदर्शन प्राप्त कर सकता है। ई-लर्निंग अनिवार्य एवं निःशुल्क शिक्षा के प्रमुख उपकरण के रूप में सामने आई है। ई-लर्निंग की शुरूआत सर्वप्रथम आईआईटी के छात्रों के लिए की गई थी। लेकिन धीरे-धीरे यह सभी के लिए सुलभ माध्यम बनता गया। उच्च शिक्षा के क्षेत्र में ई-लर्निंग का महत्त्वपूर्ण योगदान है। ग्रामीण, दूर दराज क्षेत्र के गरीब, इच्छुक विद्यार्थी तकनीकी के सहयोग से घर बैठे अध्ययन करने में समर्थ हुए है। यहाँ तक कि बड़े-बड़े शिक्षण संस्थानों, कोचिंग संस्थानों के व्याख्यान, ऑडियो-वीडियो, ऑडियो, पीडीएफ, एनिमेशन और टेक्स्ट संबंधित वेबसाइट पर उपलब्ध हैं। शिक्षार्थियों की ऑनलाइन डिमांड के अनुसार ऑनलाइन अध्ययन सामग्री उपलब्ध करवाई जा रही है। प्रारम्भ में ई-लर्निंग उच्च शिक्षा के क्षेत्र तक ही सीमित था, लेकिन वर्तमान में इसका प्रसार प्रारंभिक शिक्षा तक होता जा रहा है।

इन्टरनेट पर एप्स और यू-ट्यूब के माध्यम से शिक्षण सामग्री, मनोरंजक खेल, नैतिक एवं ज्ञानवर्धक कहानियाँ और कविताएँ एक क्लिक पर उपलब्ध हो रही हैं। ई-लर्निंग की लोकप्रियता का आलम यह है कि छोटे-छोट बच्चे स्वयं ही इन एप्स एवं यू-टयूब माध्यम से उपलब्ध सामग्री का उपयोग कर रहे हैं। कम्प्यूटर आधारित शिक्षण, इन्टरनेट आधारित शिक्षण, वेब आधारित शिक्षण ई-लर्निंग के ही रूप हैं। ई-लर्निंग के माध्यम से आभासी कक्षा-कक्ष विकसित हुए हैं जिनमें वास्तविक कक्षा कक्ष की भाँति गुरु-शिष्य संवाद संभव है। ई-लर्निंग की मदद से हर विद्यार्थी को उसकी इच्छानुसार शिक्षा प्रदान की जा सकती है। इस विचार को ध्यान में रखते हुए इंदिरा गांधी मुक्त विश्वविद्यालय की स्थापना की गई। यह विश्वविद्यालय वर्षों से लाखों छात्रों को स्तरीय शिक्षा प्रदान करने के दायित्व को पूर्ण कर रहा है। दूरस्थ शिक्षा के माध्यम से भौतिक दूरियाँ पाट दी गई हैं। तकनीकी के इस युग में ई लर्निंग से दूरस्थ शिक्षा प्रदान करने की समस्या को काफी हद तक निपटाया जा रहा है। इग्नू के सहयोग से संचालित टेलीविजन कार्यक्रम 'ज्ञानदर्शन' एवं रेडियो कार्यक्रम 'ज्ञानवाणी' काफी सराहनीय है। इग्नू वेबसाइट पर ऑनलाइन पाठ्य सामग्री ऑडियो-वीडियो, ऑडियो एवं पीडीएफ के रूप में मौजूद है, जिसका उपयोग शिक्षार्थी इन्टरनेट के माध्यम से कर रहे हैं।

यूजीसी ने दिल्ली विश्वविद्यालय के आईएलएलएल को बड़े स्तर पर ई-लर्निंग पाठ्य सामग्री तैयार करने का दायित्व दिया है। संचार हाईवे को माध्यम बनाकर पेशेवर अपनी ऑनलाइन ट्यूशन देने की क्षमता को ग्लोबल स्तर पर बेचने की व्यवस्था करते हैं, इसे 'ई-ट्यूशन' कहा जाता है। इस माध्यम से विशिष्ट जानकारी एक आसान प्रयास से प्राप्त की जा सकती है।

मानव संसाधन विकास मन्त्रालय द्वारा ई-लर्निंग के लिए विभिन्न कार्यक्रम संचालित किए जा रहे हैं। विद्यालयी स्तर पर छात्रों व शिक्षकों के लिए देश भर में शिक्षा पाठयकम के साथ सूचना और संचार प्रौद्योगिकी का उपयोग कर इन्हें विकसित किया गया है। एनसीईआरटी द्वारा ई-पाठशाला के लिए पाठ्य पुस्तकें, ऑडियो, वीडियो जैसी विभिन्न ई-सामग्री विकसित की गई हैं। अभी तक 3444 ऑडियो और वीडियो, 6980 ई-पुस्तकें (ई-पब) और 504 फ्लिप पुस्तकें ई-पाठशाला के लिए वेब पोर्टल एवं मोबाइल एप पर उपलब्ध करायी गई हैं। स्कूली शिक्षा में अच्छी प्रथाओं, तस्वीरों, वीडियो, अखबारी लेखों के माध्यम से सफलता की कहानियों को एक मंच प्रदान करने के लिए 'शगुन पोर्टल' का विकास किया गया है। ShaGun शाला और गुणवत्ता दो शब्दों से मिलकर बना है। यह सभी राज्यों व केन्द्र शासित प्रदेशों के बीच एक सकारात्मक प्रतिस्पर्धा पैदा करता है। राष्ट्रीय शैक्षिक संस्थान ओपन एजुकेशन रिसोर्सेज स्कूली शिक्षा और शिक्षक शिक्षा के सभी चरणों में डिजिटल और डिजिटेबल संस्थानों को एक साथ लाने की पहल है।

Study Webs of Active Learning for Young Aspiring Minds (SWAYAM) ऑनलाइन पाठ्यक्रम का एक एकीकृत मंच है जो माध्यमिक शिक्षा स्तर से लेकर परा स्नातक स्तर तक ऑनलाइन पाठ्यक्रम के लिए विषय एवं गुणवत्ता संवर्धन के पोर्टल प्रदान करता है।

स्वयंप्रभा-यह डीटीएच टीवी के माध्यम से शैक्षिक ई-सामग्री के प्रसारण के लिए एक कार्यक्रम शुरू किया गया है।

सीआईईटी- यह एनसीईआरटी किशोर मंच डीटीएच टीवी चैनल के लिए राष्ट्रीय समन्वयक की भूमिका निभा रहा है।

जो 24 घण्टे एवं सातों दिन शैक्षिक सामग्री का प्रसारण करता है। प्रतिदिन 4 घण्टे नवीन सामग्री का प्रसारण किया जाता है और 24 घण्टे में इसे 5 बार दोहराया जाता है।

राष्ट्रीय डिजिटल लाइब्रेरी- यह सीखने के संसाधनों के आभासी भंडार की खोज के लिए शुरू की गई एकल खिड़की परियोजना है। एनडीएल के माध्यम से 153 लाख से अधिक डिजिटल पुस्तकें उपलब्ध कराई गई है।

एनपीटीईएल- यह अभियान्त्रिकी, विज्ञान और मानविकी विधा में ई-लर्निंग के माध्यम से ऑनलाइन टेक्स्ट और वीडियो पाठयक्रम उपलब्ध कराता है। इसका उद्देश्य गुणवत्तापूर्ण नि:शुल्क अभियान्त्रिकी शिक्षा प्रदान करना है।

आभासी प्रयोगशालाएँ विज्ञान व प्रौद्योगिकी क्षेत्र में स्नातक, परा स्नातक एवं शोध छात्रों के लिए दूरस्थ शिक्षा उपलब्ध करवाने के उद्देश्य से विकसित की गई हैं।

टॉक टू टीचर-यह अमृता ई-

लर्निंग अनुसंधान प्रयोगशाला के द्वारा विकसित किया गया। यह राष्ट्रीय स्तर पर पुरस्कृत मल्टीमीडिया कार्यक्रम है जो वास्तविक कक्षा कक्ष के समान अनुभव प्रदान करता है। इसी कार्यक्रम के तहत मानव संसाधन विकास मन्त्रालय, भारत सरकार द्वारा सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के माध्यम से स्पोकन ट्यूटोरियल प्रोजेक्ट शुरू किया गया है।

शैक्षिक संचार सहायता संघ– यह वर्ष भर प्रकृति और वीडियो प्रतियोगिताओं का आयोजन करता है। प्रकृति एक वार्षिक फिल्म समारोह है, जो पर्यावरण, मानव अधिकार और विकास पर आधारित फिल्में आयोजित करता है।

ई-यंत्र – यह गणित, कम्प्यूटर विज्ञान और इंजीनियरिंग सिद्धांतों के माध्यम से रोबोटिक्स को इंजीनियरिंग शिक्षा में शामिल करने की एक पहल है।

डिजिटल लाइब्रेरी–यह यूजीसी इन्फोनेट डिजिटल लाइब्रेरी कन्सोर्टियम दिसम्बर 2003 में तत्कालीन राष्ट्रपति माननीय डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम के द्वारा शुरू किया गया बहूद्देशीय कार्यक्रम था।

आईएसएलईआरएस– इस परियोजना का उद्देश्य श्रवण अक्षम विद्यार्थियों के लिए एक स्वचालित भारतीय सांकेतिक भाषा, शिक्षा और मान्यता मंच विकसित करना है। यह श्रवण अक्षम छात्रों के लिए प्राथमिक, व्यासायिक एवं उच्च शिक्षा के स्तर मददगार साबित हुई है।

ऑस्कर– ओपन सोर्स कोर्टवेयर एनिमेशन रिपोर्टजिटरी एक वेब आधारित इन्टरेक्टिव एनिमेशन और सिमुलेशन का भंडार प्रदान करता है। इसमें सीखने की वस्तुएँ कॉलेज स्तर पर विज्ञान और इंजीनियरिंग एवं स्कूल स्तर पर गणित व विज्ञान विषयों का विस्तार करती हैं। छात्र और शिक्षक इन सीखने वाली वस्तुओं को देख, चला और डाउनलोड कर सकते हैं।

आकाश एजुकेशनल पोर्टल– यह परियोजना एक समय में हजारों शिक्षकों के लिए तकनीकी और नवाचार प्रविधि से युक्त कार्यशालाओं का आयोजन करती है। इस प्रकार सरकारी उपक्रमों द्वारा विभिन्न अन्य कार्यक्रम जैसे ई-कल्प, ओएसएस, ईओएसएसईई आदि भी संचालित किए जा रहे हैं। निजी संस्थानों एवं व्यक्तियों द्वारा ई-लर्निंग हेतु वेबसाइट्स, एप्स, वीडियोज और सॉफ्टवेयर आदि का भी संचालन किया जा रहा है। गत कुछ वर्षों में विकिपीडिया, डिक्शनरी डॉट कॉम, सोलो सर्च और टैड टॉक आदि वेब पोर्टल्स अपनी गुणवत्ता एवं सरलता के कारण विशेष लोकप्रिय हुए है।

ई-लर्निंग के लिए कुछ एप्स भी विशेष मददगार सिद्ध हुए है। अमेजन किंडल बच्चों एवं बड़ों के लिए समान रूप से उपयोग में आ रहा है। पढ़ने की आदत को बनाए रखते हुए यह ढेर सारी ऑफ लाइन ई-पुस्तकों का भंडार उपलब्ध कराता है। डुओलिंगों विदेशी भाषा को सीखने के लिए मददगार साबित हुआ है। बीवाईजेयू प्रतियोगी परीक्षाओं से संबंधित एप है, जो घर बैठे ही छात्रों को कोचिंग लेसन उपलब्ध कराता है। अनएकेडमी लर्निंग के माध्यम से विद्यार्थी विषय विशेषज्ञों से अपनी समस्या का समाधान कर सकते हैं। इसके अलावा गणित के लिए क्विक मैथ, ड्रैगन बॉक्स, विज्ञान के लिए साइंस 360 आदि रोचक एवं सरल एप्स उपलब्ध हैं। फ्लोट्री जैसे एप मानसिक विकास के लिए पजल गैम उपलब्ध कराते हैं। यहाँ तक कि प्राथमिक स्तर पर ओलंपियाड के लिए भी पर्याप्त एप्स उपलब्ध हैं।

ई-लर्निंग अपने विशिष्ट प्रभाव के कारण कम समय में अधिक लोकप्रिय हुई। ई-लर्निंग प्रक्रिया के अनेक लाभ हैं। सर्वप्रथम इस प्रक्रिया में भिन्न स्तर के विद्यार्थियों के लिए विभिन्न प्रकार के पाठ्यक्रम उपलब्ध हैं। जिससे रोजगार प्राप्ति के अवसरों में वृद्धि हो जाती है। ई-लर्निंग का सबसे बड़ा लाभ धन एवं समय की बचत है। जरूरतमंद छात्र जो कोचिंग संस्थानों एवं हॉस्टलों के भारी भरकम खर्चे वहन करने में सक्षम नहीं हैं, वे कम शुल्क में ही घर बैठे अपनी आवश्यकता अनुसार ऑनलाइन माध्यम से शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं। विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों के, गरीब बच्चे जो दिन में किसी रोजगार मजदूरी की कार्य में संलग्न रहते हैं, वे रात्रि में अपनी सुविधानुसार अध्ययन कर सकते हैं। ई-लर्निंग के माध्यम से वैश्विक स्तर पर भी जुड़ाव संभव हुआ है। जिसमें विदेशी डिग्रियाँ घर बैठे हासिल कर सकते हैं। कक्षा-कक्ष शिक्षण में विद्यार्थी समय सीमा में बंधा होता है, जबकि ई-लर्निंग में विद्यार्थी स्वगति व स्वक्षमता के अनुसार अपने पाठयक्रम को पूर्ण कर सकता है। ई-लर्निंग से आत्म अनुशासन में वृद्धि होती है। ई-लर्निंग की प्रक्रिया में एक ही प्रयोग को विद्यार्थी देख व सीख सकते हैं, जिससे प्रयोग में पुनः पुनः होने वाले संसाधन व्यय को बचाया जा सकता है। साथ ही साथ इस प्रक्रिया द्वारा कागज की भी बचत होती है। इस कारण से यह प्रक्रिया पर्यावरण हितैषी है। इस प्रक्रिया में व्यक्ति उम्र भर सीखना जारी रख सकता है।

ई-लर्निंग के माध्यम से आने वाले समय में शिक्षा उद्योग का भविष्य इन माध्यमों में केवल संचार की किसी भी नवीनतम डिवाइस को इन्टरनेट की शक्ति से जोड़ने की आवश्यकता है। आगे का रास्ता उपयोगकर्ता को स्वयं मिलता चला जाता है। भारत में ई-लर्निंग अभी अपनी शैशवावस्था में है। लेकिन जिस तेजी से विश्व में प्रौद्योगिकी का विकास हो रहा है। उसे देखते हुए कहा जा सकता है कि ई-लर्निंग की परिपक्व अवस्था आने में देर नहीं है। ❑

(विभागाध्यक्ष, मीडिया एवं मासकम्यूनिकेशन,
निम्स विश्वविद्यालय राजस्थान, जयपुर)

ई-लर्निंग की अपनी कुछ उपयोगिता है जिसका लाभ हम सभी के लिए शिक्षा की व्यवस्था करने, सेवारत प्रशिक्षण देने, व्यावसायिक प्रशिक्षण में सहायता एवं शिक्षा के प्रबंधन हेतु कर सकते हैं। परन्तु व्यक्तित्त्व विकास के लिए केवल ई-लर्निंग के सहारे नहीं रहा जा सकता क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति एवं बालक का मानसिक विकास के साथ-साथ शारीरिक विकास, सामाजिक विकास, सांवेगिक विकास, नैतिक एवं आध्यात्मिक विकास भी आवश्यक है तभी उसके व्यक्तित्त्व का विकास हो सकेगा। इस सम्पूर्णता से विकास के लिए बालक की शिक्षा औपचारिक व अनौपचारिक रूप से होनी चाहिए। इसके लिए बालक के घर, परिवार, समुदाय और विद्यालय की सहभागिता आवश्यक है।

ई-लर्निंग तथा विद्यार्थियों का व्यक्तित्व विकास

❑ **डॉ. सुमनबाला**

वर्तमान युग में प्रत्येक क्षेत्र में परिवर्तन हो रहे हैं। शिक्षा का क्षेत्र भी सतत् रूप से हो रहे इन परिवर्तनों से अछूता नहीं रह गया है। व्यक्ति के व्यक्तित्त्व विकास में शिक्षा महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि जितना अधिक हम शिक्षित होते हैं उतना ही विकास हम करते हैं। जितना अधिक व्यक्ति सीखता है उतना ही विकसित वह होता जाता है क्योंकि शिक्षा व्यक्ति को सशक्त व्यक्तित्त्व के रूप में विकसित करने के लिए उसमें चिन्तन और जिज्ञासा का विकास करती है। वर्तमान में सूचना के विस्फोट ने शिक्षा के क्षेत्र के परिदृश्य को परिवर्तित किया है। हमारी शिक्षा और उसके परिणामस्वरूप परिवर्तित अर्थव्यवस्था आज वैश्विक हो गई है। वर्तमान के इस परिवर्तित परिदृश्य के फलस्वरूप संसाधनों, सेवाओं और विश्व की अर्थव्यवस्था को एक दूसरे पर निर्भरता में तीव्र गति से परिवर्तन हुआ जिसके लिए इसकी आवश्यकता के अनुरूप कार्य करने वाले व्यक्ति चाहिए। इसके लिए अद्भुत कार्यक्षमता और तीव्र से तीव्रतर संप्रेषण तकनीकी की आवश्यकता की पूर्ति के लिए तकनीकी विकास हुआ जिसने आज हमें ऐसी शक्तियाँ, योग्यताएँ और क्षमताएँ प्रदान की जिससे इस दुनिया में बहुत कुछ करने का दम भरा जाने लगा जो कुछ समय पूर्व तक असंभव लगता था। इन्हीं परिवर्तनों से शिक्षा, शिक्षण और अधिगम (लर्निंग) का औपचारिक क्षेत्र जो पहले कक्षा शिक्षण के दायरे तक सीमित था आज तकनीकी प्रगति से पूरी तरह प्रभावित हुआ। प्रत्येक क्षेत्र में परिवर्तन के साथ सभी के लिए शिक्षा और शीघ्र अधिगम (लर्निंग) की आवश्यकता हुई जिसकी मदद के लिए सूचना सम्प्रेषण तकनीकी द्वारा कई नये अवसरों का सर्जन किया गया।

इस प्रकार शिक्षा में तकनीकी से तीव्र गति से परिवर्तन हुआ और यह पहले से भिन्न शिक्षण की विधियों और अधिगम की विधियों के रूप में परिवर्तित हो गई। आज हमारा देश तकनीकी हब के रूप में उभरकर शिक्षण और अधिगम (लर्निंग) की सूचना तकनीकी के माध्यम से एक मजबूत शिक्षा तन्त्र के रूप में बदल गया है। यह तकनीकी आधारित शिक्षण और अधिगम एक नवाचार उपागम के रूप में देखा जाता है जो अधिक अन्तर्क्रिया आधारित और विद्यार्थी केन्द्रित है। जिसके माध्यम से किसी को भी, किसी भी समय और कहीं पर भी अधिगम वातावरण के साथ अधिगम सामग्री डिजिटल तकनीक से प्रदान की जा सकती है।

सूचना सम्प्रेषण की इस तकनीक ने शिक्षण अधिगम की दुनिया में एक प्रकार की क्रान्ति ला दी है जिससे पूर्व के वास्तविक कक्षा कक्षों के स्थान पर कक्षा अनुदेशन की व्यवस्था ई-लर्निंग की तरफ तीव्र गति से बढ़ रही है। यह ई-लर्निंग (अधिगम) एक प्रकार की इलेक्ट्रोनिक तकनीकी द्वारा प्रदत्त और सुगम्य बनाये गये अधिगम के अवसर हैं जो अधिगम के तीनों संघटकों जिसमें विषय वस्तु, अधिगम की विधियाँ और शिक्षण की विधियाँ सम्मिलित हैं, के रूप में कक्षा कक्ष से पूर्णतया भिन्न है। प्राचीन शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में जहाँ केवल एक शिक्षक ही विद्यार्थी की शिक्षा के लिए उत्तरदायी होता था वहीं ई-लर्निंग की प्रक्रिया में विभिन्न प्रोफेशनल सम्मिलित हैं जिसमें अनुदेशन डिजाईनर, कोर्स लेखक, विषय वस्तु, सर्जनकर्ता, समीक्षक, ग्राफिक डिजाईनर, सूचना संगठक और सूचना प्रोफेशनल सम्मिलित हैं। इस प्रकार ई-लर्निंग तकनीक और शिक्षा का मिश्रित रूप है जिसमें सीखने वाला व्यक्ति बिना किसी दूरी की बाधा के स्वयं की गति के अनुसार सीख सकता है। इस अधिगम ने शिक्षक और शिक्षार्थी की प्रत्यक्ष अन्तर्क्रिया और निर्भरता को गौण कर दिया है। इसमें आवश्यकता है तो इलेक्ट्रोनिक माध्यम और उपकरणों की जिसकी सहायता से इसे संपादित किया जाता है।

वर्तमान में ई-लर्निंग की विविध शैलियाँ जिसमें अवलंब अधिगम (Support Learning - शिक्षण-अधिगम को सहारा देने के लिए), मिश्रित अधिगम (Blended Learning -जिसमें परंपरागत तथा सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकी का मिश्रण) और पूर्णरूपेण ई-लर्निंग या अधिगम (Complete e-learning - जिसमें अवास्तविक कक्षा कक्ष जिसमें संरचित एवं निर्मित ई-लर्निंग) का उपयोग किया जाता है। पूर्ण रूपेण ई-लर्निंग मुख्य रूप से दो तरह से उपयोग की जाती है। प्रथम एसेंक्रोनस संप्रेषण शैली (Asynchronous Communication Style) जिसमें अध्यापक तथा विद्यार्थियों की समय विशेष में एक साथ उपस्थिति आवश्यक नहीं होती और अध्ययन सामग्री पहले से ही मौजूद रहती है, विद्यार्थियों द्वारा अपनी इच्छानुसार किसी भी समय अपनी स्वगति से अधिगम हेतु काम में लाया जा सकता है। ई-लर्निंग की द्वितीय शैली संक्रोनस संप्रेषण शैली (Synchronous Communication Style) जिसमें शिक्षण और शिक्षार्थी दोनों को शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया हेतु आवश्यक संप्रेषण करने के लिए एक समय विशेष में एक साथ इंटरनेट पर उपस्थित रहना होता है। इसमें विद्यार्थी शंका का समाधान अध्यापक से प्रश्न पूछकर कर सकता है। यद्यपि इस प्रकार की ई-लर्निंग में वास्तविक कक्षा शिक्षण जैसी अन्तर्क्रिया नहीं कर पाते परन्तु कुछ सीमा तक अध्यापक और शिक्षार्थी को अप्रत्यक्ष रूप से एक साथ एक दूसरे के आमने-सामने शिक्षण अधिगम गतिविधि में संलग्न रखने का प्रयास करता है।

ई-लर्निंग वैयक्तिक और सामूहिक दोनों स्तरों पर अधिगमकर्ताओं (learners) के लिए उपयोगी है। जिन अधिगमकर्ताओं के पास औपचारिक शिक्षण से लाभ लेने का समय व साधन न हो, जैसे कि व्यवसाय के साथ अपनी रुचि और इच्छापूर्ति हेतु अध्ययन की समस्या का समाधान ई-लर्निंग द्वारा किया जा सकता है। साथ ही इससे अपनी जरूरतों, स्थानीय आवश्यकताओं, मानसिक स्तर, दक्षताओं तथा उपलब्ध संसाधनों के अनुरूप उचित शिक्षा तथा अधिगम अनुभव प्रदान किये जा सकते हैं। अधिगमकर्ता की दूरी संबंधी बाधा को ई-लर्निंग से हल करके प्रशिक्षित, दक्ष और अनुभवी अध्यापकों के अनुभवों का लाभ लिया जा सकता है। ई-लर्निंग की एक मुख्य विशेषता लचीलेपन की है जिसमें समय, विभिन्न शिक्षण विधियाँ, शिक्षण सामग्री व ग्रहण करने के विभिन्न तरीकों द्वारा प्रत्येक अधिगमकर्ता को उचित रूप से लाभ प्राप्त हो सकता है। इस प्रकार ई-लर्निंग व्यक्ति के मानसिक विकास के लिए उचित, विविधतापूर्ण और आवश्यकतानुरूप अवसरों को प्रदान करने में उपयोगी है। इन उपयोगिताओं के साथ-साथ इस प्रकार के

अधिगम की अपनी कुछ सीमाएँ हैं। इसके लिए व्यक्ति से यह अपेक्षित है कि वह तकनीकी कुशलता लिए हुए हो और इसके लिए आवश्यक उपकरणों की उपलब्धता भी हो। इस हेतु संसाधन, प्रशिक्षण और ई-लर्निंग के प्रति सभी के सकारात्मक दृष्टिकोण की आवश्यकता है।

वर्तमान में तकनीकी का उपयोग बढ़ने से निरन्तर इस प्रकार के अधिगम का प्रचलन दिनों दिन बढ़ रहा है परन्तु कोई भी तकनीक तब तक पूर्णतया सफल अथवा असफल नहीं कही जा सकती जब तक कि उसके बारे में सभी पक्षों पर विचार न कर लिया जाए। इस प्रकार के अधिगम की भी सीमाएँ हैं। इसलिए सर्वप्रथम यह आवश्यक है कि व्यक्ति के व्यक्तित्त्व के विकास में ई-लर्निंग का क्या योगदान हो सकता है इस विषय में जान लिया जाए। जहाँ तक किसी बालक अथवा व्यक्ति के व्यक्तित्त्व के विकास का प्रश्न है तो व्यक्ति के व्यक्तित्त्व का विकास सम्पूर्णता से होना चाहिए। व्यक्तित्त्व के चहुँमुखी विकास के लिए आवश्यक है कि उसका शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, सांपेक्षिक, नैतिक और आध्यात्मिक विकास सम्मिलित रूप में संपूर्णता से हो। किसी भी एक पक्ष के विकास पर बल देकर दूसरे पक्षों की अनदेखी कर हम व्यक्ति का विकास संतुलित रूप में नहीं कर सकते। इसलिए आवश्यक है कि व्यक्ति का विकास उसके व्यक्तिगत प्रगति के साथ-साथ समाज और राष्ट्र के लिए भी उतना ही उपयोगी हो। ई-लर्निंग की भी एक सीमा है कि यह केवल व्यक्ति के मानसिक विकास के लिए उपयोगी है। इस तरह की लर्निंग से व्यक्ति को अन्य व्यक्तियों के साथ मेलजोल के अवसर नहीं प्राप्त होते। उसे न तो साथियों के साथ मिलकर सीखने के अवसर और साथ मिलता है और न ही अध्यापकों का प्रत्यक्ष सम्पर्क व सामीप्य मिलता है। वह आमने सामने होकर वार्तालाप, चर्चा तथा अन्तर्क्रिया नहीं कर पाता जो वह अपनी वास्तविक कक्षा में कर सकता है। ई-लर्निंग में उसकी अन्तर्क्रिया केवल निर्जीव विषयवस्तु से होती है। जब बालक और व्यक्ति मानवीय और सामाजिक संबंधों और संपर्कों से दूर रहेगा तो उसमें सामाजिक, सांवेगिक, नैतिक इत्यादि भावों का विकास सही प्रकार नहीं हो सकता, जिससे आगे आने वाले जीवन में किसी स्थिति और परिस्थिति में समायोजन करना कठिन होगा। उसे सही मार्गदर्शन, पृष्ठपोषण, निदानात्मक और उपचारात्मक शिक्षण का लाभ भी नहीं मिल पाता। सही मार्गदर्शन और पृष्ठपोषण के अभाव में सही सम्प्रत्ययों का निर्माण हुआ अथवा नहीं इसका मूल्यांकन भी संभव नहीं हो पाता। अत: मानसिक विकास भी सही व पूर्ण होगा। इसकी भी अनिश्चितता लर्निंग (अधिगम) में बनी रहेगी।

व्यक्ति के सही व्यक्तित्त्व विकास और अधिगम के लिए सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश का होना आवश्यक है। मनोवैज्ञानिकों के अनुसार व्यक्ति अथवा बालक को सीखाने के लिए उसके सामाजिक-सांस्कृतिक वातावरण का होना आवश्यक है जिसमें वह अन्य बालकों व व्यक्तियों से अन्तर्क्रिया कर सकें। यह अन्तर्क्रिया जितनी अधिक होगी उतना ही उस बालक और व्यक्ति का मानसिक विकास भी होगा। इस प्रकार ई-लर्निंग पाठांतर क्रियाओं, सामाजिक प्रतिभागिता और समाज तथा समुदाय के साथ अन्तर्क्रिया के अवसर प्राप्त न हो सकने के कारण बालक अथवा व्यक्ति के उचित व्यक्तित्त्व के विकास में भी अपेक्षित सहयोग प्रदान नहीं कर सकती। ई-लर्निंग हमारी संस्कृति की एक पहचान सामूहिकता के अनुसार न होकर व्यक्तिगत पक्ष पर अधिक बल देती है जिससे बालक अथवा व्यक्ति में मैं, मेरा जैसे भाव ही विकसित होंगे। हम और हमारा जैसे सामूहिकता के भाव समाज विकास के लिए आवश्यक हैं जो ई-लर्निंग द्वारा संभव नहीं है। व्यक्ति के सांवेगिक विकास के लिए संवेग नियंत्रण और संवेग संतुलन का प्रशिक्षण तो सामूहिकता से ही संभव है। परम्परागत कक्षा शिक्षण और अधिगम सांवेगिक रूप से स्थित और संतुलित व्यक्तित्त्व के निर्माण में सहायक है।

ई-लर्निंग की अपनी कुछ उपयोगिता है जिसका लाभ हम सभी के लिए शिक्षा की व्यवस्था करने, सेवारत प्रशिक्षण देने, व्यावसायिक प्रशिक्षण में सहायता एवं शिक्षा के प्रबंधन हेतु कर सकते हैं। परन्तु व्यक्तित्त्व विकास के लिए केवल ई-लर्निंग के सहारे नहीं रहा जा सकता क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति एवं बालक का मानसिक विकास के साथ-साथ शारीरिक विकास, सामाजिक विकास, सांवेगिक विकास, नैतिक एवं आध्यात्मिक विकास भी आवश्यक है तभी उसके व्यक्तित्त्व का विकास हो सकेगा। इस सम्पूर्णता से विकास के लिए बालक की शिक्षा औपचारिक व अनौपचारिक रूप से होनी चाहिए। इसके लिए बालक के घर, परिवार, समुदाय और विद्यालय की सहभागिता आवश्यक है। इसके लिए बालक की व्यक्तिगत क्रियाओं के साथ-साथ सामाजिक क्रियाएँ भी आवश्यक हैं। केवल ई-लर्निंग से व्यक्तित्त्व का विकास संभव नहीं है और न ही इसे (ई-लर्निंग) नकारा जा सकता है। सही यह रहेगा कि शिक्षा के क्षेत्र में ई-लर्निंग और कक्षा-कक्ष अधिगम दोनों को ही उपयोग में लिया जाए। दोनों का सम्मिश्रण कितना और किस अनुपात में होना चाहिए इसके लिए बालक के स्तर और परिपक्वता के अनुसार तथा विकास के पक्ष के अनुसार निर्णय किया जा सकता है। ई-लर्निंग की तकनीक एक साधन के रूप में बालक के व्यक्तित्त्व विकास में सहायक हो यह सुनिश्चित करना अत्यन्त आवश्यक और समीचीन है। ❑

(व्याख्याता, हरिभाऊ उपाध्याय महिला शिक्षक महाविद्यालय, हटूण्डी, अजमेर)

राष्ट्रीय विकास में 'सूचना' की भूमिका महत्त्वपूर्ण है। सूचना के अभाव में बेरोजगार युवक रोजगार से वंचित रह जाते हैं, किसान अच्छी फसल, अच्छे बीज व अच्छे प्रतिफल से वंचित रह जाते हैं तथा गरीब महिलाएँ रोजगार व स्वास्थ्य कार्यक्रमों के लाभों से महरूम रह जाती है। ई-प्रशासन के अन्तर्गत ग्रामीण किसानों को नई खोजों, अनुसंधान एवं नवीन कृषि तकनीक, कृषि उपज की कीमतों, आदि के बारे में आवश्यक जानकारी शीघ्र उपलब्ध कराई जा सकती है। ऐसी व्यवस्था होने पर किसान ई-मेल के माध्यम से सही कीमतों पर व सही समय पर अच्छी किस्म के बीज, खाद व अन्य यंत्र भी खरीद सकते हैं।

ई-प्रशासन से समग्र विकास

❑ डॉ. अनीता मोदी

आज सम्पूर्ण विश्व में 'वैश्वीकरण, उदारीकरण व निजीकरण' की लहर है। इस युग में संचार एवं सूचना प्रौद्योगिकी का महत्त्व दिन दूनी रात चौगुनी गति से बढ़ रहा है। इस क्षेत्र की तीव्र प्रगति के व्यापक प्रचार-प्रसार के कारण ही सूचना प्रौद्योगिकी ने क्रांति का रूप धारण कर लिया है। यही नहीं, सूचना प्रौद्योगिकी की इस क्रांति के कारण आज सम्पूर्ण विश्व एक गाँव के रूप में परिवर्तित हो गया है। सूचना प्रौद्योगिकी के बदौलत ही व्यक्ति पलक झपकते ही सारी दुनिया से सम्पर्क स्थापित कर सकता है, घर बैठे ही विश्व के किसी भी कोने से आवश्यक जानकारी, सूचना का आदान प्रदान व परामर्श अविलम्ब हासिल कर सकता है। सूचना प्रौद्योगिकी वर्तमान में मानव जीवन का एक अहम व अभिन्न हिस्सा बन चुका है। जिसके बिना विकास की कल्पना को साकार करना संभव नहीं है।

ज्ञातव्य है कि भारत ने सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में काफी प्रगति की है। जिसके कारण ही विश्व के संचार क्षेत्र में देश का पाँचवा स्थान दर्ज किया गया है। सूचना क्रांति के इस युग में यह जरूरी है कि देश में भी कृषि, स्वास्थ्य, शिक्षा, चिकित्सा व यातायात आदि में सूचना प्रौद्योगिकी के उपयोग को सुनिश्चित करने के लिए हरसंभव प्रयास किये जायें। इन सभी क्षेत्रों में सूचना प्रौद्योगिकी का जाल बिछाने हेतु सर्वप्रथम यह आवश्यक है कि देश में परिवर्तित परिस्थितियों के अनुरूप पारदर्शी उत्तरदायी व जवाबदेह प्रशासन की विद्यमानता आवश्यक है। देश का प्रशासन व संचालन पुरानी पद्धतियों व तौर तरीकों से करने पर देश विकास की दौड़ में पिछड़ जायेगा तथा देश में विकास की गति को बनाये रखना दुष्कर व जटिल कार्य हो जायेगा। अच्छे व आधुनिक प्रशासन के माध्यम से ही सरकार और ग्रामीणों के मध्य सीधा व प्रत्यक्ष सम्पर्क कायम करके 'ग्रामीण विकास' के चिर प्रतीक्षित लक्ष्य को प्राप्त करना संभव है।

विश्व बैंक ने अच्छे प्रशासन के अन्तर्गत राजनीतिक उत्तरदायित्व, जन सहभागिता, न्याय पालिका की स्वतंत्रता व विधि का शासन, प्रशासन की उत्तरदायिता, पारदर्शिता व खुलापन, सूचना अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता एवं दक्ष व प्रभावशाली

प्रशासनिक प्रणाली को समावेशित किया है। निस्संदेह परिवर्तित परिस्थितियों में पुरातन प्रशासन की अपेक्षा ई-प्रशासन (Electronic- Governance) के माध्यम से ही अच्छे प्रशासन की तरफ कदम बढ़ाना संभव है। ई-प्रशासन में दक्षता, वैधता व विश्वसनीयता से जनित शासन के नये मूल्यों पर जोर दिया गया है। जवाबदेह, ईमानदार व कुशल सरकार, पारदर्शिता, पूर्वानुमान एवं खुलापन ई-प्रशासन के मूलभूत घटक हैं। ई-प्रशासन की मूल दृष्टि आम आदमी को बुनियादी आवश्यकताएँ वहनीय एवं लागत प्रभावी ढंग से दक्षता, पारदर्शिता एवं विश्वसनीयता के साथ उपलब्ध कराना है तथा सभी सरकारी सेवाओं तक आम आदमी की पहुँच सुनिश्चित करना है।

ई-प्रशासन के जरिये देश की पारिस्थितिकी, आवश्यकता एवं सहभागिता को चिह्नित कर तदनुरूप योजनाओं में आवश्यक परिवर्तन व संशोधन किया जाना संभव है। ई-प्रशासन की वजह से देश से संबंधित विविध आँकड़े सहज व शीघ्रता से उपलब्ध होने के कारण नीति-निर्माण, नियोजन व अनुसंधान के क्षेत्र में अपेक्षित सफलता हासिल करना संभव है। यही नहीं, देश में सूचना का अधिकार अधिनियम 2005 लागू होने से विभिन्न विभागों, योजनाओं आदि से संबंधित जानकारी सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से सरलता से प्राप्त की जा सकती है तथा इस व्यवस्था पर अंकुश लगाकर योजनाओं व नीतियों के प्रभावी क्रियान्वयन को सुनिश्चित करना संभव है।

ई-प्रशासन के तहत सरकारी सेवाओं, परियोजनाओं व सूचनाओं को जनता तक पहुँचाने में विभिन्न इलेक्ट्रोनिक विधियों व उपकरणों की मदद ली जाती है। ई-प्रशासन की सहायता से सरकारी कार्यप्रणाली में इलेक्ट्रोनिक विधियों व उपकरणों का उपयोग करके प्रशासन को सरल, पारदर्शी, उत्तरदायी, नैतिक जवाबदेह व नागरिकोन्मुख बनाया जाना संभव है। सूचना प्रौद्योगिकी के अन्तर्गत मुख्य रूप से कम्प्यूटर, इंटरनेट, सी.डी., ई मेल, स्केनिंग आदि के समावेशित किया जाता है।

भारत सरकार मूलभूत शासन की गुणवत्ता में सुधार दर्ज करने हेतु साधारण जनता से जुड़े क्षेत्रों में ई-प्रशासन को बड़े पैमाने पर प्रोत्साहित कर रही है। ई-प्रशासन के कारण न केवल सरकारी सेवाओं और कामकाज की कार्यकुशलता तीव्र गति से बढ़ती है अपितु सेवाओं की गुणवत्ता में अपेक्षित सुधार संभव होता है। यही नहीं, सूचना प्रौद्योगिकी के आधार पर सरकार के विभिन्न मंत्रालयों में एकीकरण व समन्वय का मार्ग सुगम होने से योजना के निर्दिष्ट लक्ष्यों की प्राप्ति करना संभव है। ई-प्रशासन के जरिये सरकारी अभिलेखों, नियमों, कानूनों व अधिकारों के बारे में शीघ्र व विश्वसनीय सूचना की प्राप्ति संभव होने से समय की बर्बादी, लालफीताशाही, भ्रष्टाचार आदि जैसी प्रवृत्तियों पर लगाम कसना संभव है।

ज्ञातव्य है कि ग्रामीण विकास व ग्रामीण पुनर्निर्माण का लक्ष्य हासिल करना तभी संभव है जब स्थानीय स्तर पर लोगों को ग्रामीण कार्यक्रमों की जानकारी व

सम्पूर्ण सूचना उपलब्ध हो तथा उनकी सक्रिय सहभागिता सुनिश्चित की जाय। ई-प्रशासन व्यवस्था का विकास होने पर ग्रामीण जनों को विविध विकास कार्यक्रमों व परियोजनाओं एवं उनकी प्रक्रिया से संबंधित आवश्यक जानकारी आसानी से प्राप्त हो सकती है तथा वे इनसे लाभान्वित होकर सही अर्थों में विकास पथ पर अग्रसर हो सकते हैं। इसके साथ ही ई-प्रशासन के कारण सामाजिक अंकेक्षण की व्यवस्था अधिक कारगर व प्रभावी बनाई जा सकती है जिसके कारण इन कार्यक्रमों व योजनाओं से भ्रष्टाचार व बेईमानी जैसे तत्त्वों को समूल उखाड़ना संभव है।

राष्ट्रीय विकास में 'सूचना' की भूमिका महत्त्वपूर्ण है। सूचना के अभाव में बेरोजगार युवक रोजगार से वंचित रह जाते हैं, किसान अच्छी फसल, अच्छे बीज व अच्छे प्रतिफल से वंचित रह जाते हैं तथा गरीब महिलाएँ रोजगार व स्वास्थ्य कार्यक्रमों के लाभों से महरूम रह जाती है। ई-प्रशासन के अन्तर्गत ग्रामीण किसानों को नई खोजों, अनुसंधान एवं नवीन कृषि तकनीक, कृषि उपज की कीमतों, आदि के बारे में आवश्यक जानकारी शीघ्र उपलब्ध कराई जा सकती है। ऐसी व्यवस्था होने पर किसान ई-मेल के माध्यम से सही कीमतों पर व सही समय पर अच्छी किस्म के बीज, खाद व अन्य यंत्र भी खरीद सकते हैं।

इसी भांति, बेरोजगार युवक विविध परीक्षाओं, विविध प्रकार की पाठ्य सामग्री, प्रतियोगी परीक्षाओं हेतु ऑन लाईन आवेदन आदि सूचना प्रौद्योगिकी युक्त सुविधाओं से लाभान्वित होकर विश्व के विकसित देशों के समकक्ष कदमताल कर सकते हैं। यही नहीं, ग्रामीण प्रशिक्षित बेरोजगार युवक युवतियाँ, आईटी क्षेत्रों में गाँवों में ही रोजगार भी प्राप्त कर सकते है। इस प्रकार से 'शाईनिंग इंण्डिया' व 'भारत' के मध्य विद्यमान अंतराल को दूर करना संभव है। तथा ग्रामीण प्रतिभा का पलायन शहरों की तरफ भी नहीं होगा।

ई-प्रशासन के अनेक फायदे होने के बावजूद भी हकीकत यह है कि ग्रामीण क्षेत्रों में ई-प्रशासन की व्यवहार्यता के संदर्भ में काफी सीमाएँ विद्यमान हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में निरक्षरता, सूचना प्रौद्योगिकी का सीमित उपयोग, आधारभूत सुविधाओं की अपर्याप्तता एवं प्रशिक्षित कर्मचारियों का अभाव जैसे तत्त्व ई-प्रशासन के व्यापक उपयोग पर प्रश्नचिह्न लगाते हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में कम्प्यूटर, इंटरनेट आदि की उपलब्धता व प्रयोग बहुत कम है, बिजली, पानी, सड़क व कम्प्यूटर आदि की सुविधाएँ विद्यमान नहीं होने से उपादेयता पर प्रश्न चिह्न लग जाता है। ऐसी निराशाजनक स्थिति में ई-प्रशासन की सफलता सुनिश्चित करना जटिल व दुष्कर कार्य है। ग्रामीण जनों की सोच परम्परावादी, अंधविश्वासी व रूढ़िवादी है, आधी ग्रामीण महिलाएँ निरक्षरता के दंश से आहत हैं, वे तकनीकी भाषा व आधुनिक संचार प्रौद्योगिकी के साधनों के उपयोग से अनभिज्ञ हैं, ऐसी विषम स्थिति में ई-प्रशासन की प्रासंगिकता सीमित रह जाती है। यही नहीं, ई-प्रशासन की अवधारणा को अधिकारी, कार्मिक व जनप्रतिनिधि 'कागजी कार्यवाही' तक ही सीमित रखना चाहते हैं ताकि उनकी कार्यप्रणाली, कार्यों व व्यवस्थाओं पर कोई अंगुली नहीं उठ सके तथा ग्रामीण जनता जानकारी के अभाव में 'अंधेरे की गलियों में गुमराह होती रहें। ऐसी स्थिति में ई-प्रशासन के माध्यम से उत्तरदायी, ईमानदार व जवाबदेही प्रशासन व्यवस्था की कल्पना को सार्थक किया जाना संभव नहीं है। ग्रामीण स्तर पर यह सच्चाई भी सामने आई है कि गाँव 'स्थानीय राजनीति' के दलदल में फंसे रहते हैं, नागरिकों व प्रशासन के मध्य संबंध 'सौहार्द व समन्वय की नींव पर आधारित नहीं होकर' नकारात्मक तत्त्वों पर टिके होते हैं। ऐसी स्थिति में ई-प्रशासन से प्राप्त लाभों का दायरा सीमित हो जाता है।

इन सब कमियों के बावजूद भी जरूरी है कि 21 वीं सदी में विकास की अवधारणा को सशक्त व स्थायी बनाये रखने के लिए देश को ई-प्रशासन की कल्पना को साकार किया जाना आवश्यक है। इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु देश में उपयुक्त माहौल को निर्मित करना एवं सुविधाओं का आधारभूत ढाँचा तैयार करना आवश्यक है। ई-प्रशासन के जरिये देश को विकास पथ पर अग्रसर करने हेतु सर्वप्रथम यह जरूरी है कि देश में आधारभूत बुनियादी सुविधाओं यथा बिजली, पानी, सड़क आदि की उपलब्धता सुनिश्चित की जाय क्योंकि इनके अभाव में ई-प्रशासन की प्रासंगिकता पर प्रश्न चिह्न न लग जाय। तत्पश्चात देश में कम्प्यूटर, इंटरनेट आदि की आधारभूत जानकारी उपलब्ध कराने की दिशा में प्रभावी प्रयास किये जाने चाहिये। स्थानीय भाषा व बोलचाल का उपयोग करके ही गाँवों में सूचना प्रौद्योगिकी के बारे में चेतना व जागृति उत्पन्न करना संभव है। गाँवों में सूचना प्रौद्योगिकी का विस्तार करके ग्रामीण विकास संस्थाओं में प्रत्येक स्तर पर कम्प्यूटर व इंटरनेट का प्रयोग आवश्यक रूप से किया जाना चाहिये। ई-प्रशासन के माध्यम से देश को सस्ती, अधिक कार्यकुशल व त्वरित सेवा प्रदान करके देश की तस्वीर को चमकाया जाना संभव है तथा समावेशी विकास को वास्तविक अर्थों में प्राप्त किया जा सकता है। ❑

(सह आचार्य, अर्थशास्त्र विभाग राजकीय (पी.जी.) कॉलेज, खेतडी, राजस्थान)

डिजिटल मीडिया से हिन्दी पाठकों के सृजन में संकुचन

डिजिटल युग में फायदा यह है कि भारत में वैश्विक ट्रेंड सेट करने की प्रतिभा व जिद है। हिंदी भाषियों की संख्या कहीं ज़्यादा होने के कारण वह सिर्फ दर्शक नहीं रहेगा। हालांकि, यह एक तेजी से ग्लोबल सर्कुलेट होने वाला माध्यम है जो महँगा भी नहीं है। हमें नकारात्मकता से बचने की जरूरत है। फेसबुक ने भी 58.3 करोड़ फर्जी एकाउन्ट यह कहते हुए बन्द कर दिए थे कि भड़काऊ चित्र, आतंकवादी दुष्प्रचार और नफरत फैलाने वाले अकाउंट समुदायिक मानकों के खिलाफ है। अब नेताओं को फॉलो कर रहे उनके फर्जी एकाउन्ट फॉलोवर्स में भी कमी आई है। हिंदी भाषियों के बीच यह तकनीक वरदान के साथ अभिशाप भी बनता जा रहा है। आत्मनियंत्रण नहीं रखने पर व्यसन बढ़ रहा है जो अहितकर साबित हो रहा है।

❑ **डॉ. अंजनी कुमार झा**

डिजिटल मीडिया के उत्तरोत्तर विकास में हिन्दी की महती भूमिका है। हिन्दी प्रेमियों के कारण यह मीडिया काफी विस्तारित हुआ है। आज देश की करीब आधी आबादी के हाथ में स्मार्टफोन है जिसमें एक बड़ा हिस्सा हिन्दी भाषियों का है। बाजार हिन्दी में ज्यादा दिखने के कारण अब ब्रांड विशेषज्ञ इस माध्यम पर अपना विज्ञापन खर्च बढ़ा रहे हैं। सारे कार्यक्रम, फांट प्रस्तुति सब हिन्दी में होने लगे हैं।

अस्मिता नष्ट – उधर, बढ़ती डिजिटल क्रांति भाषा की अस्मिता, सौंदर्य को भी नष्ट करने को तुली है। फेसबुक, गूगल आदि भले ही इंटरनेट को विस्तारित करने पर एड़ी चोटी की मेहनत कर रहे हैं, किन्तु भाषा पर रत्ती भर नहीं। हिन्दी अगर तकनीकी क्रांति की बलिवेदी पर कुर्बान हो जाती है तो इनके साथ साहित्य, ज्ञान, दृष्टि और वैचारिकता के बड़े कोष भी लुप्त हो जायेंगे। पाठकों की निरंतर अभिवृद्धि के कारण, जागरण न्यू मीडिया देश का सबसे तेजी से बढ़ने वाला हिन्दी डिजिटल मीडिया समूह है। यह नया माध्यम अंतः क्रियात्मक है, आपसी संवाद संभव बनाता है। अब जब यह डेस्कटॉप कम्प्यूटरों, लेपटॉपों से निकलकर मोबाईल पर आया तो सर्वव्यापी, सर्वसमय, सर्वत्र और सर्व सुलभ हो गया है। इसमें अतिशीघ्र ही राजनैतिक रणनीतियों, विमर्श और चुनावी नतीजों में अपनी जगह बनायी। कंपनियों और उनके उत्पादों, सेवाओं के प्रचार-प्रसार, उपभोग, मार्केटिंग और ग्राहकों तक पहुँचने, उनको छूने के तौर तरीकों को बदला है। व्यापार, उद्योग, शासन, मनोरंजन, स्वास्थ्य, विज्ञान, कृषि, राजनीति, शिक्षा और मीडिया जनता के लिये ये मंच अब कहीं ज्यादा सक्रिय व सशक्त बन गये हैं।

बदल गये अर्थ – त्रासदपूर्ण स्थिति यह भी है कि बहुत शीघ्र इसने हिन्दी पट्टी के सामाजिक – आर्थिक – राजनीतिक संदर्भों को बदल डाला। प्रयोग, अर्थ कुछ से कुछ हो गये। भाषा के प्रयोग के तौर तरीकों, शब्दकोश, शैली, शुद्धता, व्याकरण और वाक्य रचना को पूरी तरह प्रभावित किया है। जब ई-मेल आया तो कहा गया कि पत्र लिखना ही समाप्त हो जायेगा। वह तो नहीं हुआ, लेकिन हाथ या टाईपराईटर से पत्र लिखने का चलन जरूर खत्म हो गया। जब एस.एम.एस., ट्विटर, फेसबुक, व्हाट्सएप, लिंकडेन ने अनेक लोगों के लिए ई-मेल को भी अनावश्यक और अप्रासंगिक बना दिया।

नई भाषा – डिजिटल मीडिया ने अपनी एक नई भाषा गढ़ ली है। भाषा और शब्दों के सौंदर्य, मर्यादा, गरिमा और स्वरूप की चिंता करने वाले सभी इस नयी भाषा के प्रभाव और भविष्य पर चिंतित हैं। खिचड़ी, विकृत, अटपटी भाषा की खुराक पर पल बढ़ रही युवा पीढ़ी दिग्भ्रमित और संस्कार विहीन बनती जा रही है। विचारपूर्ण लेखन, पठन, साहित्य से दूर होता डिजिटल मीडिया अच्छी भाषा, गंभीर विचार, विमर्श, चिंतन, ज्ञान निर्माण भला कैसे दे पायेगा ? यह हिन्दी के लिये चुनौती है। बिना हस्तक्षेप, नियंत्रण के करोड़ों हिंदी भाषियों तक पहुँच रहे डिजिटल मीडिया पर अब सवालिया निशान भी खड़े हो रहे हैं।

एक कारगर माध्यम – 21 वीं सदी के पहले दशक में ही गूगल न्यूज, गूगल ट्रांसलेट, ऑनलाईन फॉनेटिक टायपिंग जैसे साधनों ने बेब की दुनिया में हिन्दी के विकास में महत्त्वपूर्ण सहायता की। आज लगभग हर वो व्यक्ति जो हिन्दी में लिखना पसन्द करता है, उसके लिए ब्लॉग एक सबसे कारगर माध्यम है। हजारों में हिन्दी ब्लॉग वेब में मौजूद है। अपनी अभिव्यक्ति को अपनी भाषा में प्रदर्शित करने का सुख वेब मीडिया में ब्लॉगिंग के माध्यम से प्राप्त होता है। पहले हमें इंटरनेट पर कुछ भी सर्च करने के लिए उसे अंग्रेजी में ही टाईप करना पड़ता था। लेकिन अब ऐसा नहीं है। जो भी सर्च करना है हिन्दी में लिखने पर उपलब्ध हो जाता है। सोशल मीडिया के प्रसिद्ध प्लेटफॉर्म फेसबुक, यू-ट्यूब, गूगल, इन्स्टाग्राम, माय स्पेश, टम्बलर, वॉट्सएप आदि में हिन्दी की

पकड़ और दखल मजबूत होती जा रही है। प्रियजनों से सीधा संपर्क से लेकर बिज़नेस बढ़ाने का साधन के लिए हिन्दी में प्लेटफॉर्म उपलब्ध है। आज के बाजार में हिन्दी ग्राहकों पर फोकस है। यदि विज्ञापनदाताओं को हिन्दी के बाजार में पहुँच बनानी है तो अब केवल सूचनाओं वाला सरल सा बैनर का विज्ञापन पर्याप्त नहीं होगा। एक अच्छी तरह बुनी हुई कहानी एडवर्टाइजर को अपने लक्षित वर्ग से बेहतर ढँग से जोड़ सकती है। अपने लक्षित ग्राहक वर्ग की आवश्यकताओं को समझकर विज्ञापनदाता अपने संदेश को सिर्फ अंकों और आँकड़ों से आगे ले जाकर उसमें मानवीय पहलू जोड़कर कहानी कह सकते हैं। स्टैनफोर्ड के एक अध्ययन के मुताबिक 63 फीसदी श्रोता – दर्शकों को कहानियां याद थीं, जबकि सिर्फ पाँच फीसदी ही कोई आँकड़ा याद रख पाये। मोबाईल पर हिन्दी विज्ञापनों के वीडियो फोर्मेट की लोकप्रियता लगातार बढ़ती जा रही है। सिस्को के विजुअल नेटवर्किंग इंडेक्स 2016-2021 का पूर्वनुमान है कि वर्ष के अन्त तक सारे इन्टरनेट ट्रेफिक का 80 प्रतिशत वीडियो से संचालित होगा।

झांक रहा निजता की ओर – डिजिटल मीडिया अपने अति खुलेपन के कारण अल्पावधि में बहुत लोकप्रिय हो गया। इसी कारण यह सरकार और उपभोक्ता की निजता की ओर झांकने लगा। नतीजतन भावुक स्टेटस रखने वाली लड़कियाँ सॉफ्ट टारगेट बनती चली गई। ऑनलाईन गाली गलौच शुरू हो गई। हैकिंग का दौर इस कदर बढ़ा कि अलग बिजनेस बन गया। ट्रालिंग भी अपराध बनने लगा। तभी तो साईबर क्राइम विभाग सरकार को खोलनी पड़ी। अलग पुलिसतंत्र बना।

फर्जी खबरें – इन्टरनेट की महानता पर फर्जी खबरों ने इस कदर पलीता लगाया कि शेयर की तरफ यह खूब उछला और गिरा। इसके बावजूद यह आज की खुराक और जरूरत है। 72 करोड़ भारतीयों के ऑनलाईन से डिजिटल बाजार में खलबली है। यह सच है कि टेक्नोलॉजी भलाई के उत्प्रेरक का काम कर सकती है, लेकिन यदि गलत हाथों में पड़ जाये तो बुराई को बहुत बढ़ा-चढ़ा कर पेश कर सकती है।

13 अप्रैल को पूर्व केन्द्रीय मंत्री मुरली मनोहर जोशी का फर्जी पत्र वायरल हुआ। संसदीय चुनाव, 2019 के दौरान अनेक भ्रामक और मनगढंत खबरें आई। गत वर्ष 5 जून, 2018 को एक हिन्दी खबर और संदेश में दावा किया गया कि सैनिकों को अपनी वर्दी व अन्य कपड़े खरीदने के लिए खुद का पैसा खर्च करना पड़ेगा। वास्तव में फैसला यह था कि सार्वजनिक क्षेत्र के आयुध कारखानों को गोला-बारूद और अन्य आवश्यक उपकरणों पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए और वर्दी को वस्त्र कम्पनियों से प्राप्त करना चाहिए। इसका असर सुरक्षाबलों और उनके परिवारों के मनोबल पर पड़ा। इसी तरह 9 जनवरी को संदेश फैला कि 20 जनवरी, 2018 से सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक सारी निःशुल्क सेवाएँ बंद कर देंगे। 24 मई को बच्चा चोर के झूठे संदेश आये। साम्प्रदायिकता का जहर फैलाने, राजनैतिक वैमनस्यता, सामाजिक समरसता को बिगाड़ने में इसका दुरुपयोग धड़ल्ले से किया जा रहा है। स्पैम फॉर्स को रोकने की जरूरत है। फेसबुक और ब्लॉग पर आपत्तिजनक फोटो, खबर लेख लगाने पर कानूनी कार्रवाइयाँ भी हुई हैं। हालांकि, अनावश्यक पाबंदियाँ विस्फोट और विद्रोह का कारक बन सकती हैं। मौजूदा समाज के लिए क्रांतिकारी खोज बनी डिजिटल मीडिया हिंदी क्षेत्र में एक महत्त्वपूर्ण माध्यम है। अब टीवी की बजाय इस पर बहस सुर्खियाँ बनने लगी हैं।

सेहत पर असर – कैस्परस्की लैब सर्वे में यह बात सामने आई है कि लोगों में डिजिटल निर्भरता बढ़ रही है, जिसका प्रभाव उनकी मानसिक सेहत पर पड़ रहा है। डिजिटल एम्नेसिया से बड़ी संख्या में युवा पीड़ित हैं।

उल्लेखनीय है कि इंटरनेट विश्व के विभिन्न स्थानों पर स्थापित कम्प्यूटरों के नेटवर्क का टेलीफोन लाईन की सहायता से जोड़कर बनाया गया एक अंतरराष्ट्रीय सूचना मार्ग है, जिस पर सूचना एक स्थान से दूसरे स्थान पर शीघ्र ही पहुँच जाती है। इंटरनेट के द्वारा सूचना-तंत्र मानव की मुट्ठी में बंद होता जा रहा है। इसे कई नामों से जाना जाता है जैसे – साइबर स्पेस, सुपर हाईवे, इन्फोर्मेशन, द नेट या ऑनलाईन ।

खोज – विश्व का पहला कम्प्यूटर इनियाक अमेरिकी रक्षा विभाग के खर्च से 1945 में विकसित किया गया था।

केवल दर्शक नहीं – साईबर साइकोलॉजी, बिहेवियर एंड सोशल नेटवर्किंग पत्रिका के मुताबिक 19 प्रतिशत हिंदी भाषी यूजर्स नियमित रूप से अपना ब्लॉग लिखते हैं।

डिजिटल युग में फायदा यह है कि भारत में वैश्विक ट्रेंड सेट करने की प्रतिभा व जिद है। हिंदी भाषियों की संख्या कहीं ज़्यादा होने के कारण वह सिर्फ दर्शक नहीं रहेगा। हालांकि, यह एक तेजी से ग्लोबल सर्कुलेट होने वाला माध्यम है जो महँगा भी नहीं है। हमें नकारात्मकता से बचने की जरूरत है। फेसबुक ने भी 58.3 करोड़ फर्जी एकाउन्ट यह कहते हुए बन्द कर दिए थे कि भड़काऊ चित्र, आतंकवादी दुष्प्रचार और नफरत फैलाने वाले अकाउंट समुदायिक मानकों के खिलाफ है। अब नेताओं को फॉलो कर रहे उनके फर्जी एकाउन्ट फॉलोवर्स में भी कमी आई है।

हिंदी भाषियों के बीच यह तकनीक वरदान के साथ अभिशाप भी बनता जा रहा है। आत्मनियंत्रण नहीं रखने पर व्यसन बढ़ रहा है जो अहितकर साबित हो रहा है। ❑

(एसोसिएट प्रोफेसर, डिपार्टमेंट ऑफ-
मीडिया एवं मास कम्यूनिकेशन, विआईपीएस,
आई.पी. विश्वविद्यालय, नई दिल्ली)

To sum up, with all the advantages of E-information, let us see that we get information only through E-learning. Depending upon the learner, this information could be confusing, haphazard or even misleading. To put such information into proper places, there must always be a teacher. Electronic media and the internet have a definite advantage of instant information, which is a great thing indeed. But there is a difficulty of inability to cross check the authenticity of the given information. None else but a teacher alone can-do reparations to such situations.

E-education and Challenges

❑ **Dr. T. S. Girishkumar**

The idea of Electronic learn ing or E-learning is of a much recent origin. Though no one termed these electronic phenomena as electronic revolution as done to machines through terming the phenomenon industrial revolution, the phenomenon with electronic precipitation is indeed, akin to yet another revolution of the industrial revolution kind: An E-Revolution. We see people using expressions like those of 'shrinking world', 'global village' and the like in the wake of revolutions in communication technology already. The E-revolution becomes another drastic extension of shrinking world or global village concept.

Kinds of E-learning

There are different kinds of E-learning being put into practice in our present times. The first kind of E-learning is web-based learning. This kind of learning is accessed through web browsers or through some corporate internet facilities. The second kind is computer-based learning. This is done with the help of computers and is off line learning. The third one is CD ROM-based learning, which are procured from the market. Further to these, we also have 'Webinars', 'Virtual class rooms', 'Mobile learning' and 'Video-based learning'.

Advantages of E-learning

Primarily, E-learning becomes cost-effective. Learning through electronic media becomes much cheaper than other means of learning. E-learning supporters claim that it is extremely advantageous, because (1) it can cater to the needs of all learners, (2) teaching can be repeated any number of times in the same given manner, (3) it gives complete access to the latest in information, (4) lessons are given much faster than in conventional learning, (5) it is scalable in the sense that it can always be updated and modified, (6) it is consistent in the sense that it just repeats the same knowledge format as it is without any alteration, (7) less costly and more effective. Such are the chief advantages of E-learning as propounded by the autochthones of E-learning.

Reflections

It indeed is correct that E-learning opens a very wide horizon to any

learner. One can sit at home with a computer and internet connection and get accessed to any information from any part of the world in no time. There are also many readymade learning materials available both with the internet as well as in the market. Down loading E-books can be done in a jiff and prints could be made, if needed. On line encyclopaedias are more user friendly and instant, so much fast that it is much faster than looking for information in a book available right next to us.

In another words, with the Electronic revolution and internet connectivity, each learner has the entire world at his finger tips. Time spent is amazingly less, effort spent is incredibly minimal and there is a short cut to almost everything. Yes, short cut!

Dos and Don'ts to E-learning

Mahatma Gandhi said that 'Education is a drawing out activity and not a pouring in activity'. Bappu was not seriously trained in philosophy per say, but he possessed amazing insights into phenomenal world. To say that education is not a pouring in activity speaks volumes. In Bharat, knowledge, sources of knowledge and process towards knowing are well discussed and treatises already made in good numbers. Let us discuss these things very briefly.

Knowledge

Maharishi Gautama says that knowledge worth the name should have the property of affecting the knower, in his text, 'Nyayasutra'. That is to say, that knowledge should have the property of 'affectivity'. That is, knowledge should affect the one who is knowing through a process of refining the one who is knowing to make him a better person, a refined person, thus making knowledge a process of purification or refining. When the knowledge to one makes no serious difference to him, what is the difference between before knowledge and after knowledge? Such a person has simply wasted his time and energy, no matter how intelligent he may be. He still remains what he had been, in spite of 'poured in' knowledge to him.

Such may be not called as knowledge; this is simply information. Information is not knowledge, and knowledge ought to be far above mere information. That which distinguishes knowledge from information is what Maharishi Gautama speaks of as affectivity. E-learning can only provide information however effective that may be, but that has to be refined into knowledge by the teachers alone.

Sources of knowledge

Nyaya speaks of four sources of knowledge. They are perception (pratyaksha), inference (anumana), analogy (upamana) and Verbal testimony (shabda). Each source is separately and elaborately

dealt with by the principal text Nyayasutra as well as its near fifty commentaries through both space and time. E-learning just falls into the fourth source of knowledge, Shabda pramana. Other three sources, which may be main relatively, do not come under the phenomenon of E-learning of information.

Methods of knowing

Basically, from the Yoga philosophy, almost every aspect in Bharatiya knowledge tradition speaks of the methods of knowing as 'Triputi', or through three stages. They are Sravana, Manana and Nidhityasana. Primarily one gathers information through any of the four sources, then one reflects upon such information to refine what had been gathered to isolate real knowledge from information and once this is done, he meditates upon what had been isolated. Then alone, shall, knowledge dawn. E-learning has no scope for these phenomena.

School learning

E-learning shall go a long way for beginners of learning. For the beginners of learning, knowledge has to first come as information only, and information is indeed in huge volume. Hence, for all beginners of learning, beginner to mean here, beginner in any new area or field of information, knowledge has to begin as information only. When one enters into any new area, he is just a novice, and has to start from gathering information. It is this information which is to become knowledge in due course. At this point, E-learning shall make things much easy, quick and better. In a word, school students, or anyone who is touching any subject anew, should be encouraged in E-learning to gather as much information as possible, but only for him to work on it subsequently.

Teacher

Given Bharatiya knowledge tradition, learning without a teacher in an impossibility and this has its own strong reasons. Maharishi Aurobindo, who wrote the book 'Secret of the Vedas' is seen concluding that Vedas are to be learned from an Acharya. Teaching Vedas by any authentic Acharya becomes an interesting phenomenon! To different students in front of the Acharya, different meanings are given upon the very same Sukta, by the same Acharya! Here, the Acharya finds out the requirement of each student and gives suitable interpretation that shall make sense to each one of them. Then only the Vedas shall become meaningful to any, as there is no straight jacketed, single and simple meaning to any Sukta of the Vedas. They shall mean different to different minds differently, and the Acharya is expected to know this. It is here that learning becomes impossible without a teacher.

This is not confined to just understanding Bharatiya knowledge tradition alone. This is the case with all learning. It is the task of a teacher to convert information into knowledge with each student. At no point, E-learning can do away with teachers, as well the present pattern of classroom teaching. E-information shall ever remain information, and we shall always need a teacher to make such information knowledge.

To sum up, with all the advantages of E-information, let us see that we get information only through E-learning. Depending upon the learner, this information could be confusing, haphazard or even misleading. To put such information into proper places, there must always be a teacher. Electronic media and the internet have a definite advantage of instant information, which is a great thing indeed. But there is a difficulty of inability to cross check the authenticity of the given information. None else but a teacher alone can-do reparations to such situations.❑

(Ex. Professor of Philosophy, The Maharaja Sayajirao University of Baroda)

"I dream to a digital India..."
Narendra Modi

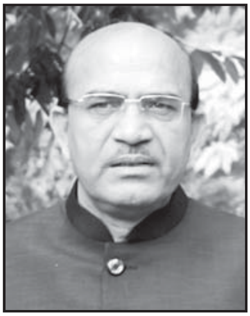

Just like every coin has two sides, e-learning is also bi-folded. It has its advantages as well as some drawbacks. E-learning is just the tool in the hands of the teacher and not vice versa. Technology can never replace the teacher. Teachers can use technology in order to make their teaching learning process more effective and engaging. E-learning as a method of education makes the learners undergo contemplation, remoteness, as well as lack of interaction. With respect to clarifications and interaction with teachers, the e-learning method might be less effective than the traditional method of learning. The learning process is much easier with the use of the face to face encounter with the instructors or teachers. .

❑ **Prof. P.C. Agrawal**

The development of multi media and information technologies, as well as the use internet as a new technique of teaching, has made radical changes in the traditional process of teaching. Development in information technology has generated more choices for today's education. Agendas of schools and educational institutions have recognized e-Learning as having the prospect to transform people, knowledge, skills and performance. Colleges, universities, and other institutions of higher learning race to advance online course capability in a speedily developing education in the society. E-learning, has come to be more and more important in institutions of higher education.

Many initiatives have been taken by NCERT to bridge the gap between the education and the students. The digital India campaign has promoted extensive use of ICTs in the teaching learning process. The ePathshala, a joint initiative of Ministry of Human Resource Development (MHRD), Govt. of India and National Council of Educational Research and Training (NCERT) has been developed for showcasing and disseminating all educational e-resources including textbooks, audio, video, periodicals, and a variety of other digital resources. The ePathshala Mobile app is designed to achieve equitable, quality, inclusive education and lifelong learning for all and bridging the digital divide existing in the society. Another initiative in the field of e-learning is SWAYAM, a massive open online courses (MOOCS) initiative.

Educational courses under SWAYAM are offered online and can be accessed by students through digital classrooms. SWAYAM PRABHA is a direct- to-home service. This means that classroom lectures and the classroom

experience will be delivered directly to the household of interested students through 32 digital educational television channels which are run by the HRD ministry. These channels are easily accessible to anyone

This initiative helps to bridge the gap in quality of education and language of delivery between the rural and urban areas.

NROER is a solution developed to address the challenges faced by the education sector of our country. It intends to reach the unreached, include the excluded and prioritizes to extend education to all. It is a collaborative platform involving everyone who is interested in education. It offers resources for all school subjects and grades in multiple languages. It brings together all the digital resources for a school system such as educational videos, audio, images, documents and interactive modules. Many e-content development platforms are available to enhance the learning of children as they can understand it with their own pace and revise whenever and wherever they want to. E-content is used as an effective tool to enrich learning among pupil and many researches are being done to establish its importance in the field of education.

E-learning is the need of today as it caters to many needs of the present day education. It is flexible when issues of time and place are taken into consideration. Every student has the luxury of choosing the place and time that suits him/her. According to Smedley (2010), the adoption of e-learning provides the institutions as well as their learners the much flexibility of time and place of delivery. E-learning enhances the efficacy of knowledge and qualifications via ease of access to a huge amount of information. E-learning eases communication and also improves the relationships that sustain learning. The use of e-Learning allows self-pacing and permits each student to study at his or her own pace and speed whether slow or fast. It therefore increases satisfaction and decreases stress. Learning through e-content should also be given emphasis as it involves many senses of human beings resulting in better learning.

Just like every coin has two sides, e-learning is also bi-folded. It has its advantages as well as some drawbacks. E-learning is just the tool in the hands of the teacher and not vice versa. Technology can never replace the teacher. Teachers can use technology in order to make their teaching learning process more effective and engaging. E-learning as a method of education makes the learners undergo contemplation, remoteness, as well as lack of interaction. With respect to clarifications and interaction with teachers, the e-learning method might be less effective than the traditional method of learning. The learning process is much easier with the use of the face to face encounter with the instructors or teachers. . When it comes to improvement in communication skills of learners, e-learning as a method might have a negative effect as student teacher interaction is null. The learners though might have an excellent knowledge in academics; they may not possess the needed skills to deliver their acquired knowledge to others. E-learning may also probably be misled to piracy and plagiarism, as well as the ease of copy and paste. There is a big question of authenticity when it comes to e-learning materials. Also not all fields or disciplines can employ the e-learning technique in education. For instance the purely scientific fields that include practical cannot be properly studied through e-learning. Researchers have argued that e-learning is more appropriate in social science and humanities than the fields such as medical science and pharmacy, where there is the need to develop practical skills. E-learning enhances the learning of students at cognitive level but it is not suitable for 360 degree learning as it fails to reach students at emotional, social and psychomotor development. Psychomotor development can only be enhanced when students are provided with hands on experience. So e-learning is best for students at upper level who have already developed their emotional and social skills. E-learning is the future of education and is growing rapidly around us. It helps to disseminate information and skills to everyone when previously it was available only to a selected group of people.

"Students do not learn much just sitting in classes listening to teachers, memorizing pre-packaged assignments, and spitting out answers. They must talk about what they are learning, write reflectively about it, relate it to past experiences, and apply it to their daily lives. They must make what they learn part of themselves." – Arthur W. Chickering and Stephen C. Ehrmann. ❑

(Principal, Regional College,
Bhubaneshwar, Odisha)

श्रेय साधिका बने शिक्षा

❑ डॉ. ओम प्रकाश पारीक

आदि काल से ही शिक्षा का उद्देश्य मनुष्य जीवन को सार्थक बनाना रहा है। वास्तव में मनुष्य अपनी मूल प्रवृत्तियों आहार, निद्रा, भय, मैथुन के पशुतुल्य व्यवहार से ऊपर उठकर आन्तरिक (मानसिक) एवं बाह्य (शारीरिक) शुद्धि को जीवन में उतारकर भौतिक विकास व आत्मिक विकास के संतुलन को स्थापित करता हुआ समष्टि हित में भी क्रियाशील होता है तो उसमें वास्तविक मनुष्यत्व की स्थापना होती है यही कार्य शिक्षा का है जिसे हम श्रेयस्करी शिक्षा कह सकते हैं। श्रेय एवं प्रेय मार्ग में श्रेय मार्ग ही जीवन की सार्थकता का मार्ग है प्रेय मार्ग तत्कालीन रूप से अपनी स्वार्थपूर्ति कर संतुष्टि देता हुआ प्रिय लगता है किन्तु अन्ततः वह दुःखदायी व कष्टप्रद होता है, श्रेय मार्ग तात्कालिक रूप से कठोर व कष्टपूर्ण हो सकता है किन्तु अन्ततः श्रेयस्कर अर्थात् कल्याणकारी होता है।

प्राचीन साहित्य ऋग्वेद से लेकर विभिन्न शास्त्र, महापुरुष व सन्तों की आज तक चलती परम्परा हमें श्रेय मार्ग का उपदेश देती है। गुरुकुल व्यवस्था में प्रचलित शिक्षा तथा आश्रम व्यवस्था में भी मनुष्य को श्रेय मार्ग की दिशा प्रदान की जाती थी। शिक्षा का कार्य है कि हमारी प्राचीन परम्परा से श्रेय साधक बातों, घटनाओं, मूल्यों को छात्रों के आचरण में ग्राह्य करवाये। ऐसी ही श्रेय साधिका सरणि के महान् सन्त एवं भक्ति- कवि-गोस्वामी तुलसीदास जी द्वारा रचित रामचरित मानस आर्तजनों की पीड़ा हरण कर जीवन में अमृत का सिञ्चन करती है तुलसी रचित चौपाइयों एवं दोहों में जीवन-सार्थकता के सूत्र भरे हैं। शिक्षा का उद्देश्य **'सा विद्या या विमुक्तये'** अर्थात् शिक्षा वह है जो बन्धनों से मुक्त करती है दर्शन का उद्देश्य भी आत्यन्तिक (पूर्ण रूप से) दुःख निवृत्ति है इसको लेकर गोस्वामी तुलसीदास जी जीवन के श्रेयस्कर वाक्य को बहुत ही सरल भाषा में कह देते हैं –

दैहिक दैविक भौतिक तापा।
राम राज न हि काहुहि व्यापा।।

शिक्षा को इस देह (शरीर) की आरोग्यता तथा स्वास्थ्य के लिये उपादेय होना चाहिये साथ ही देह में रहने वाली देही अर्थात् आत्मा के साक्षात्कार की साधक भी शिक्षा ही है। जो देव अर्थात् देने वाले प्रकाशपुञ्ज देवता हैं उनसे हमारी अनुकूलता बनाये रखने का कार्य शिक्षा का है क्योंकि आस्था से ही जीवन में आशा बनी रहती है। वेदों में जिस प्राकृतिक व्यवस्था को ऋत कहा गया है उसके हम अनुगामी बने रहें न कि प्रतिगामी। **सत्यं वद, धर्मं चर, मातृदेवो भव, पितृ देवो भव, आचार्य देवो भव** आदि शाश्वत वाक्य हमें ऋत का अनुगामी रखते हुये श्रेय सम्पादित करते हैं।

हमारा जीवन भौतिक उन्नति के अभाव वाला न हो तथा भौतिक विकृति एवं अत्यधिक भौतिकता की कामना से क्लेशप्रद भी न हो जाये। पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि, आकाश पञ्च भौतिक तत्त्वों की विकृति मानव जीवन के लिये भयावह हो सकती है अतः दैहिक, दैविक एवं भौतिक ताप मानव जीवन में पीड़ित न करें ऐसा श्रेय मार्ग शिक्षा द्वारा उपस्थित किया जाना चाहिये। तुलसीदास जी ने यह भी निर्देश इस चौपाई में कर दिया है कि जहाँ दैहिक, दैविक, भौतिक ताप लोगों को ग्रसित नहीं करते वही राम राज्य है अर्थात् सर्व हितकारी श्रेयस्कर राज्य है। शिक्षा जहाँ उक्त प्रकार की विशेषता समाज में उत्पन्न कर दे वह निःसन्देह श्रेयस्करी शिक्षा है।

श्रेयस्करी शिक्षा हमें सिखाती है। कि हम मन वचन और कर्म से प्राणीमात्र का बुरा न करें–

तन करि मन करि वचन करि काहु दूषित नाहि।
तुलसी ऐसे संत जन, रामरूप जग माहिं।।

श्रेयसाधक (गुरु) का वचन (ज्ञान) ही सूर्य की किरण है जिससे शिष्य का अज्ञान रूपी अंधकार तिरोहित हो जाता है ऐसा गुरु ही मनुष्य रूप में हरि अर्थात् परमात्मा है –

बंदउ गुरुपद कंज कृपासिंधु नररूप हरि
महामोह तम पुञ्ज जासु वचन रविकर निकर

विद्यार्थी के समक्ष श्रेय एवं प्रेय दोनों ही स्थितियाँ सामने आती हैं किन्तु श्रेयस्कर ही वरेण्य

हमारा जीवन भौतिक उन्नति के अभाव वाला न हो तथा भौतिक विकृति एवं अत्यधिक भौतिकता की कामना से क्लेशप्रद भी न हो जाये। पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि, आकाश पञ्च भौतिक तत्त्वों की विकृति मानव जीवन के लिये भयावह हो सकती है अतः दैहिक, दैविक एवं भौतिक ताप मानव जीवन में पीड़ित न करें ऐसा श्रेय मार्ग शिक्षा द्वारा उपस्थित किया जाना चाहिये। तुलसीदास जी ने यह भी निर्देश इस चौपाई में कर दिया है कि जहाँ दैहिक, दैविक, भौतिक ताप लोगों को ग्रसित नहीं करते वही राम राज्य है अर्थात् सर्व हितकारी श्रेयस्कर राज्य है। शिक्षा जहाँ उक्त प्रकार की विशेषता समाज में उत्पन्न कर दे वह निःसन्देह श्रेयस्करी शिक्षा है।

होती हैं योग्य गुरु श्रेयस्कर आचरण को ग्राह्य करवाता है। शिष्य में ऐसा संस्कार पैदा हो जाना चाहिये कि वह श्रेय व प्रेय में श्रेय का ही चुनाव करने में अभ्यस्त हो जाये। कठोपनिषद् में यह बात बहुत उत्तम प्रकार से वर्णन की गयी है– नचिकेता जो कि पिता की आज्ञा से यमलोक चला जाता है तीन दिन तक यमराज के नहीं मिलने से बिना अन्न–जल ग्रहण किये वहाँ अनशन करता है, यमराज को जब इस बात का ज्ञान होता है तो नचिकेता को प्रायश्चित स्वरूप तीन वरदान मांगने को कहते हैं जिसमें नचिकेता आत्मा के विषय में ज्ञान मांगता है और समस्त सांसारिक भौतिक प्रलोभनों को ठुकरा देता है। इस प्रकार वह श्रेय व प्रेय में श्रेय का चुनाव करता है –

अन्यच्छ्रेयोऽन्यदुतैव प्रेयस्ते उभे
नानार्थे पुरुषं सिनीतः।
तयोः श्रेय आददानस्य साधु भवति
हीयतेऽर्थाद्य उ प्रेयो वृणीते।।

संसार के सभी कार्य फल की दृष्टि से दो प्रकार के हैं पहला श्रेय मार्ग व दूसरा प्रेय मार्ग प्रथम कल्याण करने वाला मार्ग है दूसरा वह है जिसमें उपभोग योग्य पदार्थ मिलते हैं तथा मनुष्य तात्कालिक सुख प्राप्त करता है।

श्रेयश्च प्रेयश्च मनुष्यमेतस्तौ
सम्परीत्य विविनक्ति धीरः।
श्रेयो हि धीरोऽभि प्रेयसो वृणीते
प्रेयो मन्दो योगक्षेमाद् वृणीते॥

(कठोपनिषद् 2/2)

अर्थात् श्रेय और प्रेय दोनों मनुष्य के पास आते हैं तब वे उन दोनों के गुण दोषों पर मनन कर दोनों को समझने की चेष्टा करते हैं। जो बुद्धिमान् होता है वह श्रेय को स्वीकार कर जीवन को सफल बनाता है, किन्तु जो अविवेकी अल्पबुद्धि वाला होता है वह साधन रूप प्रेय के फल में विश्वास कर लौकिक सुखों हेतु प्रेय को अपनाता है और सांसारिक भोगों में लिप्त हो जाता है। अतः शिक्षा व्यवस्था को श्रेय मार्ग के लिये जागरूक होना आवश्यक है जब शिक्षा का जीवन दर्शन के साथ संयोग होता है तो वह श्रेय साधिका बन जाती है हम अवास्तविक शरीर, धन, यौवन आदि को वास्तविक समझ कर उनके लालच में पड़े रहते हैं तथा वास्तविक आत्म साक्षात्कार से दूर रहते हैं लेकिन मन में श्रेयस्कर ज्ञान होने पर हम प्रत्येक प्राणी में अपना प्रतिबिम्ब देखकर उसके भले का प्रयास करते हैं शिक्षा का भी यही कार्य है कि वो हमें स्वार्थ से परार्थ की ओर अग्रसर करे फलतः अधिकतम सामाजिक कल्याण का उद्देश्य भी प्राप्त हो सकता है। आज जो आर्थिक और सामाजिक विषमता दृष्टिगोचर होती है वह हमारे श्रेयस्कर जीवन दर्शन की शिक्षा से दूर की जा सकती है।

वस्तुतः मनुष्य को जब शिक्षा इस प्रकार के संस्कार ग्रहण करवाने में सफल हो जायेगी कि अनवरत कामोपभोग, एक के बाद दूसरी इच्छाओं की पूर्ति के लिये दौड़ते रहने से इच्छायें कभी संतुष्ट नहीं हो सकती हैं अपितु और अधिक बढ़ती हैं यह प्रेय मार्ग है जो कि परिणाम में स्वयं को तो दुख देता ही है बल्कि इच्छाओं को पूर्ण करने में व्यक्ति अनैतिक रूप से धन संग्रह करता है अतः अत्याचार व अनाचार भी बढ़ते हैं इसलिये कामनाओं को संतुष्ट करना ऐसे ही है जैसे आग में ईंधन डालते रहने से आग का और बढ़ना। श्रेयस्कर यह है कि हम कामनाओं को कम कर अन्य प्राणियों की कामनाओं का भी ध्यान करें।

न जातु कामः कामानामुपभोगेन शाम्यति।
हविषा कृष्णवर्त्मेव भूय एवाभिवर्धते।।

(मनुस्मृति)

मनुष्य संपूर्ण जीवन एषणाओं से घिरा रहता है उसे पुत्र की एषणा होती है, वित्त की एषणा होती है और इनसे भी बलवान लोकेषणा यश व मान की एषणा होती है वह अपने अहम की संतुष्टि के लिये अपने को श्रेष्ठतम सिद्ध करता है जिसके पीछे मान–सम्मान की भावना रहती है इसलिये कहा है –

कंचन तजना सहज है, सहज त्रिया को नेह
मान बड़ाई, ईर्ष्या दुर्लभ तजना एह।

इसलिये श्रेयस्करी शिक्षा वह है जो हमें एषणाओं के जाल में फँसने से बचावे। आज सम्पूर्ण शिक्षा व्यवस्था के श्रेयस्कर होने पर प्रश्नचिह्न है शिक्षा का उद्देश्य धनार्जन हो गया है पर क्या वह श्रेयस्कर है क्योंकि शास्त्रों का अनुभूत उद्घोष है कि **'न हि वित्तेन तर्पणीयो मनुष्यः'** अर्थात् मनुष्य धन से संतुष्ट नहीं हो सकता। आज के पाठ्यक्रम में श्रेयस्करी विद्या के सूत्रों का समावेश नहीं दिखाई देता। शिक्षण तकनीकी में विज्ञान ने अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है इसके दूर शिक्षण, ई-लर्निंग, स्मार्ट क्लास आदि विभिन्न रूप दिखाई देने लगे हैं। वस्तुतः विज्ञान की यह देन विषय प्रस्तुतिकरण में अत्यन्त सहायक है पर इसके साथ विद्यार्थी के सर्वाङ्गीण विकास व चारित्रिक विकास की अवहेलना नहीं की जा सकती। इन्टरनेट पर किसी भी विषय की जानकारी का सूचना रूप में उपलब्ध हो जाना जहाँ समय की बचत व सुविधा प्रदान करता है वहीं बौद्धिक चिंतन शक्ति, स्मरण शक्ति एवं तार्किक शक्ति का ह्रास करता है, जो कि श्रेयस्कर नहीं कहा जा सकता है। अतः तकनीकी का उस मात्रा तक ही प्रयोग श्रेयस्कर है जो कि विद्यार्थी के समक्ष प्रस्तुत की जाने वाली विषय वस्तु उसकी जिज्ञासा प्रवृत्ति को बढ़ाने में सहायक हो तथा विद्यार्थी विषय को आत्मसात कर अपनी सृजनात्मक शक्ति का विकास कर सके।

इस प्रकार श्रेय साधिका शिक्षा से विज्ञान एवं तकनीकी प्रभाव से निरन्तर बदलते हुये युग में भी जीवन को सार्थकता प्रदान करने वाले विभिन्न श्रेयस्कर मूल्यों को विद्यार्थियों में ग्राह्य करवाकर प्रत्येक परिस्थिति में श्रेयमार्ग का ही चुनाव करने एवं उस पर अग्रसर होने के संस्कार दिये जा सकते हैं यही शिक्षा की सार्थकता का श्रेय मार्ग है। ❑

(सह–आचार्य, संस्कृत,
राज. महाविद्यालय, आहोर, जालोर)

विद्यार्थी के व्यक्तित्व को संवारने में सबसे बड़ा हाथ अध्यापक वृंद का ही होता है। परंतु आज वे स्वयं ही मूल्यहीन हो रहे हैं और परिणामस्वरूप उनके विद्यार्थी भी। अध्यापकों में सबसे बड़ी समस्या है बिना सूचना के और अनावश्यक ही घर बैठ जाने की। वर्ल्ड बैंक की एक ताजी रपट के अनुसार इस समस्या से केवल प्राइमरी स्तर पर भारत को 200 करोड़ डॉलर (2 बिलियन डॉलर) प्रतिवर्ष की हानि उठानी पड़ती है। यही नहीं, इसके साथ ही, विद्यालय में उपस्थित होते हुये भी केवल आलस्यवश कक्षा में न जाने से व्यक्तित्व निर्माण के लिये अति महत्त्वपूर्ण प्रारंभिक वर्षों में बच्चों के ज्ञानार्जन अवसर में जबरदस्त कमी आ जाती है। यह सब निश्चय ही गुरुओं की अपनी उत्तरदायित्वहीनता के कारण होता है।

नैतिकता का संकट और केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड

❑ डॉ. ओम प्रभात अग्रवाल

आज का भारतीय समाज गंभीर नैतिकता संकट के दौर से गुजर रहा है। राजनैतिक, सामाजिक एवं शैक्षिक- सभी क्षेत्रों में वर्जनायें टूट रही हैं और जनता एक मूल्यविहीन उन्मुक्त समाज की ओर तीव्रता से अग्रसर है। स्थिति निश्चित रूप से चिंतनीय और देश की प्रगति को अवरूद्ध करने वाली है। इस धारा को पलटने के लिये पहल शैक्षिक क्षेत्र से ही करनी आवश्यक है क्योंकि समाज के कालसिद्ध मूल्यों के क्षरण में वर्तमान के युवा वर्ग की भूमिका सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। वर्ष 2014 के बाद से अब तक मतदाता सूची में लगभग साढ़े चार करोड़ युवा मतदाता जुड़ चुके हैं और स्पष्टत: उन्हीं की प्रकृति और मान्यतायें नये भारत की आधारशिला रखेंगी। इस दृष्टि से केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (CBSE) द्वारा संघ प्रचारित अध्यापक वृंद के लिये नैतिकता 'manual for educators: Integrity and Ethies' अत्यंत II नियमावली Trainer's समयानुकूल है।

विद्यार्थी के व्यक्तित्व को संवारने में सबसे बड़ा हाथ अध्यापक वृंद का ही होता है। परंतु आज वे स्वयं ही मूल्यहीन हो रहे हैं और परिणामस्वरूप उनके विद्यार्थी भी। अध्यापकों में सबसे बड़ी समस्या है बिना सूचना के और अनावश्यक ही घर बैठ जाने की। वर्ल्ड बैंक की एक ताजी रपट के अनुसार इस समस्या से केवल प्राइमरी स्तर पर भारत को 200 करोड़ डॉलर (2 बिलियन डॉलर) प्रतिवर्ष की हानि उठानी पड़ती है। यही नहीं, इसके साथ ही, विद्यालय में उपस्थित होते हुये भी केवल आलस्यवश कक्षा में न जाने से व्यक्तित्व निर्माण के लिये अति महत्त्वपूर्ण प्रारंभिक वर्षों में बच्चों के ज्ञानार्जन अवसर में जबरदस्त कमी आ जाती है। यह सब निश्चय ही गुरुओं की अपनी उत्तरदायित्वहीनता के कारण होता है। गुरुजनों में नैतिकता क्षरण का तीसरा आयाम हमें अत्यंत लापरवाही से अथवा कभी-कभी लालच के कारण उत्तर पुस्तिकाओं की जाँच के रूप में देखने को मिलता है। जहाँ तक विद्यार्थियों का प्रश्न है, उनमें बढ़ती उच्छृंखलता, विनय का अभाव, गुरु एवं माता-पिता की अवज्ञा, पढ़ाई के प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण, इंटरनेट से उपजी चरित्रहीनता, ईमानदारी का बढ़ता अभाव आदि मुख्य समस्यायें हैं। लेखक का मानना है कि यदि अध्यापक में नैतिक शक्ति पूरी हो तो विद्यार्थी में ये दुर्गुण पनप ही नहीं सकते। स्वयं लेखक ने अपने

कार्यकाल में बार-बार इसका अनुभव किया है। इस दृष्टि से CBSE का उपरिलिखित प्रयास सर्वथा औचित्यपूर्ण है।

CBSE के इस प्रोग्राम में आधुनिक विदेशी मानकों तथा विधियों से अध्यापकों के सम्पूर्ण नैतिक उत्थान का प्रयत्न किया जायेगा। उनके शिक्षण में प्रयत्न किया जायेगा कि किस प्रकार अध्यापक कक्षा में ऐसी भाषा का प्रयोग करें जो छात्रों को संतुलित जीवन शैली अपनाने के लिये प्रेरित करे। अध्यापक इसके लिये रचनात्मक दृष्टिकोण वाली कहानियों, महापुरुषों के संस्मरणों एवं प्रतिष्ठित मनोवैज्ञानिकों, लेखकों, पत्रकारों आदि की रचनाओं से उद्धरणों का सहारा लेगा और विद्यार्थियों से भी आशा करेगा कि समय-समय पर अपने उत्तरों की गुणवत्ता वृद्धि के लिये वे भी ऐसा ही करेंगे।

यह सब तो ठीक है। होना ही चाहिये। होता ही था। बीच में जाने कहाँ गुम हो गया और अब समाज कुपरिणाम भुगतने को विवश है। परंतु अभी भी आश्चर्यजनक यह है कि CBSE विदेशी उद्धरणों तथा मेरिलिन प्राइस मिचलैंड जैसे विदेशी विद्वानों के ही लेखन का सहारा लेने को उद्यत है जबकि भारत में ऐसा बहुत कुछ है जो जीवन को संवार सकता है। यदि भारतीय आख्यानों को सहारा बनाया जाय तो विद्यार्थी को वह निश्चित रूप से अधिक ग्राह्य होगा और उद्देश्य प्राप्ति का मार्ग अधिक सरल बन जायेगा।

कुछ एक उदाहरणों से इसे सिद्ध किया जा सकता है। किशोर बालक आरूणि की कथा जिसमें वह गुरु की आज्ञा पालन के हेतु एक बांध को बचाने के लिये अपने जीवन को न्योछावर कर देता है, गुरु-आज्ञा पालन का अप्रतिम उदाहरण है। या फिर गुरु की आज्ञा पालन हेतु एकलव्य द्वारा अपने

दाहिने हाथ के अंगूठे का बलिदान भी ऐसा ही प्रेरक उदाहरण है और उस ललक एवं लक्ष्य के प्रति अभूतपूर्व समर्पण का भी जिसके कारण वह इस अवस्था में भी शरसंधान कौशल में प्रवीणता के लिये बिना हिम्मत हारे प्रयत्न में जुटा रहा। श्रवण कुमार की कथा जहाँ अशक्त माँ-बाप की अनुकरणीय सेवा का, वहीं हनुमान की कहानी स्वामी के प्रति पूर्ण निष्ठा का प्रेरक संदेश देती है।

शिवाजी द्वारा अपने गुरु समर्थ श्री रामदास की आज्ञानुसार बिना कोई विचार किये शेरनी का दूध लाने के लिये निकल जाने का प्रसंग गुरु आज्ञा पालन और शौर्य का अन्यतम उदाहरण है। इसी प्रकार भृगु ऋषि द्वारा सर्वशक्तिमान प्रभु के सीने पर पाद-प्रहार के उत्तर में विष्णु द्वारा उनसे पूछना कि उन्हें किसी प्रकार की चोट तो नहीं लगी, विनय और क्षमा का श्रेष्ठ उदाहरण है। या फिर सागर मंथन में निकले अत्यंत तीव्र हलाहल को मानवता के कल्याणार्थ स्वयं पान करने के लिये शिव का प्रस्तुत हो जाना प्रतीकात्मक रूप से समाज के प्रति सर्वोच्च निष्ठा एवं समर्पण भावना का परिचायक है।

अंतिम उदाहरण तो स्वयं श्रीराम की जीवन गाथा का ही हो सकता है। राम, पुत्र, भाई, पति, शासक, योद्धा एवं मानव- प्रत्येक रूप में आदर्श हैं। निषाद के प्रति उनका अत्यंत मीठा व्यवहार किसी को भी प्रेरक संदेश दे सकता है और अहिल्या एवं शबरी प्रकरण युवकों में स्त्रियों के प्रति सदैव आदर की भावना प्रसूत कर सकते हैं। वस्तुत: राम का सम्पूर्ण जीवन स्त्री के प्रति निष्ठा, विनय, समुचित आदर, समर्पण आदि उदात्ततम भावनाओं का अप्रतिम प्रस्तुतीकरण है। रामायण के अन्य पात्र, लक्ष्मण और भरत भी आदर्श जीवन मूल्यों को साकार करते हैं। राजा राम के आदर्श तो शासक द्वारा प्रजा की सेवा तथा पूर्ण सर्वधर्म समभाव प्रवृत्ति को रूपायित करते प्रतीत होते हैं।

यदि ये आख्यान आचार्यों एवं भावी पीढ़ी को नैतिकता का पाठ नहीं पढ़ा सकते तथा समाज के प्रति उच्चतम नैतिक भावनाओं से उन्हें ओत-प्रोत नहीं कर सकते तो विदेशी पाठ तो ऐसा करने में निश्चय ही असमर्थ होंगे। ये सभी पाठ्यक्रमों के अंग हुआ करते थे परंतु धर्मनिरपेक्षता की भ्रांतिपूर्ण धारणा के चलते निष्कासित कर दिये गये और आगे का समाज इसका कुफल भोगने को विवश हो गया। आवश्यकता है कि इन्हें पाठ्यक्रमों में उचित स्थान मिले ताकि ये अध्यापक तथा छात्र दोनों ही के हृदयों एवं मस्तिष्क पर पुन: छा सकें और इस प्रकार एक स्वस्थ, दायित्वपूर्ण समाज का निर्माण हो सके। ❑

(पूर्व अध्यक्ष-रसायन विभाग, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक, हरियाणा)

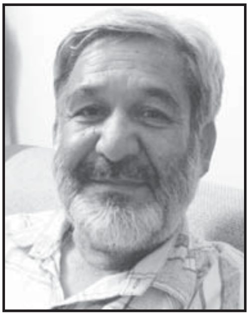

स्वामी जी ने कहा कि मैं चुनौती देता हूँ कि कोई भी व्यक्ति भारत के राष्ट्रीय जीवन का कोई भी ऐसा काल मुझे दिखादे, जिसमें यहाँ सम्पूर्ण विश्व को हिला देने की क्षमता रखने वाले आध्यात्मिक महापुरुषों का अभाव रहा हो। पर भारत का कार्य आध्यत्मिक है और यह कार्य रणभेरी के निनाद से या सैन्यदलों के अभियानों से तो पूरा नहीं किया जा सकता। धरती पर भारत का प्रभाव सर्वदा मृदुल ओस कणों की भांति नीरव तथा अव्यक्त से बरसा है, तथापि इस प्रकार वह सर्वदा धरती के सुन्दरतम पुष्पों को विकसित करता रहा है। हमारी इस पवित्र मातृभूमि का मेरूदण्ड या जीवन-केन्द्र एकमात्र धर्म ही है। शेष विश्व भले ही राजनीति को, व्यापार के बल पर अगाध धनराशि अर्जित करने के गौरव को, वाणिज्य नीति की शक्ति तथा उसके प्रचार को, अथवा बाहरी स्वाधीनता प्राप्ति के अपूर्व सुख को महत्त्व दे परन्तु हिन्दू अपने मन में, न तो इनके महत्त्व को मानते हैं और न मानना चाहते हैं।

स्वामी विवेकानन्द की दृष्टि में भारत की विश्व को देन

❑ **डॉ. विवेक कुमार**

यदि पृथ्वी पर ऐसा कोई देश है, जिसे हम पुण्य-भूमि कह सकते हैं, यदि ऐसा कोई देश है, जहाँ मानव जाति की क्षमा, धैर्य, दया, शुद्धता आदि सद्वृतियों का सर्वाधिक विकास हुआ है और यदि कोई ऐसा देश है जहाँ आध्यात्मिकता तथा सर्वाधिक आत्मान्वेषण का विकास हुआ है, तो वह भूमि भारत है। भारत सदियों तक विश्वगुरु के शीर्षस्थ स्थान पर रहा किन्तु तलवार की नोंक पर नहीं, बल्कि अपनी संस्कृति एवं सभ्यता की श्रेष्ठता के आधार पर। राजनीतिक महानता या सामरिक शक्ति की प्राप्ति करना न कभी भारत का उद्देश्य रहा है, न अब है, और न ही भविष्य में कभी भी ऐसा होगा।

भारत के पुत्ररूप समाज अर्थात् हिन्दू समाज ने कभी भी धन को महत्त्व नहीं दिया। सोने की चिड़िया भारत धन-धान्य से परिपूर्ण था। भारत कभी भी गरीब नहीं था, आज भी नहीं है। विदेशियों द्वारा बहुत कुछ लूटने के पश्चात और कई प्रकार के शोषण तथा अत्याचार के बावजूद कोई भारत को गरीब नहीं बना सका। सारे विश्व की शिक्षा तथा व्यापार का केन्द्र रहे भारत ने बहुत अमीर होते हुए भी कभी धन को महत्व नहीं दिया और न ही उसको मुख्य उद्देश्य माना। भारत युगों तक शक्ति और समृद्धि का केन्द्र बना रहा तो भी शक्ति का उपयोग कभी अपने देश के बाहर किसी पर विजय प्राप्त करने में नहीं किया गया। उसने कभी भी साम्राज्यवादी गौरव को महत्त्व नहीं दिया। धन और शक्ति कभी भी इस देश के आदर्श नहीं बन सके। **न कर्मणा न प्रजया धनेन त्यागनैके अमृतत्वमानशु:।** अर्थात् न तो सन्तानों द्वारा और न ही सम्पति के द्वारा बल्कि केवल त्याग द्वारा ही अमृतत्व की प्राप्ति होती है। यह हमारे देश का गौरवमयी अध्याय रहा है। प्राचीन राष्ट्र शक्ति तथा धन की लोलुपता से उत्पन्न होने वाले पापाचार और दुखों के बोझ से दबकर मिट गये और नये राष्ट्र डगमगाते कदमों से पतन की ओर बढ़ रहे हैं। इस प्रश्न का हल होना अभी भी बाकी है कि शान्ति की जय होगी या युद्ध की, सहिष्णुता की विजय होगी या बुद्धि की, सांसारिकता की विजय होगी या आध्यात्मिकता की, भलाई की विजय होगी या बुराई की, शरीर की विजय होगी या बुद्धि की। भारत ने तो युगों पहले ही इस प्रश्न का हल ढूँढ़ लिया था और उसी समाधान पर दृढ़तापूर्वक डटे हैं और चिरकाल तक उसी पर अटल रहने को कृतसंकल्प हैं। हमारा समाधान है- असांसारिकता-त्याग। मानव जाति का आध्यात्मीकरण-यही भारतीय जीवन की रचना

तथा स्वरूप रहा है। यही उसके अस्तित्व का मेरूदण्ड है, यही उसके जीवन की आधारशिला और उसके अस्तित्व का एकमात्र हेतु है। चाहे शासन रहा हो हूण-शकों या तुर्कों का, चाहे मुगल-पठान-अफगान-फ्रेंच-डच-इंगिलश का परन्तु इस लम्बे जीवन प्रवाह में भारत कभी भी इस मार्ग से विचलित नहीं हुआ है।

भारत में माँ ही परिवार का केन्द्र है और हमारा सर्वोच्च आदर्श है। यह हमारे लिए ईश्वर की प्रतिनिधि है। धरती पर साक्षात चलता-फिरता भगवान है। क्योंकि ईश्वर ब्रह्माण्ड की माँ है। एक नारी ऋषि ने ही सबसे पहले ईश्वर की एकता की अनुभूति की और यह सिद्धान्त वेदों की प्रारम्भिक रचनाओं में व्यक्त किया........ जो प्रार्थना के द्वारा जन्म पाता है, वही आर्य है, और जिसका जन्म कामुकता से होता है, वह अनार्य है। संस्कृत भाषा में दो महाकाव्य अत्यन्त प्राचीन है। इन दोनों में प्राचीन आर्यावर्त की सभ्यता और संस्कृति, आचार, विचार एवं सामाजिक अवस्था लिपिबद्ध है। इन महाकाव्यों में प्राचीनतर 'रामायण' है, जिसमें राम के जीवन की कथा निरूपित हुई है। राम और सीता भारतीय राष्ट्र के आदर्श हैं। भारतीय नारी की उच्चतम महत्त्वाकांक्षा यही होती है कि वह सीता के समान शुद्ध, पति परायणा और सहनशील बने। महाभारत शब्द का अर्थ है- महान् भारत देश, अथवा भारत के महान वंशजों का आख्यान- यह महाकाव्य भारत में सर्वाधिक लोकप्रिय है और इसका भारतीय जीवन पर उतना ही प्रभाव पड़ा है, जितना कि यूनान देश पर होमर-प्रणीत काव्य का। धर्मभीरू किन्तु वृद्ध, अन्ध और निर्बल धृतराष्ट्र के हृदय में चलने वाला पुत्र-प्रेम और कर्तव्य का द्वन्द्व-पितामह भीष्म का उदात्त और उन्नत चरित्र, स्वामी निष्ठा और महासती तपस्विनी रानी गान्धारी, पुत्र वत्सला कुन्ती, पति परायणा और सर्व-सहिष्णु द्रौपदी आदि नारियों का चरित्र-जो पुरुषों से किसी भी प्रकार से कम नहीं है तथा इस महाग्रन्थ और रामायण के अन्य असंख्य चरित्र नायक विगत हजारों वर्षों से समस्त हिन्दू जाति की यत्न-संचित राष्ट्रीय सम्पत्ति रहे हैं। वस्तुत: रामायण और महाभारत प्राचीन आर्य जीवन तथा ज्ञान के दो ऐसे विश्वकोष हैं जिनमें एक ऐसी उन्नत सभ्यता का चित्रण किया गया है, जो मानव जाति को अब भी प्राप्त करनी है।

इन चरित्रों का अध्ययन करने पर हमें सहज ही बोध होने लगता है कि भारतीय और पाश्चात्य आदर्शों में कितना अन्तर है? भारत कहता है,'सहनशीलता द्वारा अपनी शक्ति दिखाओ- पश्चिम कहता है- कर्म करो- कर्म द्वारा अपनी शक्ति दिखाओ'। पश्चिम ने इस समस्या का समाधान किया है कि मनुष्य कितनी अधिक वस्तुओं का स्वामी बन सकता है परन्तु इस प्रश्न का उत्तर भारत ने इस प्रकार दिया है कि मनुष्य कितने अल्प में जीवनयापन कर सकता है।

स्वामी विवेकानन्द के अनुसार 'सारा विश्व हमारे देश का अत्यन्त ऋणी है। जब मैं अपने देश के प्राचीन इतिहास का सिंहावलोकन करता हूँ तो सम्पूर्ण विश्व में मुझे ऐसा कोई भी देश नहीं दिखता, जिसने मानवीय हृदय को उन्नत और सुसंस्कृत बनाने में भारत के समान चेष्टा की हो। इसलिए प्राचीन काल में भारत ने ही सर्वप्रथम चिकित्सा-वैज्ञानिक उत्पन्न किये थे और सर विलियम हंटर के मतानुसार इसने विभिन्न रसायनों का पता लगाकर और तुम्हारे विद्रूप कान और नाक को सुडौल बनाने की विधि (प्लास्टिक सर्जरी) सिखाकर आधुनिक चिकित्सा विज्ञान में भी योग दिया है। बीजगणित, ज्यामिति, ज्योतिष तथा आधुनिक विज्ञान का गौरव-मिश्रगणित- इन सबका आविष्कार भारत में हुआ, यहाँ तक पूरी वर्तमान सभ्यता की मूल आधारशिला, वे दस अंक भी भारत में ही आविष्कृत हुए हैं और उन्हें सूचित करवाने वाले शब्द भी वस्तुत: संस्कृत के हैं।

दर्शनशास्त्र के क्षेत्र में तो जैसा कि महान जर्मन दार्शनिक शापेनहावर ने स्वीकार किया है, हम अब भी दूसरे राष्ट्रों से बहुत ऊँचे हैं। संगीत में, भारत ने संसार को सात प्रधान स्वरों और उनके मापन-क्रम सहित अपनी अंकन पद्धति दी है, जिनका आनन्द हम ईसा से लगभग तीन सो पचास वर्ष पूर्व से ले रहे थे, जबकि यूरोप में वह ग्यारवीं सदी में ही पहुँच सकी। भाषा विज्ञान में, अब हमारी संस्कृत भाषा सभी विद्वानों द्वारा सारी यूरोपीय भाषाओं की आधार के रूप में स्वीकार की जाती है जो वस्तुत: संस्कृत के अपभ्रशों के सिवा और कुछ नहीं है।

साहित्य में हमारे महाकाव्य, काव्य तथा नाटक किसी भी भाषा में ऐसी सर्वोच्च रचनाओं के समकक्ष है। जर्मनी के महान कवि गेटे ने शकुन्तला के सार का उल्लेख करते हुए कहा है कि यह 'स्वर्ग और धरा का सम्मिलन है। भारत ने इसकी कथाएँ दी हैं। इसप ने इन्हें एक पुरानी संस्कृत पुस्तक से लिया था। भारत ने सहस्त्र रजनी-चरित (Arabian Nights) दिए हैं और हाँ, सिन्ड्रेला और बीन स्टॉक्स की कहानियाँ भी वहीं (भारत) से आयीं हैं। वस्तुओं के उत्पादन में भारत ने ही सर्वप्रथम रूई तथा बैंगनी रंग बनाया। वह रत्नों से सम्बन्धित सभी कलाओं में कुशल था अन्त में उसने शतरंज, ताश और चौपड़ के खेलों का अविष्कार भी किया है। वस्तुत: सभी बातों में भारत की उच्चता इतनी अधिक थी कि यूरोप की भुक्खड़ टोलियाँ उसकी ओर आकृष्ट हुआ, जिसके फलस्वरूप परोक्ष रूप से अमेरिका का भी अविष्कार हुआ।

स्वामी जी ने कहा कि मैं चुनौती देता हूँ कि कोई भी व्यक्ति भारत के राष्ट्रीय जीवन का कोई भी ऐसा काल मुझे दिखादे, जिसमें यहाँ सम्पूर्ण विश्व को हिला देने की क्षमता रखने वाले आध्यात्मिक महापुरुषों का अभाव रहा हो। पर भारत का कार्य आध्यत्मिक है और यह कार्य रणभेरी के निनाद से या सैन्यदलों के अभियानों से तो

पूरा नहीं किया जा सकता। धरती पर भारत का प्रभाव सर्वदा मृदुल ओस कणों की भांति नीरव तथा अव्यक्त से बरसा है, तथापि इस प्रकार वह सर्वदा धरती के सुन्दरतम पुष्पों को विकसित करता रहा है।

हमारी इस पवित्र मातृभूमि का मेरूदण्ड या जीवन-केन्द्र एकमात्र धर्म ही है। शेष विश्व भले ही राजनीति को, व्यापार के बल पर अगाध धनराशि अर्जित करने के गौरव को, वाणिज्य नीति की शक्ति तथा उसके प्रचार को अथवा बाहरी स्वाधीनता प्राप्ति के अपूर्व सुख को महत्त्व दे परन्तु हिन्दू अपने मन में, न तो इनके महत्त्व को मानते हैं और न मानना चाहते हैं। हिन्दुओं के साथ धर्म, ईश्वर, आत्मा, अनन्त और मुक्ति के सम्बन्ध में बातें कीजिए। मैं आपको बताता हूँ, यहाँ का एक साधारण कृषक भी इन विषयों में अन्य देशों के दार्शनिक कहे जाने वाले व्यक्तियों की अपेक्षा अधिक जानकारी रखता है। संसार को सिखाने के लिए अभी भी हमारे पास बहुत कुछ है। इसीलिए सैंकड़ों वर्षों के अत्याचार और लगभग हजार वर्षों के विदेशी शासन तथा शोषण के बावजूद यह देश जीवित है। इस देश के अब भी जीवित रहने का मुख्य प्रयोजन यह है कि इसने अब भी संसार, ईश्वर और धर्म तथा अध्यात्मरूप रत्नकोश का परित्याग नहीं किया है। स्वामी विवेकानन्द ने कहा, 'प्राच्य और पाश्चात्य राष्ट्रों में घूमकर मुझे दुनिया का कुछ अनुभव प्राप्त हुआ है और मैंने सर्वत्र अब देशों का कोई न कोई ऐसा आदर्श देखा है जिसे उस देश का मेरुदण्ड कह सकते हैं। कहीं राजनीति, कहीं समाज-संस्कृति, कहीं मानसिक उन्नति और इस प्रकार कुछ न कुछ प्रत्येक के मेरुदण्ड का काम करता है परन्तु हमारी मातृभूमि भारतवर्ष का मेरूदण्ड धर्म - केवल धर्म ही है। धर्म के आधार पर, उसी की नींव पर, हमारे राष्ट्रीय जीवन का प्रासाद खड़ा है।

रोम को देखो। रोम का ध्येय था साम्राज्य लिप्सा-शक्ति विस्तार। ज्यों ही उस पर आघात हुआ, त्यों ही रोम छिन्न-भिन्न हो गया, पूरी तरह से नष्ट हो गया। यूनान की प्रेरणा थी-बुद्धि, ज्यों ही उस पर आघात हुआ, त्यों ही यूनान समाज हो गया। वर्तमान युग में स्पेन आदि का भी यही हाल हुआ प्रत्येक राष्ट्र के विध्वंस का एक ध्येय होता है। और जब तक वह ध्येय आक्रान्त नहीं होता, तब तक असंख्य संकटों के बीच भी वह राष्ट्र जीवित रहता है। पर ज्यों ही वह ध्येय नष्ट हुआ, त्यों ही वह राष्ट्र ढह जाता है।

भारत की वह प्राण-शक्ति अब भी आक्रान्त नहीं हुई है। भारतवासियों ने इसका त्याग नहीं किया है। हिन्दू का खाना धार्मिक, जीना धार्मिक, सोना धार्मिक, उसकी चाल-ढाल धार्मिक, विवाह आदि धार्मिक, और यहाँ तक कि विचार-व्यवहार भी धार्मिक होता है। इसका एक ही कारण है वह यह कि इस देश की प्राण शक्ति-उसका ध्येय धर्म है और चूंकि धर्म पर आघात नहीं हुआ इसलिए यह देश उसी कारण जीवित है। यह एक ऐसा राष्ट्र है जिसका प्रधान जीवनोद्देश्य धर्म, त्याग और वैराग्य है। हिन्दुओं का मूलमंत्र-यह जगत क्षणभंगुर और दो दिनों की भ्रान्ति मात्र है।

स्वामी जी ने कहा, 'पश्चिम में आने से पहले मैं भारत से केवल प्रेम करता था परन्तु अब (विदेश से लौटते समय) मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि भारत की धूलि तक मेरे लिए पवित्र है, भारत की हवा तक मेरे लिए पावन है। भारत अब मेरे लिए पुण्यभूमि है, तीर्थस्थान है। हम अभी भारत के पतन के बारे में कुछ सुनते हैं कभी मैं भी इस पर विश्वास करता था। मगर आज अनुभव की दृढ़ भूमि पर खड़े होकर, दृष्टि को पूर्वग्रहों से मुक्त कर और सर्वोपरि अन्य देशों के अतिरंजित चित्रों को प्रयास रूप से उचित प्रकाश छायाओं में देखकर, मैं बड़ी विनम्रता के साथ स्वीकार करता हूँ कि मैं गलत था। हे आर्यों के पावन देश! तू कभी भी पतित नहीं हुआ। राजदण्ड टूटते रहे और फेंके जाते रहे, शक्ति गेंद एक हाथ से दूसरे में उछलती रहीं, पर भारत में दरबारों तथा राजाओं का प्रभाव सदा अल्प लोगों को ही छू सका। राष्ट्रीय जीवन-धारा कभी मन्द या अर्धचेतन गति से और कभी प्रबल या प्रबुद्ध गति से प्रवाहित होती रही है। राष्ट्रीय जीवन रूपी यह जहाज लाखों लोगों को जीवनरूपी समुद्र के पार करता रहा है। कई शताब्दियों से इसका यह कार्य चल रहा है और इसकी सहायता से लाखों आत्माएँ, इस सागर में उस पार अमृतधाम में पहुँची हैं। पर आज शायद हमारे दोष से इस पोत में कुछ खराबी आ गई है, इसमें कुछ छेद हो गये हैं तो क्या हम इसे कोसेंगे? संसार में जिसने हमारा उपकार किया है, उसके विरुद्ध खड़े होकर गोली बरसाना क्या हमारे लिए उचित है? आओ चलें उन छेदों को बन्द कर दें। उसके लिए हँसते-हँसते अपने हृदय का रक्त बहा दें और यदि ऐसा न कर सकें तो हमारा मर जाना ही उचित है।

स्वामी जी ने कहा, सर्वप्रथम हमारे उपनिषदों, पुराणों और उन सब शास्त्रों में जो अपूर्व सत्य छिपे हुए हैं, उन्हें इन ग्रन्थों के पन्नों से बाहर निकालकर, मठों की चहारदीवारी भेद कर, वनों की निर्जनता से निकलकर, कुछ विशेष सम्प्रदायों के हाथ से छीन कर देश में सर्वत्र बिखेर देना होगा, ताकि यह सत्य, दावानल के समान पूरे देश को चारों ओर से लपेट लें- उत्तर से दक्षिण और पूर्व से पश्चिम तक सर्वत्र फैल जाएँ - हिमालय से कन्याकुमारी और सिन्धु से ब्रह्मपुत्र तक सर्वत्र धधक उठे।

ज्ञान से विज्ञान तक सभी प्रकार के भंडार अपने वेदों में, शास्त्रों में और अपने दैनिक जीवन में कई प्रकार से प्रकट होता है परन्तु गड़बड़ कहीं और है। भारत के दुखः दारिद्र्य तथा पतन का प्रधान कारण, कहीं न कहीं संकीर्णता का भाव आ जाना है। उसने घोंघे की तरह अपने अंगों को समेट

कर अपने कार्यक्षेत्र को संकुचित कर लिया और अन्य देशों के सत्यपिपासुओं के लिए अपने जीवनदायी रत्नों का भंडार नहीं खोला। हमारे पतन का एक अन्य कारण यह भी है कि हमने बाहर जाकर दूसरे राष्ट्रों से तुलना नहीं की। कोई भी मनुष्य, कोई भी राष्ट्र, दूसरों से घृणा करते हुए जी नहीं सकता। भारत के भाग्य का निपटारा उसी दिन हो गया था, जिस दिन उसने म्लेच्छ शब्द का अविष्कार किया और दूसरे राष्ट्रों से अपना नाता तोड़ लिया।

एक अन्य अभाव संगठन का भी रहा है। वही अभाव सब ग्रन्थों का मूल हैं। हम नीतिगत बातें बहुत करते हैं परन्तु उनके अनुसार कार्य करना हमने छोड़ दिया है। इस प्रकार तोते की भांति बातें करना हमारा अभ्यास हो गया है, आचरण में हम बहुत पिछड़ गये हैं। हम शारीरिक, मानसिक तथा बौद्धिक दृष्टि में पिछड़ रहे हैं। भारत में दो बड़ी बुरी बातें हैं, स्त्रियों का तिरस्कार और गरीबों को जाति-भेद के द्वारा पोसना, परिणाम स्वरूप संसार के सब देशों में गुलामी के कलंक का टीका सबसे अधिक गहरा लगा है। पिछले लगभग आठ सौ वर्षों के अनेक आघातों-प्रत्याघातों के बावजूद इस विश्व गुरु रहे भारत ने प्रत्येक क्षेत्र में बहुत कुछ दिया है।

और अभी भी कुछ न कुछ देने की ओर अग्रसर हो रहा है। तक्षशिला विश्वविद्यालय 700 BC में- जिनमें 300 लेक्चर हाल - लेबारेट्री - लाइब्रेरी आदि के साथ-साथ एस्ट्रोनोमिकल ऑब्जरवेट्री थी। जिसमें 10,000 विद्यार्थी एवं 200 शिक्षक थे। जीरो को गणित में देकर सारे विश्व के वैज्ञानिकों के लिए बहुत कुछ असम्भव से सम्भव कर दिया। बहुत सारे आविष्कार तभी हो पाये। अल्बर्ट आइंसटीन "We owe a lot to the Ancient Indian, teaches us how to count? Without which most modern Scientific discoveries would have been impossible! भारत ने डेसीबल सिस्टम दिया। नुमेरीकल नोटशन अर्थात् (हिन्दसे) दिये।

शिक्षा के साथ-साथ चिकित्सा के क्षेत्र में भी बहुत कुछ दिया। 700 BC भारत का आयुर्वेद अपने चरम शिखर पर था। कुष्ठ रोग इलाज करवाने सारे विश्व से लोग भारत में ही आते थे। कुष्ठ रोग का इलाज सुश्रुत संहिता में आता है। अथर्ववेद में इसका वर्णन है। शल्य चिकित्सा तो रामायण-महाभारत काल से लेकर बहुत समय तक बहुत प्रसिद्ध एवं दोष रहित रही। इसका वर्णन हमारे शास्त्रों में भी मिलता है। भास्कराचार्य ने कहा कि सूर्य के गिर्द धरती के घूमने में 365.4 दिन का समय लगता है। इससे पूर्व वैज्ञानिकों के पास इतना सूक्ष्म तथा सही गणित नहीं था। आँखों का ऑपरेशन- सुश्रुत संहिता में वर्णित हैं।

शिक्षा-चिकित्सा तथा ज्योतिष विज्ञान के साथ-साथ विश्व के दो बड़े धर्म बौद्ध धर्म-जैन धर्म का जनक रहा यह देश। कई खेल भी दिये। आज का शतरंज का खेल गुप्त साम्राज्य का चतुरंग का खेल ही है। आज का लूडो, सांप-सीढ़ी का खेल जिसे मोक्ष-पथ कहा जाता है। ओरनामैंटल ज्योमेट्रीकल शेप के बटन में 2000 BC उपलब्ध थे इसका प्रमाण हड़प्पा संस्कृति में मिलता है। नेचुरल ऑयल से चम्पी ही आज का शेम्पू है। फुट्टा (Scale) हड़प्पा संस्कृति में ही सर्वप्रथम मिलता है।

कश्मीरी ऊन तथा पश्मीने का अविष्कार भी भारत में ही हुआ, कपड़ा रंगने की कला भी यहाँ विकसित हुई। पटसन की खेती का आरम्भ भी भारत में ही हुआ। मिश्री भारत से ही ले जाकर चीन ने उसका सूक्ष्म रूप कर भारत में बनाकर भेजा तो वह चीनी कहलाई। टिगनोमेट्रिक फंक्शन ज्योमेट्री का लगभग पाँचवी शताब्दी में आर्यभट्ट और बराहमिहिर ने दिया। पेनटियम चिप के अविष्कारक विनोद धाम ही रहे। S.B. के अविष्कारक भी अजय वी.भान थे। Wootz-Steel सर्वोत्तम भारत में ही बनाई जाती थी। ऐसी स्टील से बनाये जाने वाली तलवारें तथा हथियार एक सिल्की रूमाल से लेकर बड़ी से बड़ी कठोरतम वस्तु पर आघात करने में सक्षम थे। और इनके आघात से इन्फेक्शन भी नहीं होती थी। मैटलरजी (Metallurgy) धातुओं का ढालने तथा गलाने की कला भारत से ही सारे विश्व को गई। यह बहुत ही उत्तम तरीके से होती थी। दिल्ली में कुतुबमीनार के पास लौह स्तम्भ इसका जीता जागता प्रमाण है और आश्चर्यजनक ढँग से सदियों से खड़ा है और आज तक कहीं भी जंग नहीं लगा है। कम्पयूटर की मूल-भाषा बिटस-बाईटस (Bits & Bites) का भी भारतीय विद्वान ने ही अविष्कार किया जिसका वर्णन हमें चन्द्रा शास्त्र में मिलता है। इस युग में भी जे.सी.बोस ने केस्कोग्राफ से प्लांटस की ग्रोथ-नापी जा सकने वाली विधि का ज्ञान दिया।

भारत ने मुख्य रूप से अध्यात्म और धर्म के माध्यम से सारे विश्व का मार्गदर्शन किया है। अतीत से ही भविष्य बनता है अत: यथा सम्भव अतीत की ओर देखो। गौरवमयी अतीत को लेकर निश्चित ही पहले से भी अधिक श्रेष्ठ भारत बनायेंगे। अतीत के साँचे में भविष्य को ढालना होगा। अतीत, गीता के सिंहनाद करने वाले शान्ति और क्रान्ति के दूत भगवान कृष्ण को घर-घर पहुँचाना होगा। धर्म को पूजा पद्धति नहीं जीवन जीने की कला के रूप में प्रस्तुत करना होगा। क्या समता, स्वतन्त्रता, कार्य-कौशल तथा पुरुषार्थ में तुम पाश्चात्यों के भी गुरु बन सकते हो? कुछ तो दोष रहे होंगे। जिनको सुधारकर-गौरवमयी अतीत के साथ जोड़ कर एक अच्छे भविष्य का पुन: संकल्प कर सकता है भारत। अस्तु-उतिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्तिबोधत। ❑

(प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष, स्वामी विवेकानन्द चैयर, केन्द्रीय विश्वविद्यालय, जम्मू)

महात्मा गाँधी जी के 150 वें जन्म वर्ष पर विशेष (भाग-8)

गाँधी के विचारों की प्रासंगिकता

❑ प्रो. सतीश कुमार

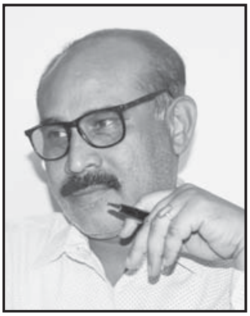

गाँधी के विचारों की प्रासंगिकता कितनी है वह इस तथ्य से अनुमान लगाया जा सकता है कि पिछले दिनों नोबेल पुरस्कार एक ऐसे व्यक्ति को दिया गया जो खान पान के तौर तरीके से जुड़ा हुआ था। जिससे उपवास को कैंसर की बीमारी से लड़ने का मुख्य साधन बताया। गाँधी ने अपने सत्याग्रह के दौरान उपवास को एक महत्त्वपूर्ण हथियार और सोच बनाया लेकिन समय के साथ गाँधी का यह सोच वैज्ञानिकता की कसौटी पर विरोधाभासी मानी जाने लगी। गाँधी ने परम्पराओं को मानने की बात सोच समझ कर करने की सलाह दी थी, लेकिन यह भी कहा था कि परम्परायें निरर्थक नहीं हैं। गाँधी ने कहा था एक आजादी की लड़ाई और लड़नी पड़ेगी देश को अपनी ही हुकूमत से बचने के लिए, आज वह समय आया है। 17वीं लोक सभा का चुनाव उसी का आगाज है। भारत एक खोज नेहरू जी की पुस्तक थी, लेकिन उनकी सोच ने भारत को विस्मृत कर दिया। पिछले 5 वर्षों की मोदी सरकार ने उस भारत को खोजने और स्थापित करने की कोशिश की है, जो अंग्रेजियत में गुम हो गया था। हिंदी और संस्कृत की पुनर्स्थापना, भारत में पढ़ने के बाद भारतीय कौशल को बढ़ाना और देश को दुश्मनों की नजर से सुरक्षित रखने की व्यवस्था का निर्माण करना।

प्रसिद्ध उर्दू शायर अकबर इलाहाबादी ने लिखा है – **तिफ्ल में बू आए क्या माँ-बाप के अवतार की, दूध तो डिब्बे का है तालीम है सरकार की।** इसका अर्थ बन्द डिब्बे में विदेशी शिक्षा से देश की दशा नहीं बदलेगी। यही बात गाँधी की शिक्षा में है। गाँधी ने एक ऐसी शिक्षा की बात की थी जो आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देती हो, किसी के रहमो–करम पर जिन्दा नहीं हो, यहाँ तक कि राज्य व्यवस्था पर भी नहीं। बच्चों को ऐसी शिक्षा मिलनी चाहिए जो उनको जिंदगी के झंझावातों से निकाल सके, लेकिन हुआ इसके उलटा। आज लाखों की संख्या में ऐसे विद्यार्थी हैं जो पीएच.डी. करते करते 35 वर्ष के हो जाते हैं फिर भी अपने पैरों पर खड़े नहीं हो पाते। व्यक्ति, समाज और देश ऐसे हजूम से कमजोर होने लगता है। गाँधी ने ऐसी तालीम की बात कही थी लोग शिक्षा प्राप्त करने के बाद स्वावलम्बी बन सकें। पढ़ाई केवल शिथिल ज्ञान की तालीम नहीं है, यह लोगों को स्वावलम्बी बनाती है, गाँवों को स्वाधीन बनाती है, पलायन को रोकती है, लेकिन आज की व्यवस्था ने गाँधीवादी विचारों को पूरी तरह से

गाँधी ने एक ऐसी शिक्षा की बात की थी जो आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देती हो, किसी के रहमो-करम पर जिन्दा नहीं हो, यहाँ तक कि राज्य व्यवस्था पर भी नहीं। बच्चों को ऐसी शिक्षा मिलनी चाहिए जो उनको जिंदगी के झंझावातों से निकाल सके, लेकिन हुआ इसके उलटा। आज लाखों की संख्या में ऐसे विद्यार्थी हैं जो पीएच.डी. करते करते 35 वर्ष के हो जाते हैं फिर भी अपने पैरों पर खड़े नहीं हो पाते। व्यक्ति, समाज और देश ऐसे हजूम से कमजोर होने लगता है। गाँधी ने ऐसी तालीम की बात कही थी लोग शिक्षा प्राप्त करने के बाद स्वावलम्बी बन सकें। पढ़ाई केवल शिथिल ज्ञान की तालीम नहीं है, यह लोगों को स्वावलम्बी बनाती है, गाँवों को स्वाधीन बनाती है, पलायन को रोकती है, लेकिन आज की व्यवस्था ने गाँधीवादी विचारों को पूरी तरह से विखंडित कर दिया।

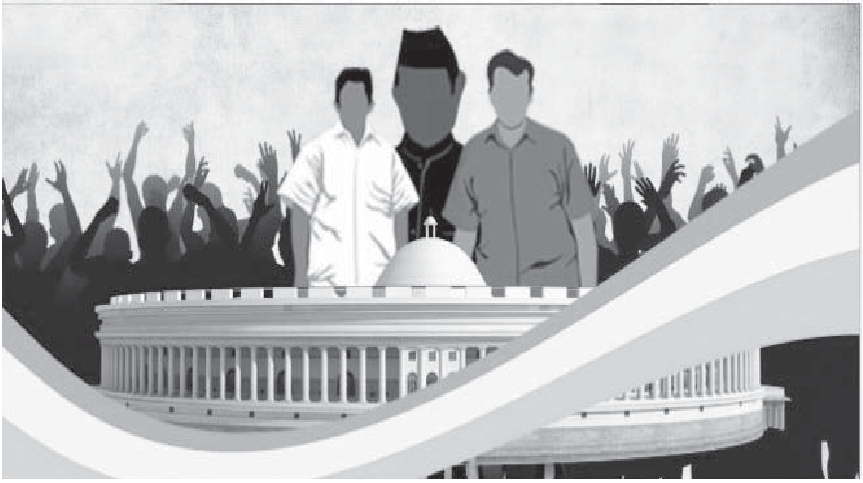

विखंडित कर दिया। गाँव जर्जर हो गए, शिक्षा की डोर पकड़ने के लिए युवक शहरों की दौड़ लगाने लगे। गाँव की आर्थिक व्यवस्था निरंतर शहरों पर निर्भर होने लगी। शहरी बाबू गाँव आएँगे, कुछ अपनी कमाई का खर्च गाँव पर करेंगे। गाँधी ने शिक्षा को महज साक्षरता से जोड़ कर नहीं देखा। उनकी दृष्टि में वर्णाश्रम व्यवस्था सबसे बेहतर थी, जिसमें ज्ञान भी था और जीवन को जीने की कला भी थी। अगर शहरी स्कूलों में पढ़ने वालों का सर्वेक्षण कर लें तो 10 में 9 को तैरने की कला नहीं आती, यहाँ तक कि जूते में फीता लगाना नहीं आता। प्राथमिक स्वास्थ्य सुविधा की बात तो दूर की है। वर्णाश्रम में सारी बुनियादी बातों की जानकारी दी जाती थी।

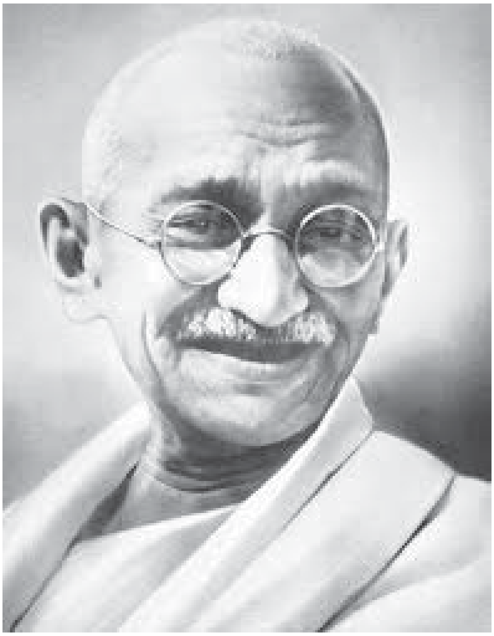

भारत के संदर्भ में यह कहा जाता है कि भारत दुनिया का सबसे बड़ा युवा देश है। यहाँ पर 1.34 अरब जनसंख्या की औसत आयु 29 वर्ष है, जबकि चीन और जापान का 38, और 48 है। अर्थात् हमारे देश कि अधिकांश आबादी युवाओं की है। यह समीकरण सकारात्मक है। क्योंकि विश्व व्यवस्था आर्थिक मानकों पर टिकी हुई है, आर्थिक मानक ज्ञान पर टिका हुआ है, लेकिन ज्ञान भारत से बर्फ की तरह पिघलता जा रहा है। विदेशी सोच ने ज्ञान को भाषायी बना दिया है। उन्नत और सिद्ध ज्ञान को कचरे के डब्बे में डाल दिया गया क्योंकि वह परम्परागत ज्ञान की परिधि में आता है। गाँधी जी ने ज्ञान के लिए आलीशान बिल्डिंग की बात नहीं कही थी, उसके लिए न्यूनतम चीजों की जरूरत है। अगर भारतीय संदर्भ में नए विश्वविद्यालय की बात करें तो गाँधी की बातें कितनी उपयुक्त दिखती हैं। नए यूनिवर्सिटी की गगन चुम्बी इमारतें किसी कॉर्पोरेट सेक्टर के भवन की तरह दिखती हैं, अगर उनके भीतर ज्ञान मीमाँसा की जाँच परख करें तो पाएँगे कि पूरा का पूरा तंत्र ही दिखावटी है। ऊँची दुकान और फीके पकवान जैसी बात से गाँधी सशंकित थे। शिक्षा का प्रयोग देश को जोड़ने में होना चाहिए न कि तोड़ने में, आज सरकार के द्वारा इंक्लूसिव योजना को शोध में बढ़ावा दिया जाता है, इसका अर्थ हमने 70 वर्षों में देश को जाति, क्षेत्र और धर्म के आधार पर बाँटा है, इसलिए हमें यह सोच विकसित करने के लिए प्रयास करना पड़ रहा है कि हम इनको कैसे जोड़ें।

लड़कियों की बदतर स्थिति आर्थिक व्यवस्था के कारण भी बनी है। अर्थ तंत्र पर पुरुष प्रधान समाज का आधिपत्य है। बाजारीकरण ने महिलाओं को और कमजोर किया है। एक अनपढ़ गंवार महिला यह कहती है कि प्राचीन काल से कुछ कार्य महिलाओं के कँधे पर रहे हैं। आज भी उसका निष्पादन वही करती हैं। 1925 में एक महिला सभा को संबोधित करते हुए गांधीजी ने कहा था, हर महिला को 2 से 3 घंटे ऐसे काम करने चाहिए जिससे कुछ उनका आर्थिक उपार्जन हो सके, ऐसा करने से उनका आत्मविश्वास भी बढ़ेगा और राष्ट्र को मजबूती भी मिलेगी करोड़ों की संख्या में महिलाओं की तादाद आज भी निष्क्रिय है, उनके पास संचित गुण है लेकिन उसका लाभ न तो उनको खुद मिलता है और न ही राष्ट्र को।

गाँधीजी ने कहा था कि मैं चाहूँगा कि भारतीय सेना में महिलाओं की संख्या पुरुषों से ज्यादा हो। क्योंकि महिलाओं के पास नैसर्गिक शक्ति है, संयम है और सबसे अधिक आध्यात्मिक मनोबल। अगर बागडोर की कमांड उनके हाथ में होगी तो विजय की संभावना कई गुणा बढ़ जाएगी। गाँधीजी के कहे गए शब्दों के 100 वर्षों बाद वायु सेना के लड़ाकू विमान को उड़ाने की इजाजत महिलाओं को दी गई। आज भी सेना और अर्ध सैनिक बलों में महिलाओं की संख्या सीमित है।

गाँधी देश के पुरोहित थे। हर क्षेत्र, धर्म और जाति को उन्होंने एक सूत्र में जोड़ दिया था। यही कारण था कि 1919 के बाद कांग्रेस आम जन की पार्टी बन गयी। इसके पहले इसकी छवि शहरों तक सीमित थी। एक अलग भारत जिसमें सबका विकास संभव था, सुनिश्चित किया गया था। भारतीय संविधान का लक्ष्य भी ऐसा ही कुछ था। लेकिन 75 वर्षों में गाँधी के विचारों का भारत टूटता गया, लोग अपनी-अपनी ढपली, अपने-अपने राग के जरिये देश को स्वार्थ कि राजनीति का हिस्सा बनाने लगे। जिसके कारण देश जाति, भाषा, प्रांत की दलगत राजनीति के चलते भारतीय मानदण्डों एवं गाँधी के सपनों से परे होने लगा। अतः आज पुनः देश को गाँधी की सोच को पुनः जागृत व स्थापित करने की जरूरत है।❑

(राजनीति विज्ञान के प्रोफेसर)

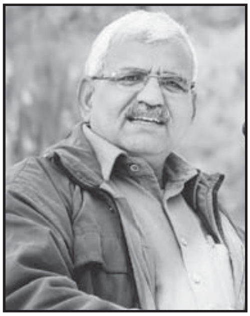

किसी भी व्यक्ति, समाज या राष्ट्र पर तीन प्रकार के कष्ट आ सकते हैं। यह आपदाओं का श्रेणीकरण है। आजकल आपदा प्रबंधन में केवल एक दैविक को ही आपदा मानते हैं। दैहिक अर्थात् सजीव प्राणियों को होने वाले शारीरिक कष्ट। शरीर को क्या चाहिए? रोटी (पोषण) कपड़ा (शारीरिक अलंकार, आवरण जो मौसम के प्रतिकूल प्रभाव से बचा सके) मकान (आश्रय), शिक्षा, स्वास्थ्य और सुरक्षा। इनका अभाव या न्यून उपलब्धि दैहिक ताप का कारण बनते हैं। दैविक अर्थात् प्राकृतिक आपदाएँ। अतिवृष्टि, अनावृष्टि, भूकम्प, तूफान, महामारी आदि प्राकृतिक आपदाएँ हैं। राज्य इन्हें रोक नहीं सकता किंतु सुरक्षा एवं बचाव के उपाय कर सकता है। इसकी योजना नहीं है तो इन आपदाओं से होने वाली हानि व कष्ट बढ़ जाएगा।

पश्चिमी चिंतन प्रक्रिया के अभ्यस्त लोगों द्वारा अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के नाम पर भारतीय लोकतंत्र के प्रतीकों का उपहास करने की घटनाओं की संख्या निरंतर बढ़ रही है। ये प्रतीक भाषा के हों, सामाजिक परम्पराओं से संबंधित हों अथवा सांस्कृतिक मूल्यों से जुड़े हों। हम तार्किकता को चाहे जितना महत्त्व दें किन्तु जीवन मुख्यत: एक समूह के लिए सही पवित्र तथा सुंदर मूल्यों व मानकों पर निर्भर करता है। भारतीय लोकतंत्र के वर्तमान परिदृश्य के कुछेक अवांछनीय दृश्यों व स्थितियों के चित्रण के माध्यम से मानस-मीमांसक श्री हनुमान सिंह राठौड़ रचित पुस्तक ***'कुटुम्ब प्रबोधन'*** *का* ***अध्याय -14 'राम राज्य'*** *लोक धर्म की स्थापना का ही प्रयास है। - सम्पादक।*

राम राज्य

''**माँ** भारत में प्रजातंत्र तो राम राज हो गया है। अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के नाम पर कोई कुछ भी बोल सकता है, सबके पर्सनल लॉ है, नेताओं तक पहुँच हो तो कुछ भी किया जा सकता है, कानून को ताक में रखा जा सकता है, सर्वत्र भ्रष्टाचार, स्वेच्छाचार ही दिखाई दे रहा है।'' विक्की ने रसोई में जाती हुई माँ से कहा।

''राजस्थान का आई.ए.एस. अधिकारी कह रहा है कि कार्यालयों में बिना दिये काम नहीं होता, कर्मचारी समय पर आते नहीं, काम करते नहीं, काम अटकाने में आनंद आता है अत: मजाक में कहने लगे हैं कि जिसकी बात-बात में काम को लटकाने की बू आए वह बाबू और अकाउण्टेन्ट यानि अटकाउंटेन्ट।'' कन्नू ने व्यंग्यपूर्ण भाषा में विक्की की बात को पुष्ट किया।

माँ हाथ पौंछती हुई रसोई से बाहर आई। दोनों की बातें उसने सुनी थी। कुर्सी पर बैठते हुए बोलीं-

''मैंने पहले भी एक दिन बताया था कि कॉन्वेन्ट में पढ़े-लिखे तथाकथित आधुनिक लोग भारत की हर शब्दावली को पोंगापंथी, पुराण पंथी, मिथक मानकर उसका अवमूल्यन करने का सुनियोजित प्रयत्न करते हैं। मैंने उस दिन बताया था कि किसी का अपमान या मानमर्दन हुआ हो, खिल्ली उड़ी हो तो उसके लिए शब्द प्रयोग करते हैं- 'उसकी हिन्दी हो गई।' क्यों? क्या हिन्दी अपमान की, मजाक की, पिछड़ेपन की प्रतीक भाषा है? उसकी 'अंग्रेजी हो गई' ऐसा क्यों नहीं कहते जो वास्तव में स्वत्वहीनता व अपमान बोध, गुलाम मानसिकता की अवैज्ञानिक भाषा है। बहुभाषाविद् होना गुण हो सकता है पर स्वभाषा के प्रति अशोभनीय टिप्पणी कैसे स्वीकार्य है? हिन्दी जैसी वैज्ञानिक भाषा कहीं विश्व में ढूँढ़ सकते हो? गेंदा लाल को क्या पढ़ रहे थे तुम-गेण्डा लाल? और अंग्रेजी में लिखे अपने गाँव पीसाँगन (Pisangan) का हिन्दी अनुवाद क्या किया अनभिज्ञ अंग्रेजी भक्त ने पीसानगन !! स्वभाषा की उत्कृष्टता का अभिमान ही नहीं है।''

''पर माँ, मेरा प्रश्न तो यह था ही नहीं। न ही मैंने प्रश्न पूछा है। मैंने तो एक वस्तुस्थिति आपको बतलाई है।'' विक्की ने बीच में ही टोकते हुए कहा।

''मैं वही बताने जा रही हूँ कि तुम्हारी टिप्पणी में खोट क्या है? प्रजातंत्र का अर्थ होता है धर्मराज्य, सत्य युग जहाँ सब धर्म के अनुसार अर्थात् अपने कर्त्तव्य के अनुसार आचरण करते हैं। इसके लिए न किसी लिखित संहिता, संविधान की आवश्यकता होती है न राजा और प्रशासन की। यह आदर्श स्थिति है। सत्य युग में यही आदर्श रहता है। वर्तमान में यदि इसका भाष्य करें तो इसका तात्पर्य है स्वयं स्वीकृत संविधान के अनुसार आचरण करने के संकल्पित मन वाले लोगों का बहुमत तथा जो अल्पमत आचरण से विचलन की मनोवृति वाला है, उसे साधने के लिए दण्ड विधान तथा राज्य व्यवस्था।''

''तो क्या आज की व्यवस्था प्रजातांत्रिक नहीं है?'' शिवम् ने जिज्ञासा प्रकट की।

''मैंने अभी प्रजातंत्र की जो परिभाषा बताई, उससे सब उलट हो रहा है, ऐसा तुम्हारा आकलन है तो यह प्रजातंत्र कैसे है? क्या यह जनता का, जनता के द्वारा, जनता के लिए शासन है? जॉर्ज ऑरवेल के उपन्यास 'एनिमल फार्म' में पशुशाला के सूअर आदि जानवरों ने प्रजातंत्र का प्रथम नियम बनाया 'ऑल एनिमल्स आर इक्वल'। यह सिद्धान्त वी आई पी शासनकर्ताओं और ब्यूरोक्रेसी के उच्च पदस्थ पशुओं को स्वीकार्य कैसे हो सकता था। उन्होंने गली निकाली और रात्रि में इसके आगे लिख दिया 'बट सम आर मोर इक्वल' और अनपढ़ उत्सर्ज्य भोजी शूकरों ने मुण्डी हिलाकर मतदान कर दिया। यह

प्रजातंत्र है क्या?'' माँ ने अपना मंतव्य बताया।

''पर माँ मंत्रियों, प्रशासनिक अधिकारियों का समय कितना कीमती है। यदि वी आई पी ट्रीटमेण्ट मिल गया तो क्या अंतर पड़ता है।'' कन्नू ने कहा।

''निश्चित तौर पर तुम्हारा कहना एक सीमा तक सही है कि उन्हें राजकार्य के लिए अधिकतम समय मिलना चाहिए अत: उन्हें अतिरिक्त सुविधाएँ दी जा सकती हैं, किंतु आपके आने-जाने तक अन्य लोगों को अवरोध लगाकर रोक देना क्या जनता के समय की हानि नहीं है? क्या कभी उनके अपव्यय हुए समय का योग किया है? क्या ये नेता लोग समय के अनुशासन का पालन करते हैं, ताकि जनता को न्यूनतम समय तक निरुद्ध होना पड़े? अत: दोनों में संतुलन बनाने के उपायों पर विचार होना चाहिए।'' माँ ने थोड़ा रुककर पुन: कहना प्रारम्भ किया - ''किंतु ये बातें तो प्रसंगवश आ गईं। मैं अपनी मूल बात पर पुन: आती हूँ। हमने वर्ण को अक्षर और शब्द को ब्रह्म कहा है अत: शब्द का सम्मान साधना है और अवमूल्यन अपराध है। विक्की ने अपने देश की अस्वीकार्य परिस्थितियों से उद्वेलित होकर अपनी पीड़ा प्रकट करने के लिए एक शब्द प्रयोग किया 'राम राज्य'। क्या राम राज्य अव्यवस्था का प्रतीक है?''

''लेकिन जहाँ कोई भी अपनी मर्जी से कुछ भी करता है, जहाँ स्वेच्छाचार है, उसके लिए यही शब्द प्रयोग होता है।'' विक्की ने सफाई दी।

''होता है नहीं भैया, करते हैं कहो।'' नेहा बोली।

''क्या अन्तर पड़ता है?'' अनन्त विजय बोला।

''अंतर पड़ता है भैया। 'होता है' का अर्थ है सर्व स्वीकृत है, 'करते हैं' का अर्थ हुआ कुछ लोग करते हैं। माँ इस शब्द प्रयोग को स्वीकार नहीं करती इसका तात्पर्य है कि यह सर्व स्वीकृत शब्द नहीं है।'' संघ मित्र ने अपना अभिमत दिया।

''पुत्र, राम राज्य का अर्थ है आदर्श राज्य की कल्पना के अनुरूप राज्य। राम राज्य सुव्यवस्था का नाम है। रामचरित मानस में तुलसीदास जी भी रामराज्य का वर्णन करते हैं-

दैहिक दैविक भौतिक तापा।
राम राज नहिं काहुहि व्यापा।।
सब नर करहिं परस्पर प्रीती।
चलहिं स्वधर्म निरत श्रुति नीती।।
चारिउ चरन धर्म जग माहीं।
पूरि रहा सपनेहुँ अघ नाहीं।।
अल्प मृत्यु नहिं कवनिउ पीरा।
सब सुंदर सब बिरूज शरीरा।।
नहिं दरिद्र कोउ दुखी न दीना।
नहिं कोउ अबुध न लच्छन हीना।।
राम राज नभगेस सुनु सचराचर जग माहिं।
काल कर्म सुभाव गुन कृत दुख काहुहि नाहिं।।
दंड जतिन्ह कर भेद जहैं नर्तक नृत्य समाज।
जीतहु मनहि सुनिअ अस रामचंद्र के राज।।

आज जिस कल्याणकारी राज्य की हम बात करते हैं, उसके समस्त लक्षण इसमें है या नहीं ? गिनो देखो, रामराज्य -

1. त्रिताप- दैहिक, दैविक, भौतिक से मुक्त था।
2. सभी निवासी परस्पर प्रेम करते थे अर्थात् समता, बंधुता और समरसता थी।
3. सब लोग शास्त्रों में वर्णित नैतिक नियमों अर्थात् धर्म के अनुसार आचरण करते थे।
4. लोग स्वप्न में भी पाप का विचार नहीं करते थे अर्थात् भ्रष्टाचार आदि कोई अवांछनीय व्यवहार नहीं था।
5. स्वास्थ्य की दृष्टि से कोई समस्या नहीं थी, सात्विक, संतुलित पोषण तथा अनुकूल पर्यावरण था अत: कोई अकाल मृत्यु को प्राप्त नहीं होता था। किसी को कोई पीड़ा नहीं थी। सब सुंदर शरीर वाले थे अर्थात् विकलांगता नहीं थी तथा सभी शारीरिक रूप से रोग मुक्त थे।
6. कोई दरिद्र, दीन अर्थात् याचक और आर्थिक कारणों से दु:खी नहीं था।
7. शैक्षिक दृष्टि से समुन्नत था, क्योंकि कोई बुद्धिहीन नहीं था। कोई लक्षण हीन नहीं था।

एक स्थान पर तो कहा है 'मन भावतो धेनु पय स्रवहीं' अर्थात् मन की इच्छा के अनुरूप ही गायों का दुग्ध उत्पादन था और यह दूध मन के लिए भी रुचिकर स्वाद व पोषण वाला था। अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता थी अर्थात् एक धोबी भी बिना भय के अपने मन की बात को सार्वजनिक रूप से प्रकट कर सकता था और राजा जन सामान्य की बात का भी संज्ञान तत्परता से लेता था, इसका उदाहरण रामराज्य के अतिरिक्त विश्व इतिहास में और कहीं मिलता है क्या?'' माँ ने रामचरितमानस में वर्णित रामराज्य को संक्षेप में समझाने का प्रयत्न किया।

''माँ, ये त्रिताप क्या है? थोड़ा इनको भी समझाओ।'' शिवम् ने पूछा

''किसी भी व्यक्ति, समाज या राष्ट्र पर तीन प्रकार के कष्ट आ सकते हैं। यह आपदाओं का श्रेणीकरण है। आजकल आपदा प्रबंधन में केवल एक दैविक को ही आपदा मानते हैं। दैहिक अर्थात् सजीव प्राणियों को होने वाले शारीरिक कष्ट। शरीर को क्या चाहिए? रोटी (पोषण) कपड़ा (शारीरिक अलंकार, आवरण जो मौसम के प्रतिकूल प्रभाव से बचा सके) मकान (आश्रय), शिक्षा, स्वास्थ्य और सुरक्षा। इनका अभाव या न्यून उपलब्धि दैहिक ताप का कारण बनते हैं। दैविक अर्थात् प्राकृतिक आपदाएँ। अतिवृष्टि, अनावृष्टि, भूकम्प, तूफान, महामारी आदि प्राकृतिक आपदाएँ हैं। राज्य इन्हें रोक नहीं सकता किंतु सुरक्षा एवं बचाव के उपाय कर सकता है। इसकी योजना नहीं है तो इन आपदाओं से होने वाली हानि व कष्ट बढ़ जाएगा। भौतिक ताप अर्थात् राज्य में जैविक व अजैविक संसाधनों की उपलब्धता। जैव विविधता कितनी है, खनिजादि संसाधन कितने हैं, नदियों का संजाल, कृषि योग्य उर्वरा भूमि की उपलब्धता आदि इसके अन्तर्गत आते हैं जिससे राज्य की भौतिक समृद्धि का आकलन होता है। प्रकृति के अनुदान आपको कितने उपलब्ध हैं, यह बहुत महत्त्वपूर्ण है। पाश्चात्य देशवासियों को सूर्य का ताप ही पूरा नहीं मिलता अत: समुद्र के किनारे न्यूनतम कपड़ों में सूर्य-स्नान करने में उन्हें आनंद आता है, उनके लिए सूर्य के प्रकाश की न्यूनता भौतिकताप है, हमें सूर्य का इतना अनुदान उपलब्ध है कि उन्हें समुद्र किनारे लेटे देखकर हमें हँसी आती है। चलो बहुत समय हो गया, अब मैं रसोई के काम में लगती हूँ।''

माँ पुन: पाकशाला की ओर चल दी।❑

पुस्तक समीक्षा

पुस्तक का नाम	:	**सम्राट यशोवर्मन (मौखरि साम्राज्य का इतिहास)**
लेखक	:	विजय नाहर
प्रकाशक	:	पिंकसिटी पब्लिशर्स, जयपुर
प्रकाशन वर्ष	:	2014
आवृत्ति	:	प्रथम
ISBN	:	978-93-80522-20-3
पुस्तक का मूल्य	:	240 रु

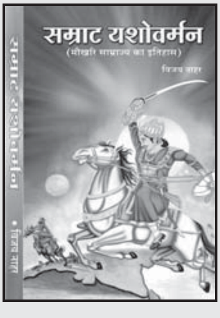

पुस्तक का विषय

मौखरि वंश का यशोवर्मन का एवं कश्मीर नरेश ललितादित्य मुक्तापीड़ के विषय में तथा प्रारंभिक मुस्लिम आक्रमणों के विषय में संदर्भ सहित वर्णन।

सारांश

सम्राट हर्षवर्धन की मृत्यु 647 ईसवी में हो जाने के बाद अधिकांश भारतीय इतिहासकारों का मत है उत्तर भारत की राजनीतिक एकता बिखर गई थी परंतु सत्य से थोड़ा भिन्न है। हर्ष की मृत्यु के बाद गुप्त काल के सम्राट आदित्य सेन ने उसके रिक्त स्थान को भरा। 694-95 ईसवी के पश्चात कन्नौज के मौखरि वंश का सम्राट यशोवर्मन खड़ा हुआ। गुप्त साम्राज्य पर विजय प्राप्त कर सम्राट यशोवर्मन ने संपूर्ण उत्तर भारत पर एकछत्र शासन स्थापित किया। उसकी दिग्विजय की सूचना में हमें महाकवि वाकपतिराय द्वारा रचित प्राकृत भाषा के महाकाव्य गॉडवहो से प्राप्त होती है। लेखक ने विभिन्न तथ्यों के आधार पर यह भी स्पष्ट किया है कि सम्राट यशोवर्मन जब महेंद्र पर्वत के राज्यों पर विजय कर रहा था उस समय उसे जानकारी हुई कि अरबों ने उज्जैन पर आक्रमण कर दिया है तो वहाँ से सीधा चलकर संपूर्ण मध्य भारत को पार करता हुआ उज्जैन पहुँच कर उन पर प्रत्याक्रमण किया और केवल उनको पराजित ही नहीं किया बल्कि उन्हें भारत की पश्चिमी सीमा प्रांत से बाहर कर दिया। अरबी मुस्लिम सेनापति जुनैद को युद्धों में इतने घाव लगे कि वह मकरान में सड़ सड़कर मर गया।

पुस्तक के विशेष अंश एवं लेखक की खोज

सम्राट यशोवर्मन मौखरि राजवंश का ही उत्तराधिकारि था। यशोवर्मन चंद्रवंशी क्षत्रिय था। मौखरी महाराज सुब्रत वर्मा हर्ष की मृत्यु के बाद कन्नौज का शासक बना।

सुब्रत वर्मा का उत्तराधिकारी भोग वर्मा और उसका उत्तराधिकारी मनोरथ वर्मा और उसका उत्तराधिकारी सम्राट यशोवर्मन था को सिद्ध करने के लिए लेखक ने बड़े तथ्य दिए हैं। उज्जैन पर होने वाले अरब मुस्लिम आक्रमण जिसका सेनापति जुनैद था को पराजित कर भारतीय सीमा से बाहर खदेड़ने का काम सम्राट यशोवर्मन ने किया। इसके प्रमाण लेखक ने इस ग्रंथ में दिए हैं। जबकि इतिहासकार उज्जैन से अरबों को पराजित करने का श्रेय नागभट्ट को देते हैं परंतु यह सत्य नहीं है क्योंकि नागभट्ट उस समय मेड़ता का शासक था उज्जैन का नहीं। केवल मात्र यह तथ्य इसी ग्रंथ में प्रकाशित किया गया है कि सम्राट यशोवर्मन की प्रेरणा से नागभट्ट ने अपनी राजधानी मेड़ता से भीनमाल स्थानांतरित की।

सुझाव

लेखक विजय नाहर की भारतीय इतिहास के संदर्भ में लगभग आठ-दस किताबें प्रकाशित हो चुकी है। 175 पृष्ठों की इस पुस्तक में लेखक ने सम्राट यशोवर्मन की वीरता का गुणगान करते हुए मोखरि साम्राज्य से जुड़े कई अनकहे पहलुओं को उजागर किया है। अपने 50 वर्षों की शोध को पाठकों के समक्ष संदर्भों के साथ रखने का प्रयास कर रहे हैं और भारतीय इतिहास के असली स्वरूप को उजागर करने के प्रयत्न में लगे हुए हैं। इससे पूर्व लेखक की पुस्तक 'शीलादित्य सम्राट हर्षवर्धन एवं उनका युग' में 467 से 647 ईसवी तक के इतिहास को निष्पक्षता के साथ प्रस्तुत करने में सफल सिद्ध हुए थे। सम्राट यशोवर्मन पर इतनी विस्तृत सामग्री और शोध को प्रदर्शित करने वाली भारतीय इतिहास में यह पहली पुस्तक है। अन्य पुस्तकों में सम्राट यशोवर्मन केवल एक पृष्ठ में ही सीमित हो जाते हैं। लेखक की शैली प्रवाह मान भाषा सरल एवं स्पष्ट है। इतिहास के विद्यार्थियों, शोधकर्ताओं और व्याख्याताओं के लिए यह पुस्तक लीक से हटकर नवीन सामग्री प्रदान करती है।

लेखक की इसी कड़ी की अन्य पुस्तकें

शीलादित्य सम्राट हर्षवर्धन एवं उनका युग, सम्राट मिहिर भोज एवं उनका युग, सम्राट भोज परमार, प्रारम्भिक इस्लामिक आक्रमणों का भारतीय प्रतिरोध, युगपुरुष बप्पारावल, सम्राट पृथ्वीराज चौहान

लेखक परिचय

https://en.m.wikipedia.org/wiki/Vijay_Nahar

(समीक्षक - प्रो. देवाराम जोहन्सन, व्याख्याता, इतिहास, बांगड़ कॉलेज, पाली)

रुक्टा राष्ट्रीय ने सम्पूर्ण प्रान्त में भारतीय नववर्ष हर्षोल्लास से मनाया

भारतीय कालगणना के अनुसार विक्रम संवत 2076 के आगमन पर अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ से सम्बद्ध राजस्थान विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालय शिक्षक संघ (राष्ट्रीय) की अधिकांश इकाइयों द्वारा भारतीय नव सम्वत्सर को समारोह पूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर तिलक लगाकर एवं प्रसाद वितरित कर नववर्ष की शुभकामनाएँ दी गई। सार्वजनिक चौराहों पर समाज बंधुओं को तिलक व काली मिर्च, मिश्री का प्रसाद खिलाकर नव संवत्सर की मंगलकामनाएँ प्रेषित की गई।

नव सम्वत्सर का महत्त्व प्रतिपादित करने हेतु राजर्षि महाविद्यालय अलवर की रुक्टा राष्ट्रीय इकाई द्वारा भारतीय नववर्ष की कालगणना एवं वैज्ञानिक महत्त्व पर संगोष्ठी का आयोजन किया। छात्रों एवं संकाय सदस्यों के तिलक लगा व मिश्री का प्रसाद देकर शुभकामनाएँ दी।

गौरी देवी राजकीय महिला महाविद्यालय, अलवर में रुक्टा (रा.) की स्थानीय इकाई द्वारा नव संवत्सर कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अवसर पर विद्यार्थियों तथा मंत्रालयिक अधिकारियों तथा कर्मचारियों ने उल्लास पूर्वक एक दूसरे को तिलक लगा तथा प्रसाद वितरित कर भारतीय नववर्ष की शुभकामनाएँ दी।

राजकीय कला महाविद्यालय, अलवर में शिक्षक एवं विद्यार्थियों ने मिलकर नवसंवत्सर मनाया एवं डॉ. इन्दिरा गुप्ता सह आचार्य ने विद्यार्थियों एवं छात्रों को तिलक लगाया तथा प्रसाद वितरण किया।

राजकीय महाविद्यालय आहोर में नव संवत्सर के महत्त्व पर एक संगोष्ठी आयोजित की गई जिसमें डॉ. ओम प्रकाश पारीक, डॉ. गोपी किशन चितारा आदि शिक्षकों ने विचार व्यक्त किए। राजकीय महाविद्यालय सवाई माधोपुर में संगठन इकाई के आयोजित कार्यक्रम में डॉ. रामनिवास चौधरी डॉ. दिनेश कुमार शर्मा डॉ. धीरेंद्र सिंह डॉ. राजेश आदि कार्यकर्ताओं, संकाय सदस्यों, परीक्षार्थियों एवं इकाई सदस्यों के साथ नव संवत्सर तथा भारतीय नववर्ष हर्षोल्लास से मनाया गया।

रुक्टा (राष्ट्रीय) के अजमेर विभाग द्वारा हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी रेलवे स्टेशन के सामने स्थित क्लॉक टॉवर तिराहे को सुसज्जित कर प्रातः 8 बजे से 10 बजे तक मार्ग से गुजरने वाले पथिकों का तिलकार्चन कर, मिश्री-कालीमिर्च का प्रसाद देकर नव संवत्सर की शुभकामनाएँ दी, नव संवत्सर के पंचांग वितरित किये तथा वाहनों पर पर शुभकामना सन्देशों के स्टीकर चिपकाए।

महाराजा गंगा सिंह विश्वविद्यालय, बीकानेर में नवसंवत्सर का स्वागत आयोजन तिलक लगा एवं मिश्री, कालीमिर्च व नीम के कोपलों का प्रसाद का वितरण कर कुलपति प्रो. भागीरथ सिंह एवं डॉ. दिग्विजय सिंह, संगठन अध्यक्ष के सान्निध्य में संपन्न हुआ।

राजकीय महाविद्यालय जालौर में प्रदेश संगठन मंत्री डॉ. दीपक शर्मा के नेतृत्व में शिक्षकों एवं विद्यार्थियों का तिलक लगाकर स्वागत किया गया तथा प्रसाद वितरित कर नव संवत्सर की शुभेच्छा दी गई।

राजकीय महाविद्यालय, ओसियाँ में रुक्टा (रा.) की स्थानीय इकाई द्वारा भारतीय नववर्ष वि.स.2076 अभिनन्दन कार्यक्रम आयोजित किया गया।

श्री गोविंद गुरु राजकीय महाविद्यालय, बाँसवाड़ा में विद्यार्थियों और संकाय सदस्यों ने नव संवत्सर पर समारोहपूर्वक आपस में तिलक लगा कर तथा मुँह मीठा करा कर शुभेच्छा प्रेषित की।

राजकीय महाविद्यालय, तारानगर में आयोजित कार्यक्रम में कार्यवाहक प्राचार्य डॉ. कमल मिश्रा ने नवसंवत्सर 2076 युगाब्द 5121 की हार्दिक शुभकामनाएँ एवं बधाई देते हुए अपने उद्‌बोधन में कहा कि माँ भारती का वैभव बढ़ाने के लिए लोकतंत्र के महापर्व लोकसभा चुनाव में अपना योगदान एवं मतदान करके अपने कर्त्तव्य का निर्वहन करना चाहिए। उन्होंने उपस्थित संकाय सदस्यों व विद्यार्थियों को नव संवत्सर की मंगलकामनाएँ दी।

राजकीय महाविद्यालय करौली में संगठन इकाई के डॉ. विजेंद्र शर्मा, डॉ. प्रहलाद मीणा आदि शिक्षक साथियों ने महाविद्यालय के मुख्य द्वार पर नव संवत्सर के ऊपर सभी शिक्षकों एवं विद्यार्थियों का अभिनंदन किया। राजकीय विधि महाविद्यालय धौलपुर में प्रोफेसर रामचरण मीणा के संयोजन में नव संवत्सर कार्यक्रम संपन्न हुआ।

राजकीय महाविद्यालय, केकड़ी में विद्यार्थियों और संकाय सदस्यों ने नव संवत्सर पर समारोहपूर्वक आपस में तिलक लगा कर तथा मुँह मीठा करा कर एक आयोजन किया। कार्यवाहक प्राचार्य डॉ. अनिल दाधीच ने अपने उद्‌बोधन में विद्यार्थियों को भारतीय नव संवत्सर का महत्त्व बताया।

इसी प्रकार जयपुर, बूंदी, बारां, अनूपगढ़, चूरू, बाड़मेर, राजाखेड़ा, गंगापुर सिटी, कला कोटा, लूनी, भीलवाड़ा, बाली, पाली, रोहट, कन्या उदयपुर, भरतपुर, डीग, कन्या अजमेर, कोलायत, टोंक, झालावाड़, सांभर, खेतड़ी, धौलपुर सहित संगठन की 72 इकाइयों द्वारा संगठन की योजनानुसार नव संवत्सर कार्यक्रम समारोहपूर्वक आयोजित किए।

AJKLTF Protest against suspension of Government Employees

All Jammu Kashmir and Laddakh Teachers Federation (AJKLTF) criticized the suspension of teacher by Deputy Commissioner of Kishwar, They demanded immediate revocation of suspension orders.

"On April 28, 2019 when the civil society people of Kishtwar peacefully protesting against the alleged selective killings and demanding action against those involved in the killings and for ensuring security of the civilians in the Kishtwar district. Mean while some miscreants created confusion and broke windows of the DC office complex and fled away", they said adding that the district administration suspended two employees namely Satya Bushan Teacher and Tilak Raj Forester without any enquiry citing their involvement in the protest and damage of the property.

They demanded immediate revocation of suspension orders. Those who were present during the meeting included Rattan Sharma State General Secretary Pradeep Kumar State Vice President, Shiv Dev Singh, Manjeet Singh, Neeraj Sharma, Kartar Chand State Secretaries, Radha Krishan Incharge Press Media & Publicity and many others.

दिल्ली अध्यापक परिषद के नवीन कार्यकर्ता परिचय वर्ग सम्पन्न

दिल्ली अध्यापक परिषद द्वारा संगठन में नव दायित्ववान के कार्यकर्ताओं के लिए तीन स्थानों पर परिचय वर्ग आयोजित किया गया।

तीनों ही परिचय वर्ग बहुत व्यवस्थित रहे। निकायों के अध्यक्ष/मंत्री द्वारा अपने निकाय का परिचय तथा किए गए कार्यों का उल्लेख किया गया।

दिल्ली अध्यापक परिषद के अध्यक्ष वेद प्रकाश ने परिषद का परिचय दिया तथा अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ का परिचय देते हुए अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान के बारे में बताया। शासन व प्रशासन में दिल्ली अध्यापक परिषद की पहचान कैसे बनी, संगठन क्या भूमिका रही पर भी अपनी बात रखी।

परिषद के महामंत्री राजेन्द्र गोयल ने परिषद के कार्यकर्ताओं के आचरण व व्यवहार पर चर्चा की, विद्यालय की पहचान हमारे कार्यकर्ताओं से है, परिवार, समाज और मित्रों माध्यम से परिषद को पहचान मिल पाए इसका विशेष उल्लेख किया।

अध्यापक परिषद के संरक्षक जय भगवान गोयल ने अपने उद्बोधन में कहा कि हम सभी अपने साथी कार्यकर्ताओं के साथ, वरिष्ठ कार्यकर्ताओं के साथ तथा प्रमुख अध्यापकों के साथ जिनको परिषद के साथ जोड़ना है, लगातार संपर्क रखें। अपने परिवार, विद्यालय व संगठन में समन्वय बनाकर संगठन का काम करें। वर्तमान परिस्थिति में हमारी क्या भूमिका रहे इस पर भी विशेष ध्यान दिलाया।

प्रशिक्षण हेतु पहला परिचय वर्ग 31 मार्च 2019 को ईडीएमसी प्राइमरी स्कूल जनता कॉलोनी जाफराबाद में लगाया गया जिसमें पूर्वी जिला, उत्तर पूर्व जिला तथा EDMC के नए 27 कार्यकर्ता उपस्थित थे। दूसरा उत्तरी, उत्तर पश्चिम अ, उत्तर पश्चिम ब तथा उत्तरी नगर निगम के 68 कार्यकर्ताओं के साथ केशव सदन शालीमार बाग में संपन्न हुआ। तीसरा परिचय वर्ग पश्चिमी अ, पश्चिम ब, दक्षिण पश्चिम ब के साथ दक्षिणी निगम के 40 कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

नवसंवतसर पर दी शुभकामनाएँ

दिल्ली अध्यापक परिषद द्वारा विक्रम संवत 2076 की हार्दिक शुभकामनाएँ शिक्षा सचिव, शिक्षा निदेशक, सभी जिलों में शिक्षा अधिकारियों सहित समस्त स्टाफ को तिलक लगाकर, मिठाई खिलाकर दी।

सभी ऑफिस, CBSE, सचिवालय आदि में परिषद व ABRSM का लोगो लगे हुए बैनर लगाए। कई विद्यालयों में छात्रों व शिक्षकों के साथ नववर्ष मनाया गया।

SCERT के जॉइंट डाइरेक्टर नाहर सिंह ने परिषद को इस उत्तम कार्य के लिए धन्यवाद दिया और शिक्षकों के साथ छात्रों को अपने सभी त्योहार तिथियों के अनुसार ही मनाने को बताने के साथ हमारी संस्कृति के वैज्ञानिक आधार को बताया। अधिकारियों ने परिषद के इस कार्य की मुक्त कंठ से प्रशंसा की।

बेंगलुरु में शैक्षिक महासंघ की ग्रामीण स्वयंसेवी शिक्षा समूहों से वार्ता

केवल सरकार पर ही भरोसा न रखते हुए समाज के हर एक आदमी को समाज के उद्धार के लिए प्रतिबद्धता के साथ काम करना पड़ेगा। राजस्थान के एक शाला में उस गाँव की बेरोजगार महिलाओं द्वारा सरकारी शाला में निशुल्क पढ़ाने का उदाहरण देते हुए अ.भा.रा.शै.महासंघ के संगठन मंत्री श्री महेंद्र कपूर दिनांक 29.04.19 को मैंड ट्री कंपनी में कई स्वयंसेवी संगठनों के साथ आयोजित सभा में इस उदाहरण को सबके सामने रखा।

बेंगलुरु में कर्नाटक राज्य माध्यमिक शिक्षक संघ ने मैंड ट्री कंपनी के सहयोग में बेंगलूर के जानेमाने और शिक्षा, शिक्षक, छात्र के हित में काम करनेवाले कई स्वयंसेवी संगठनों के साथ एक सभा आयोजन किया था। इस अवसर पर जननी ट्रस्ट के श्री देवराजू ने कहा कि दूसरों को बदलने के लिए कहने के बजाय हमें ही पहले बदलना होगा। जननी ट्रस्ट ने परिसर के बारे में अपना कर्तव्य निभाते हए कहा कि हर एक व्यक्ति को अपने माँ–बाप के नाम पर दो पौधों को लगाकर उनका पालन–पोषण करना चाहिए। शिक्षक और अभिभावक केवल बोधक न होकर साधक बनना चाहिए, तभी बच्चे उन्हें देखकर अपने जीवन में कुछ अच्छा साध सकेंगे।

गुब्बच्ची नामक स्वयंसेवी संगठन द्वारा जो छात्र बीच में ही शाला छोड़ते हैं, उन्हें वापस शाला में लाने का काम करते हैं। वे भी शाला में अन्य कार्य निभाते हुए शिक्षकों को बारे में चिंतित थे और कह रहे थे कि शिक्षकों को केवल बोधन का काम देना चाहिए। सुविध्या नामक स्वयंसेवी संगठन प्राथमिक शाला के बच्चों के लिए काम देते हैं और उसमें उनके सीखने की प्रक्रिया में सहायता करने वाली बोधन विधियाँ, पठ्य सामग्री होती हैं, जिससे उनकी सीखने की प्रक्रिया में रुचि बढ़ती है।

शिक्षण फाउण्डेशन स्वयंसेवी संगठन ने तो रामनगर के एक तहसील कनकपुर में शिक्षा विभाग के साथ मिलकर गरीब बच्चों के वैद्य बनने के सपने को पूरा करने में अपना पूरा सहयोग दे रहे हैं तथा गरीब बच्चों को सभी तरह से सहायता दे रहे हैं।

मैंड ट्री नामक एक सॉफ्टवेयर कंपनी ने ग्रीन स्कूल नामक एक योजना हाथ में लेकर शाला परिसरों को हरा–भरा बनाने का और गरीब अस्वस्थ बच्चों को वैद्यकीय चिकित्सा करवाने का काम को सुचारू रूप से कर रहे हैं।

इन सभी स्वयंसेवी संगठनों को कर्नाटक राज्य माध्यमिक शिक्षक संघ के साथ काम करने की आशा दिखाते हुए समाज में कुछ बदलाव लाने का वादा किया।

अ.भा.रा.शै.महासंघ के महामंत्री शिवानन्द सिन्दनकेरा ने सभा को अ.भा.रा.शै. महासंघ की और कर्नाटक राज्य माध्यमिक शिक्षक संघ के ध्येय वाक्य राष्ट्र के हित में शिक्षा, शिक्षा के हित में शिक्षक और शिक्षक के हित में समाज बताते हुए कार्य के बारे में अपना अभिमत दिया।

कर्नाटक राज्य माध्यमिक शिक्षक संघ के कार्याध्यक्ष अरूण सर ने शिक्षा क्षेत्र में जो समस्याएँ हैं, उनके बारे में बताते हुए, समस्याओं को सुलझाने के लिए हम सब मिलकर कैसे काम कर सकते हैं ? इसके बारे में भी सुचारू रूप से बताया। क.रा.मा.शि.संघ के महामंत्री चिदानंद पाटील ने सभा में उपस्थित सभी स्वयंसेवी संगठनों और सभी का परिचय करवाया। अतिरिक्त महामंत्री गंगाधर ने कार्यक्रम का निरूपण किया। अ.भा.रा.शै. महासंघ के महिला विभाग की सह सचिव श्रीमती ममता डी.के. ने सभी का आभार व्यक्त किया।